जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

अजमेर

Rashtradoot

फोनः- 2627612, 2427249 फैक्सः- 0145-2624665 वर्षः 29 संख्याः 337 प्रभात अजमेर, मंगलवार 8 जुलाई, 2025 आर.जे./ए.जे./73/2015-2017 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

मेवाड़ की 28 सीटों में 17 आदिवासी सीटें हैं

इन 28 सीटों में से केवल छः में कांग्रेस जीती थी

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7 जुलाई। डॉ. सी. पी. जोशी ने उदयपुर के मेवाड़ डिवीजन में एक रैली का आयोजन किया, जो एक आदिवासी बहुल इलाका है। इस रैली में एक भी आदिवासी नेता को मंच से बोलने का मौका नहीं दिया गया।

अब पार्टी के लोगों के बीच यह सवाल उठ रहा है कि क्या इस बैठक का मकसद पार्टी को आदिवासियों से जोड़ना था या उन्हें अपमानित करना और नीचा दिखाना?

ये सवाल सिर्फ उदयपुर से नहीं, बल्कि पूरे राजस्थान से उठ रहे हैं।

रैली में वरिष्ठ आदिवासी नेता रघुवीर सिंह मीणा भी मौजूद थे, जो कांग्रेस वर्किंग कमेटी (सीडब्ल्यूसी) के सदस्य और मंत्री रह चुके हैं, लेकिन उन्हें भी बोलने का मौका नहीं मिला।

इस इलाके की 28 सीटों में से 17 सीटें आदिवासी वर्ग की हैं।

यहाँ कांग्रेस को आदिवासी पार्टी बीएपी से कड़ी टक्कर मिल रही है, जिसके पास एक सांसद है, तीन विधायक हैं और दो सीटों पर वह बहुत कम अंतर से हारी थी तथा दूसरे नम्बर पर रही थी।

इस रैली में पार्टी के कई बड़े नेता बुलाए गए थे, जैसे एआईसीसी के राजस्थान प्रभारी रंधावा, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा, कांग्रेस विधायक दल के नेता टीका राम जूली आदि। दिल्ली से मीडिया प्रमुख पवन खेडा को भी बुलाया गया था।

ऐसा माना जा रहा है कि वरिष्ठ नेता, जैसे अशोक गहलोत, सी. पी. जोशी और अन्य, अपने-अपने क्षेत्रों पर पकड़ मजबूत करना चाहते हैं, जैसे गहलोत जोधपुर में, जोशी उदयपुर में और शांति धारीवाल कोटा में। और इसके पीछे का मकसद सचिन पायलट को किनारे करना है।

गहलोत की राजनीति की सोच स्पष्ट रुप से यही है कि पायलट को जितना हो सके, रैलियों से दूर रखा जाए।

समस्या यह है कि पिछले चुनावों में जिन इलाकों पर इन वरिष्ठ नेताओं का प्रभाव था, वहाँ कांग्रेस को बड़ी हार का सामना करना पड़ा। उस समय के मुख्यमंत्री (गहलोत) ने कई ऐसे उम्मीदवारों की हार सुनिश्चित की, जो उनके विरोधी खेमे से जुड़े थे।

अब मेवाड़ में आदिवासी पार्टी बीएपी कांग्रेस के लिए बड़ी चुनौती के रुप में उभर रही है, लेकिन इसके बावजूद सी. पी. जोशी ने किसी भी आदिवासी नेता को मंच पर बोलने नहीं दिया।

ऐसे में यह सवाल उठता है कि रंधावा वहाँ क्या कर रहे थे? क्या यह

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- सी.पी. जोशी अपने आपको मेवाड़ का नेता जताते हैं। अतः उन्होंने, उदयपुर ट्राइबल्स का सम्मेलन आयोजित किया, पर, मंच से किसी आदिवासी को बोलने का मौका नहीं दिया। यहाँ तक की रघुवीर मीणा, जो सी.डब्ल्यु.सी. सदस्य रहे हैं तथा पूर्व मंत्री भी हैं, मंच पर बैठे, पर श्रोताओं को संबोधित नहीं कर सके।
- चर्चा यह है कि गहलोत ने यह राजनीतिक, जाल बिछाया है, जिसके तहत जोधपुर में उनका आधिपत्य रहेगा, उदयपुर में सी.पी. जोशी का और कोटा में शांति धारीवाल का तथा इन क्षेत्रों से सचिन पायलट को बाहर ही रखा जाएगा, रैलियों से, आम सभाओं से तथा कांग्रेस के अन्य आयोजनों से।
- पर समस्या यह है कि पिछले चुनाव में, जिन संभागों में इन वरिष्ठ नेताओं की चलती थी, वहाँ कांग्रेस बुरी तरह हारी थी।
- क्या उदयपुर में आयोजित कांग्रेस के इस आयोजन में आदिवासी वोटर को साधना था या केवल दिल्ली को अपनी तथाकथित सक्रियता दिखानी, जिससे दिल्ली में कुछ स्थान मिल जाए। इस संदर्भ में सी.पी. जोशी ने दिल्ली की यात्रा की, वेणुगोपाल तथा मनिकम टैगोर से सम्पर्क साधने का प्रयास किया।
- क्या इसी प्रयास में दिल्ली से पवन खेड़ा को बुलाया गया। हालांकि, वे आदिवासी नहीं हैं।

हाईकोर्ट ने मलिंगा का केस धौलपुर से जयपुर ट्रांसफर किया

जयपुर, 7 जुलाई। राजस्थान हाईकोर्ट ने पूर्व विधायक गिर्राज सिंह मलिंगा की ओर से बिजली विभाग के एईएन से मारपीट के मामले में धौलपुर की अदालत में चल रहे मुकदमे को जयपुर जिले की एससी, एसटी कोर्ट में ट्रांसफर करने के आदेश दिए हैं। जस्टिस उमाशंकर व्यास की एकलपीठ ने यह आदेश पीडित हर्षाधिपति की आपराधिक याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

अदालत ने कहा कि आरोपी को जमानत मिलने के बाद निकाले गए जुलूस से प्रतीत होता है कि उसने शक्ति प्रदर्शन किया था, जबकि उसके खिलाफ मारपीट के अन्य प्रकरण भी दर्ज हैं। ऐसे में मारपीट के इस केस को ट्रांसफर करना उचित है। इसके साथ ही अदालत ने जयपुर पुलिस आयुक्त को कहा है कि वे प्रकरण की सुनवाई के दौरान सुरक्षा व्यवस्था का पुख्ता इंतजाम करेंगे। इसके अलावा धौलपुर एसपी गवाहों समन व नोटिस तामील कराने में सहयोग देंगे। अदालत ने मामले की त्वरित सुनवाई के लिए केस ऑफिसर स्कीम के तहत एक एसआई और दो एएसआई को भी सहयोग देने के लिए कहा है।

आपराधिक याचिका में अधिवक्ता अखिल सिमलोट ने अदालत को बताया

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- अदालत ने जयपुर पुलिस कमिश्नर को सुनवाई के दौरान सुरक्षा का पुख्ता इंतजाम करने को कहा।

दलाई लामा के जन्म दिवस समारोह में केन्द्रीय मंत्री रिजिजु, अरूणाचल के मु.मंत्री आदि उपस्थित रहे

इस उपस्थिति तथा प्र.मंत्री द्वारा दलाई लामा को बधाई देने से भारत का मैसेज साफ था कि भारत, चीन की स्थिति अटपटी करने के ऐसे मौके छोड़ेगा नहीं, जब तक चीन भारत के हितों का ध्यान नहीं रखेगा

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7 जुलाई। भारत द्वारा रविवार को दलाई लामा के 90वें जन्मदिन पर दी गई बधाई ने चीन को नाराज़ कर दिया है और चीन ने भारत को उसके आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करने की चेतावनी दी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को तिब्बती धर्मगुरु को उनके जन्मदिन पर शुभकामनाएं भेजी थीं।

गौर करने वाली बात यह है कि इस बार भारतीय अधिकारियों और कुछ मंत्रियों ने इस समारोह में भाग भी लिया, जिससे चीन की नाराज़गी और बढ़ गई। केन्द्रीय मंत्री किरेन रिजिजू, जो स्वयं बौद्ध हैं, समारोह में मौजूद थे। इनके अलावा, अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री भी शामिल हुए, जिसे चीन दक्षिण तिब्बत के रूप में अपना क्षेत्र मानता है।

यह भारत की ओर से चीन को एक स्पष्ट संकेत है कि अगर चीन भारत पर धौंस जमाने की नीति अपनाता है, तो भारत भी ऐसे किसी अवसर को छोड़ेगा नहीं। सेना के उप प्रमुख ने पहले ही खुलासा किया था कि पाकिस्तान को हाल ही में "ऑपरेशन सिंदूर", जो पाकिस्तानी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- अपने 90वें जन्म दिन पर दलाई लामा ने पुरजोर ढंग से कहा कि उनका उत्तराधिकारी बौद्ध धर्म की पुरानी परम्परा के अनुसार ही चुना जायेगा, पर चीन चाहता है, उत्तराधिकारी के चयन में उसकी निर्णायक भूमिका होनी चाहिए।
- चीन चाहता है, संभावित उम्मीदवारों के नाम की चिट एक "जार" में रख दी जाए तथा पर्ची निकाल कर नये दलाई लामा का नाम घोषित हो।
- इसे इतिहास व परम्पराओं का उपहास मानते हैं, दलाई लामा व बौद्ध अनुयायी। इनके अनुसार, दलाई लामा का पुनर्जन्म होता है तथा किस व्यक्ति के रूप में दलाई लामा ने पुनर्जन्म लिया, उसको पहचानने की एक धार्मिक परम्परा व पद्धति है।
- पिछली बार दलाई लामा ने जिस बच्चे का चयन किया था, उसका अपहरण कर लिया था। चीन की सरकार ने, और अभी तक पता नहीं चला वह कहाँ गया।

'3 से 5 करोड़ के बदले निजी मैडिकल कॉलेज को मान्यता देते हैं, हैल्थ मिनिस्ट्री के अफसर'

कांग्रेस ने देश भर के 40 निजी मैडिकल कॉलेजों को नैशनल मैडिकल कमीशन (एन.एम.सी.) द्वारा मान्यता देने में करोड़ों रूपए के भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करते हुए दावा किया

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7 जुलाई। कांग्रेस ने सोमवार को देशभर के 40 से अधिक निजी मेडिकल कॉलेजों की मान्यता के संबंध में स्वास्थ्य मंत्रालय में बड़े घोटाले का खुलासा किया है, जिसमें नैशनल मैडिकल कमीशन (एनएमसी) द्वारा 3 से 5 करोड़ रुपये तक की रिश्वत, जाली रिकॉर्ड और झूठी निरीक्षण रिपोर्टों के माध्यम से यह मान्यता दी गई थी।

कांग्रेस प्रवक्ता डॉ. मोनिका मेहरोत्रा ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि इस घोटाले के लिए सरकार जिम्मेदार है। उन्होंने कहा, यह एक स्पष्ट मामला है, जिसमें गंभीर लापरवाही और व्यवस्थित भ्रष्टाचार हुआ है, और यह सवाल उठाया कि क्या कोई ऐसा तंत्र है, जो यह जांच कर सके कि मान्यताएँ किस आधार पर दी गई थीं।

उन्होंने कहा कि जांचकर्ताओं का मानना है कि 3 से 5 करोड़ रुपये तक

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- कांग्रेस प्रवक्ता डॉ. मोनिका मेहरोत्रा ने कहा कि यह संगठित भ्रष्टाचार का मामला है, और पूछा कि क्या यह जानने का कोई मैकनिज़्म है कि एन.एम.सी. द्वारा निजी कॉलेजों को किस आधार पर मान्यता दी जाती है।
- कांग्रेस प्रवक्ता ने आरोप लगाया कि यह सारी कहानी केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय में शुरु हुई है। निजी मैडिकल कॉलेजों की मंजूरी से संबंधित दस्तावेज़ अफसर ही लीक करते थे।
- उन्होंने कहा, इन दस्तावेज़ों में आतंरिक नोटिंग, निरीक्षण के कार्यक्रम, निरीक्षण करने वाले अफसर आदि की जानकारी होती है। यह जानकारी निजी मैडिकल कॉलेजों के एजेन्ट्स को दे दी जाती है। फिर वे निरीक्षण के समय फर्जी फैकल्टी, नकली मरीज़, नकली बायोमैट्रिक की व्यवस्था करते हैं। कई बार तो इस सब में अधिकारी ही उनकी मदद करते हैं।

एसआई 2021 पेपर लीक की सुनवाई मंगलवार को जारी रहेगी

जयपुर, 7 जुलाई। राजस्थान हाईकोर्ट में सोमवार को एसआई भर्ती-2021 पेपर लीक मामले में सुनवाई हुई। राज्य सरकार की ओर से महाधिवक्ता की बहस अधूरी रहने पर अदालत ने मामले की सुनवाई मंगलवार को तय की है। जस्टिस समीर जैन की एकलपीठ ने ये आदेश कैलाश चन्द्र शर्मा व अन्य की याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

सुनवाई के दौरान, राज्य सरकार की ओर से प्रार्थना पत्र पेश किया गया, जिसमें याचिका को सारहीन बताया गया व खारिज करने की गुहार की गई। महाधिवक्ता राजेन्द्र प्रसाद ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता ने समान मामले में पूर्व में भी याचिका दायर की थी। हालांकि बाद में याचिकाकर्ता की ओर से याचिका वापस लेने के आधार पर अदालत ने उसे खारिज कर दिया था। उन्होंने कहा, याचिकाकर्ता ने यह तथ्य अदालत से छिपाया है। इसके अलावा,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- महाधिवक्ता राजेन्द्र प्रसाद ने याचिका को सारहीन बताया।

जज के पद पर नियुक्ति के लम्बे इंतज़ार से उकताकर दावेदारी वापस ले रहे हैं कई वरिष्ठ वकील

वकीलों का आरोप है, सुप्रीम कोर्ट कोलीजियम की अनुशंसा के बाद भी उनकी नियुक्ति में टालमटोल की जा रही है

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7 जुलाई। वरिष्ठ वकीलों में इन दिनों निराशा बढ़ती जा रही है क्योंकि सरकार, सुप्रीम कोर्ट कोलीजियम द्वारा अनुशंसा किये जाने के बावजूद, उच्च न्यायालयों में न्यायाधीश के रूप में उनकी नियुक्तियों को रोक रही है। इस समय कम से कम 29 वकील केन्द्र सरकार की कार्रवाई का इंतजार कर रहे हैं, जिनकी नियुक्ति के लिए सुप्रीम कोर्ट कोलीजियम ने जनवरी 2023 से अप्रैल 2025 के बीच अनुशंसा की थी।

इनमें से दो, मुंबई के वरिष्ठ अधिवक्ता राजेश सुधाकर दातार और दिल्ली की श्वेताश्री मजूमदार, पारदर्शिता की कमी और मनमानी देरी के कारण अपनी उम्मीदवारी वापस ले चुके हैं।

मुंबई में वरिष्ठ सिविल एवं कॉमर्शियल केसों के वकील दातार ने इसलिए अपनी उम्मीदवारी वापस ली, क्योंकि नौ महीने हो गए हैं और उनकी फाइल अभी भी वहीं की वहीं है। कोलीजियम ने सितंबर 2024 में चार नामों की अनुशंसा की थी, जस्टिस अनखड़ और नेर्लीकर ने 5 जुलाई को शपथ ली। दातार कहते हैं कि वे 55 साल के हो चुके हैं और जानते हैं कि उनका कार्यकाल छोटा होगा, क्योंकि उच्च न्यायालय के न्यायाधीश 62 वर्ष की आयु में सेवानिवृत्त हो जाते हैं। उनका कहना है कि और इंतज़ार करना उनके सम्मान और प्रोफेशनल प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाएगा।

एडवोकेट श्वेताश्री मजूमदार, जो बौद्धिक संपदा अधिकारों के केसों के लिए जानी जाती हैं, ने कुछ दिन पहले अपनी उम्मीदवारी वापस ले ली, जबकि अगस्त 2024 में दिल्ली उच्च न्यायालय में उनकी नियुक्ति के लिए अनुशंसा की गई थी। उनका मेडिकल टैस्ट तेजस क़ारिया के साथ हुआ था, जिनकी नियुक्ति को 12 फरवरी को मंजूरी दे दी गई।

क़ारिया, अजय डिगपॉल तथा हरीश वैद्यनाथन शंकर, जो एक ही बैच का हिस्सा थे, के नाम केन्द्र द्वारा इस साल की शुरुआत में मंजूर किए गए थे।

नियुक्तियों में देरी ने न्यायिक नियुक्तियों की प्रक्रिया की पारदर्शिता को लेकर चिंता बढ़ा दी है, क्योंकि इसमें केन्द्र "पिक एंड चूज़" का तरीका अपना रहा है। वरिष्ठ अधिवक्ता सौरभ किरपाल, जिनकी दिल्ली उच्च न्यायालय में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- मुम्बई के वरिष्ठ अधिवक्ता राजेश सुधाकर दातार सहित चार वकीलों को सितम्बर 2024 में हाई कोर्ट में बतौर जज नियुक्त करने की सिफारिश की गई थी। सुधाकर ने कहा, दो जज को शपथ दिलाई गई है। पर, उनकी फाइल जस की तस है। यह इतंज़ार अपमानजनक है, इसलिए मैंने दावेदारी वापस ले ली है।
- दिल्ली के एक वरिष्ठ वकील श्वेताश्री मजूमदार को भी अगस्त 2024 में हाई कोर्ट का जज बनाने की अनुशंसा की गई थी, सुप्रीम कोर्ट कोलीजियम द्वारा। श्वेताश्री का मैडिकल टैस्ट एक अन्य दावेदार तेजस कारिया के साथ हुआ था। कारिया को तो नियुक्ति मिल गई, पर, श्वेताश्री को नहीं, श्वेताश्री ने भी दावेदारी वापस ले ली है।

शताब्दी वर्ष में एक लाख स्थानों पर हिंदू सम्मेलन करेगा संघ

नयी दिल्ली, 07 जुलाई। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) अपने शताब्दी वर्ष में समाज के हर वर्ग से सम्पर्क करने के लिए विशेष अभियान चलाएगा और सामाजिक बुराइयों को दूर करने और धर्म-जागरण के लिए देश में एक लाख से ज्यादा स्थानों पर ' हिंदू सम्मेलन' आयोजित करेगा।

इस अभियान के तहत, संघ के कार्यकर्ता घर-घर जाकर लोगों से सम्पर्क-संवाद करेंगे। आरएसएस के प्रांत प्रचारकों के तीन दिवसीय सम्मेलन

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- आरएसएस के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर ने कहा कि इनका आयोजन हिंदुओं में धार्मिक पुनर्जागरण के लिए किया जा रहा है।

'जेन स्ट्रीट की हेराफेरी पर सेबी ने इतनी देर से मुँह क्यों खोला'

राहुल गांधी ने अमेरिकन ट्रेडिंग कम्पनी जेन स्ट्रीट को सेबी द्वारा शेयर इन्डैक्स में हजारों करोड़ रूपए की हेराफेरी के आरोप में बैन करने पर यह टिप्पणी की

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 07 जुलाई। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने आज स्टॉक मार्केट रैगुलेटर सेबी पर "चुप रहने" और सरकार पर जेन स्ट्रीट नामक उस ट्रेडिंग फर्म के मामले में आंखें बंद करके बैठने का आरोप लगाया, जो अब इंडेक्स में हेरफेर करने की दोषी ठहराई गई है।

मार्केट रैगुलेटर ने न्यूयॉर्क आधारित हैज फंड, जेन स्ट्रीट (जे.एस.) को कैश, फ्यूचर्स ऑप्शंस (एफ. एण्ड ओ.) मार्केट में एक साथ दांव लगाकर मुनाफा कमाने के लिए इंडेक्स में हेरफेर करने का दोषी पाया है। सेबी ने इस हैज फंड की बाज़ार तक पहुंच को प्रतिबंधित कर दिया है और इसके मुनाफे में से 4,843 करोड़ रुपये से अधिक की राशि को जब्त कर लिया है।

जांच में यह पाया गया कि जे.एस. ने जनवरी 2023 से मई 2025 तक की जांच अवधि में शुद्ध रूप से 36,671 करोड़ रुपये का मुनाफा कमाया।

राहुल गांधी ने अपने एक्स हैण्डल पर हिन्दी में लिखा, "मैंने 2024 में स्पष्ट रूप से कहा था कि फ्यूचर्स एण्ड ऑप्शन्स (एफ.एण्ड ओ.) मार्केट अब बड़े खिलाड़ियों के लिए एक खेल का मैदान बन गया है, और छोटे निवेशकों की जेब लगातार खाली हो रही है।"

अब सेबी खुद यह स्वीकार कर रहा है कि जेन स्ट्रीट ने हजारों करोड़ का हेरफेर किया। सेबी इतनी देर तक चुप क्यों रहा? किसके आदेश पर सरकार अपनी आंखें बंद किए बैठी रही? और कितने और बड़े शार्क अब भी खुदरा निवेशकों को नुकसान पहुंचा रहे हैं?

राहुल ने आगे कहा, "हर मामले में यह स्पष्ट है, सरकार अमीरों को और अमीर बना रही है और सामान्य निवेशकों को बर्बादी के कगार पर धकेल रही है।"

विपक्ष ने सेबी की पूर्व चेयरपर्सन माधबी पुरी बुच पर भ्रष्टाचार के आरोपों को लेकर लगातार हमला किया है।

राहुल ने यह भी याद दिलाया कि कैसे पिछले साल सितंबर में उन्होंने यह पोस्ट किया था, "अनियंत्रित एफ. एण्ड ओ. ट्रेडिंग 5 सालों में पैंतालीस गुना बढ़ी है। 3 सालों में 90 प्रतिशत छोटे निवेशकों ने 1.8 लाख करोड़ खो दिए हैं। सेबी को उन तथाकथित बड़े खिलाड़ियों के नाम उजागर करने चाहिए, जो उनके खर्चे पर मालामाल हो रहे हैं।"

जेन स्ट्रीट की स्थापना सन् 2000 में हुई थी और इसका पिछले साल का वार्षिक राजस्व 20.5 बिलियन था।

जेन स्ट्रीट अपनी वेबसाइट पर खुद को एक ऐसी फर्म के रूप में प्रस्तुत करती है, जो दामों को स्थिर और भरोसेमंद बनाए रखने के लिए आंकड़ों का गहराई से विश्लेषण करती है और बाज़ार की चाल को अच्छी तरह समझती है।

जेन स्ट्रीट भारत में चार समूह संस्थाओं के माध्यम से काम करती है, जिनमें से दो संस्थाएं भारत में स्थित हैं, जबकि अन्य दो हांगकांग और सिंगापुर में हैं।

फर्म ने दिसंबर 2020 में अपनी पहली भारत इकाई शुरू की थी। अन्य दो एशियाई संस्थाएं भारत में पंजीकृत विदेशी निवेशक के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- सेबी ने इस अमेरिकन ट्रेडिंग कम्पनी पर शेयर इंडैक्स में हेराफेरी करके 36,677 करोड़ रूपए का फायदा कमाने के आरोप की जाँच की और कम्पनी को दोषी पाते हुए उस पर प्रतिबंध लगाया है।
- राहुल गांधी ने इस प्रकरण को उठाते हुए सरकार पर अब तक आँखे मूँदे रखने का आरोप लगाया और एक्स पर लिखा कि, उन्होंने गत वर्ष भी कहा था कि फ्यूचर एण्ड ऑप्शन्स (एफ. एण्ड ओ.) बाज़ार बड़े खिलाड़ियों का खेल बन गया है, छोटे निवेशकों की जेब लगातार कट रही है।
- ज्ञातव्य है कि विपक्ष ने बार-बार सेबी की पूर्व अध्यक्ष माधबी पुरी बुच पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाए हैं।
- जेन स्ट्रीट की स्थापना सन् 2000 में हुई थी। कम्पनी 2020 में भारत आई थी और इसकी चार शाखाएँ भारत में एक्टिव हैं, इनमें से दो भारत में हैं तथा एक-एक हाँगकाँग व सिंगापुर में काम करती हैं।

थप्पड़ कांड में निचली अदालत की कार्यवाही पर अंतरिम रोक

जयपुर, 7 जुलाई। राजस्थान हाईकोर्ट ने देवली-उनियारा विधानसभा सीट पर उपचुनाव के मतदान के दौरान बूथ पर एसडीएम को थप्पड मारने के मामले में टोंक की एससी, एसटी कोर्ट में चल रही कार्रवाई पर अंतरिम रोक लगा दी है। इसके साथ ही अदालत ने मामले में राज्य सरकार से जवाब तलब किया है। जस्टिस उमाशंकर व्यास की एकलपीठ ने यह आदेश नरेश मीणा की रिवीज़न याचिका पर प्रारंभिक सुनवाई करते हुए दिए।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- मतदान के दौरान बूथ पर एसडीएम को थप्पड़ मारने के आरोपी नरेश मीणा की रिविज़न याचिका पर हाईकोर्ट ने यह आदेश दिया।

विचार बिन्दु

अगर इंसान सुख-दुःख की चिंताओं से ऊपर उठ जाये तो आसमान की ऊँचाई भी उसके पैरों तले आ जाये। –शेख सादी

इंसान क्यों बना हैवान?

'एक तरफा प्यार में छात्र द्वारा शिक्षिका की तलवार से हत्या''- बांसवाड़ा

''लाल बना काल, बेटे ने मां की चाकू से हत्या की, फिर ट्रेन से कटकर जान दी''- जयपुर

''पति-पत्नी अपने दो बच्चों के साथ टैंक में कूदे, चारों की मौत''- बाड़मेर

''शादी नहीं करने से नाराज युवती ने खुदकुशी की''- जयपुर

''सूदखोरी की आग में व्यापारी की मौत'' बयान के आधार पर मामला दर्ज, जांच शुरू

''खुद को आग लगाकर ट्रांसपोर्ट नगर थाने में घुसा प्रॉपर्टी डीलर, मोटा ब्याज वसूलने और प्रताड़ना का मामला साझेदार के खिलाफ दर्ज''

''यूपी में मुस्लिम युवती ने हिंदू बनकर शिक्षक से शादी की, सुहागरात पर मौत के घाट उतारा''-कुशीनगर

''ढाबा संचालक पर डंडे व सरियों से हमला, मोबाइल और 8000 रुपए लूटे, बेहोश होने तक पीटते रहे-जयपुर

''स्कॉर्पियो से बदमाशों ने बाइक सवार ज्वेलर को टक्कर मारी - 10 किलो चांदी 1 तोला सोना और नकदी लूटी''- जयपुर

''लखनऊ में दामाद ने सास-ससुर को उतारा मौत के घाट''

''दिल्ली में घरेलू नौकर ने मालकिन की डांट के बाद मालकिन और उसके बेटे की हत्या की''

''साठ वर्षीय फूफा के प्यार में शादी के बाद पति की हत्या करवाई''

उपरोक्त समाचार पत्रों की हेडलाइंस केवल एक या दो दिन की ही है। ऐसे ही समाचार हमें प्रतिदिन नियमित रूप से पढ़ने को मिलते रहते हैं और यह हाल केवल जयपुर या राजस्थान का ही नहीं है अपितु पूरे देश का है।

क्या यही वह संस्कृति है जिसका गुणगान करते हम नहीं थकते? क्या यही वह सभ्यता और समाज है जिस पर हम गर्व कर सकते हैं और जिसके आधार पर विश्वगुरु कहलाना चाहते हैं?

भारत सदैव सामाजिक सौहार्द्र, पारिवारिक संबंधों की मधुरता, मालिक - नौकर के बीच घरेलू संबंधों के लिए जाना जाता रहा है। सहिष्णुता, सहयोग, समन्वय, सदाशयता एवं संवेदनशीलता हमारी संस्कृति के विशिष्ट गुण रहे हैं।

अब ऐसा क्या हो गया कि प्रत्येक मानवीय संबंध चाहे वह पति-पत्नी का हो, पिता-पुत्र का हो, मां-बेटे का हो, मालिक-नौकर का हो ग्राहक-दुकानदार का हो, दोस्तों का हो, केवल और केवल हवस का शिकार हो गया है। यह हवस पैसे की हो सकती है, शारीरिक हो सकती है या फिर अहम की तुष्टि की भी हो सकती है।

हम उपरोक्त लिखित घटनाओं का आकलन करेंगे तो पाएंगे कि इन सब के मूल में मनुष्य की बढ़ती घृणा, यौन हिंसा, ईर्ष्या और अति भौतिकतावादी प्रवृत्ति है। हमारे समाज में इस प्रकार का पतन किस प्रकार हुआ और क्यों हम इस स्थिति में पहुंच गए कि प्रतिदिन हमें रिश्तो को तार-तार होते देखना पड़े या थोड़ी सी भौतिक सुख सुविधाओं के लिए किसी मासूम की हत्या करने के समाचार पढ़ने को मिलें?

एक मालकिन ने अपने घरेलू नौकर को थोड़ा सा डांट दिया तो उसने गुस्से में उत्तेजित होकर अपनी मालकिन और उसके 14 साल के मासूम बेटे की हत्या कर दी। उसके मन में एक क्षण के लिए भी यह विचार नहीं आया कि इन्हीं लोगों ने उसे काम दिया है। यह अविश्वसनीय लगता है किंतु हमारे देश में यह वास्तविकता बन चुका है ।

कोई दामाद अपने सास-ससुर की हत्या कर दे तो इसे क्या कहा जाएगा? जिस व्यक्ति के साथ सात फेरे लेकर जनम-जनम का साथ निभाने का वादा किया हो, उसी की हत्या जब कोई अपने प्रेमी के साथ मिलकर करवा दे तो इसे नैतिक पतन की पराकाष्ठा ही कहा जाएगा।

रिश्ते-नाते तो जैसे भूतकाल की बातें हो गई हैं। आजकल की घटनाएं देखकर 'उपकार' फिल्म के प्रसिद्ध गाने की ये पंक्तियां बरबस याद आ जाती हैं :-

''कसमें-वादे प्यार वफ़ा, सब बातें हैं बातों का क्या,
कोई किसी का नहीं, झूठे नाते हैं, नातों का क्या?''

आइए, हम इस प्रकार की स्थिति के लिए जिम्मेदार कारणों का विश्लेषण करने का प्रयास करें।

सबसे प्रथम कारण तो यह है कि संयुक्त परिवार की प्रथा लगभग समाप्त हो गई है। पहले दो-तीन पीढ़ियां एक साथ रहती थीं जिससे परिवार में ही साथ में रहने के लिए अत्यावश्यक गुण बचपन से ही विकसित हो जाते थे। जब सब मिल-बैठ कर भोजन करते थे तो सबके साथ बात करने का बहुत अवसर मिला करता था ।

बच्चों को सोने से पहले दादा-दादी या माता-पिता उनको पुरानी अच्छी कहानियां सुनाकर सुलाते थे। एक पर कोई कष्ट आता तो दूसरे सहायता करने को तत्पर रहते थे। बीमार होने पर पड़ोस के लोग भी परिजनों की ही तरह सेवा में लग जाते थे।

व्यवसाय या नौकरी के लिए बाहर जाने के कारण अधिकांश परिवार, एकल परिवार हो गए हैं। परिवार में केवल पति-पत्नी और उनके एक या दो बच्चे होते हैं। चाचा-चाची, मामा-मामी, मौसा-मौसी, बुआ-फूफा जैसे रिश्ते आजकल केवल नाम मात्र के रह गए हैं। लड़कियों की बहुत पढ़ाई होने लगी है। इस कारण आर्थिक रूप से वे आत्मनिर्भर हो गई हैं और वे भी पति के जितना ही कमाने लगी हैं। आर्थिक रूप से उनका आत्मनिर्भर होना अनुचित नहीं है, किंतु इसके कारण छोटा-मोटा विवाद भी तलाक तक पहुंच जाता है। किसी भी प्रकार की उत्तेजनात्मक स्थिति में उनके लिए अपने पति से अलग होने का निर्णय लेते समय उनके मन में कतई ख्याल नहीं आता है कि जिस परिवार को वे छोड़कर अचानक जा रही हैं, वह उनका दूसरा घर था।

> **क्या यही वह संस्कृति है जिसका गुणगान करते हम नहीं थकते? क्या यही वह सभ्यता और समाज है जिस पर हम गर्व कर सकते हैं और जिसके आधार पर विश्वगुरु कहलाना चाहते हैं? भारत सदैव सामाजिक सौहार्द्र, पारिवारिक संबंधों की मधुरता, मालिक - नौकर के बीच घरेलू संबंधों के लिए जाना जाता रहा है। सहिष्णुता, सहयोग, समन्वय, सदाशयता एवं संवेदनशीलता हमारी संस्कृति के विशिष्ट गुण रहे हैं।**

तकनीकी विकास ने भी अतिरिक्त समस्या उत्पन्न कर दी है। पहले टीवी आया और परिवार के सभी सदस्य एक साथ बैठकर टीवी देखते थे, किंतु इसके कारण आपस में बात करके दुख दर्द बांटने का अवसर कम होता गया। जब से मोबाइल आ गया है, स्थितियां एकदम बदल गई हैं। युवा पूरा समय अकेले मोबाइल पर बिताते हैं। ऐसे दृश्य बिल्कुल आम हैं कि 10 व्यक्ति बैठे हैं और सभी आपस में बात नहीं कर रहे हैं। सब अपने अपने मोबाइल में ही व्यस्त हैं। व्यक्ति का अकेलापन मानसिक अवसाद की स्थिति पैदा करता है। जब उसे लगता है कि उसे किसी से कोई लेना-देना ही नहीं है तो फिर दूसरे भी उसकी परवाह करना छोड़ देते हैं। शायद यही कारण है की विदेशों की तरह यहां भी संतानें, माता-पिता को वृद्धाश्रम में भेजने लगी हैं। जिन मां-बाप ने अनेक कष्ट उठाकर अपने बच्चों को बड़ा किया और अपनी रातें उनकी सुख-सुविधाओं का ध्यान रखने में बिता दीं, आज वही बच्चे थोड़े से भौतिक स्वार्थ और सुविधा के लिए उन्हें ओल्ड एज होम में भेजने से भी नहीं हिचकते ।

आज किसी व्यक्ति के लिए पूरी दुनिया 'मैं' में सिमट कर रह गई है। इसमें दूसरे किसी का प्रवेश होना ही संभव नहीं है। यहां तक कि पति-पत्नी में भी यही बात लागू होती है। हाल ही में सोनम नाम की एक लड़की ने मध्य प्रदेश में राजा से शादी की और शादी के साथ ही उसने अपने पति की हत्या करने की साजिश रचना प्रारंभ कर दिया था। एक युवती ने अपने फूफा से सम्बन्ध के कारण शादी होते ही अपने पति को मरवा दिया।

पहले जहां बच्चे अच्छी नैतिक मूल्यों वाली कहानियां सुनकर बड़े होते थे, आजकल बचपन से ही हिंसा, अश्लीलता, घृणा और नफरत के वीडियो, फिल्में मोबाइल पर देखकर बड़े हो रहे हैं। आजकल तो बच्चा पैदा होते ही जब रोने लगता है तो मां-बाप उसे मोबाइल के माध्यम से चुप कराना ज्यादा सही समझने लगे हैं। मोबाइल की लत धीरे-धीरे उनके लिए कई प्रकार की मानसिक और शारीरिक बीमारियों का कारण बन जाती है। अधिकांश शारीरिक रोग जैसे स्पॉन्डिलाइटिस हो, कमर में दर्द हो, आंखों का खराब होना होना हो या मानसिक प्रदूषण की बात हो, सभी की जड़ में मोबाइल का दुष्प्रभाव ही है। मोबाइल के हानिकारक प्रभाव को देखते हुए ही जापान में 10 वर्ष की आयु तक बच्चों को मोबाइल से दूर रखा जाता है। ऑस्ट्रेलिया में भी 16 साल से कम आयु के बच्चे सोशल मीडिया अकाउंट नहीं खोल सकते हैं।

भारत में स्थिति इस के ठीक विपरीत है। जब कभी किसी जगह इंटरनेट बंद हो जाए या मोबाइल खो जाए तो जिस प्रकार की व्यग्रता मोबाइल धारकों में देखी जाती है उसको देखकर ऐसे लगता है कि शायद मोबाइल सदैव से, जीवन का अनिवार्य भाग रहा है। वास्तविकता यह है कि आज से 25-30 वर्ष पूर्व मोबाइल नहीं था, तो शायद जीवन कहीं अधिक सुविधाजनक और आनंददायक था।

मोबाइल के कारण जिस प्रकार की हिंसा और यौन हिंसा वाली फिल्में कच्ची उम्र में बच्चों को देखने को मिल रही हैं उसी के कारण उन घटनाओं को हम देखते हैं जिनका उल्लेख इस आलेख के प्रारंभ में किया गया है ।

आज एक-दूसरे की लाश पर पांव रखकर आगे बढ़ने की जो गला काट प्रतिस्पर्धा होती जा रही है वह भी इस प्रकार की हिंसक घटनाओं को बढ़ावा दे रही है ।

पति-पत्नी में आ रही रिश्तो में बढ़ती कड़वाहट और बिखरते रिश्तों को देखते हुए ही, आजकल अनेक युवा विवाह के बंधन में बंधने तक से बचने लगे हैं। कई लोग विवाह करने के बाद भी बच्चे पैदा करना एक मुसीबत का कारण मानते हैं। इस प्रकार की मनोवृति यदि थोड़े समय और चलती रही तो किस प्रकार यह सृष्टि बचेगी और किस प्रकार पारिवारिक संबंध बचेंगे, इस पर भी प्रश्न चिन्ह लगता है। तब, मनुष्य और जानवर में जो अंतर है वह भी समाप्त हो जाएगा।

इंसान है तो इंसानियत उसमें होनी चाहिए। जब कोई छात्र अपनी शिक्षिका का तलवार से गला काट ले या कोई कोई घनिष्ठ मित्र थोड़े से पैसे के लालच में अपने निकट दोस्त की हत्या कर दे, तो इसे हैवानियत ही कहा जाएगा। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि मनुष्य इंसान तो नहीं बन पाया, शैतान और हैवान अवश्य बन गया।

यहां यह नहीं कहा जा रहा है कि मोबाइल की कोई उपयोगिता नहीं है, किंतु इस इसे काम में लेने के लिए जिस प्रकार के विवेक, समझ और बुद्धिमानी की आवश्यकता है वह विकसित करने की जिम्मेदारी माता-पिता के साथ ही समाज के प्रबुद्ध लोगों और शिक्षकों की भी है। यह तब ही संभव है जब वे स्वयं भी इन पर अत्यधिक निर्भरता को कम करें और इसके उपयोगी पक्ष को ही सामने रखते हुए विवेकपूर्ण कार्य करे।

मोबाइल के माध्यम से आज कच्ची बस्ती में रहने वाला व्यक्ति भी यह जानता है कि लंदन, वाशिंगटन या मुंबई में किस प्रकार का जीवन धनी लोग व्यतीत कर रहे हैं और फिर वह भी उसी प्रकार का जीवन जीने की लालसा पाल लेता है। अपनी क्षमता के आधार पर उतना पैसा नहीं कमा पाने की स्थिति में वह किसी भी असामाजिक या आपराधिक कार्य में लिप्त होने से नहीं हिचकता।

हम मनुष्य को इंसान बनाने की बात करते हैं और इसके लिए विभिन्न प्रकार के प्रयास भी करते हैं, किंतु मनुष्य इंसान बनना तो दूर, वह तो समय के साथ-साथ हैवान बनता जा रहा है।

देश के कर्णधारों, शिक्षाविदों, चिंतकों और जनप्रतिनिधियों को गंभीरतापूर्वक समाज में तेजी से बढ़ रही हिंसक मनोवृति पर लगाम लगाने के उपाय करने होंगे। क्या इसके लिए कुछ पुराने समय की अच्छी बातों को पुनर्स्थापित नहीं किया जा सकता? आशा करनी चाहिए कि समय रहते किए गए प्रयासों से नई पीढ़ी एक-दूसरे के प्रति आदर, सद्भाव, प्रेम, स्नेह और मिठास के आधार पर रिश्ते बनाएगी ताकि हम अपनी विरासत पर गर्व कर सकें। यदि हमने समय रहते इस पर कोई कार्य नहीं किया तो फिर आने वाली पीढ़ी हमें कतई माफ नहीं करेगी। समाज एक बार पतन के गर्त में चला जाएगा तो फिर वहां से ऊबर पाना ही असंभव हो जाएगा।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

इतिहास के झरोखे से मध्य पूर्व एशियाई देशों की राजनीति और इजरायल

महावीर सिंह

29 जून को प्रकाशित लेख से आगे--

राष्ट्रदूत के 29 जून 2025 के अंक में हमने जाना कि वर्तमान इजरायली राज्य का गठन, 1916-17 से कैसे कैसे विभिन्न समझौतों, घोषणाओं, प्रस्तावों के जरिए हुआ।

इस अंक में हम वर्तमान इजरायल- फिलिस्तीनी भूभाग की भौगोलिक स्थिति और इतिहास में इस भूभाग में घटी प्रमुख घटनाओं की जानकारी के साथ साथ यहूदी, ईसाई, इस्लाम धर्मों के माईथोलजी और ऐतिहासिक दृष्टि से आपसी संबंधों और संघर्षों को समझने का प्रयास करेंगे।

भौगोलिक स्थिति :- इजरायल का भू भाग जिसे इतिहासकार विभिन्न नामों यथा फिलिस्तीन, यहूदा राज्य, कनान, लेवांट आदि लिखते आए है, वह भूमध्य सागर से लगता है जिसके दक्षिण पश्चिम में मिश्र की सीमा लगती है। लेबनान और जॉर्डन की सीमा भी इजरायल से लगती है। इसके आस पास के दूसरे देश पूर्व में जॉर्डन, उतर में सीरिया व फिलिस्तीन, तुर्क स्थित है। जॉर्डन नदी इजरायल जॉर्डन की सीमा तय करती है और इसके पश्चिम का भाग, वर्तमान में विवादित वेस्टबैंक व गाजा पट्टी का है।

तेल अवीव, बेरुत, रामल्ला, जूडिया, बेथलेहेम,. गैलीली, जाफ़ा, हाइफा, हिब्रोन, एलाट, अकाबा आदि इस क्षेत्र के प्रमुख शहर है। अकाबा की खड़ी से लालसागर, अरब सागर का समुद्री मार्ग खुलता हैं। इनमें से अधिकांश शहर भूमध्य सागर के तट पर हैं। व्यापार-वाणिज्य-नोपरिवहन- कृषि की दृष्टि से यह क्षेत्र सदैव से महत्वपूर्ण रहा है

तुर्क के क्षेत्र से बहकर आने वाली तथा कई ऐतिहासिक सभ्यताओं की जननी नदिया दजला (टिगरिस) व फरात (युफ्रेटिस) आदि इस क्षेत्र में तुर्क, सीरिया, इराक आदि देशों में बहकर अरब सागर में मिलती हैं। इन नदियों के बीच का भूभाग मेसोपोटामिया के नाम से जाना जाता था। इसी क्षेत्र में सूमेरीयन, अक्काडियन, बेबिलोनियन, असीरियाई सभ्यताएं पनपी जो विश्व की ज्ञात सर्वाधिक पुरानी सभ्यताओं में से हैं।

इतिहास के झरोखे से फिलिस्तीन क्षेत्र की राज व्यवस्था :-फिलिस्तीन लेवेंट के नाम से जाने जाने वाले बड़े क्षेत्र का हिस्सा है जो इतिहास में विभिन्न सभ्यताओं का चौराहा रहा है। 1948 से पहले, फिलिस्तीन अरबों, यहूदियों और ईसाइयों की एक विविध आबादी का घर था, क्योंकि सभी समूहों का इस क्षेत्र, विशेष रूप से यरुशलम शहर से धार्मिक संबंध था। फिलिस्तीन क्षेत्र पर समय समय पर अक्कादियन, बेबिलोनिया, असीरियन, रोमन-बाईजेंटियन, यूनानी, फारसी (परसियन- ईरानी), मिश्र, सेलजुक तर्क, अरब शासकों ने राज किया या प्रभावित किया। यूनानी लेखकों के लेखन को सही मानते हुए कुछ इतिहासकारों के अनुसार 12 सदी ईशा पूर्व से सातवीं ईसापूर्व सदी तक यहां एक फलती-फूलती सभ्यता थी। कुछ का मानना है कि 5 वी (बीसी) से पहले के विश्वसनीय प्रमाण नहीं हैं किंतु इसके बाद इस क्षेत्र के बारे में ठीक लेखकों का लिखा काफी कुछ मिलता है।

सुमेरियन सभ्यता, मानव इतिहास की कृषि आधारित, बहुदेव वादी, शुरुआती शहरी सभ्यताओं में से एक थी, जो 4500 ईसा पूर्व के आसपास दक्षिणी मेसोपोटामिया में उभरी थी। इसने इस क्षेत्र को बड़े पैमाने पर प्रभावित किया। बहुदेव वादी अक्काडियन सभ्यता, प्राचीन मेसोपोटामिया की एक दूसरी सभ्यता थी जो लगभग 2334 ईसा पूर्व से 2154 ईसा पूर्व तक अस्तित्व में थी। यह अक्कड़ शहर और उसके आसपास के क्षेत्र में केंद्रित थी, और इसमें अक्काडियन और सुमेरियन भाषी लोग शामिल थे। अक्काडियन साम्राज्य को इतिहास का पहला साम्राज्य माना जाता है, जिसने मेसोपोटामिया, लेवांट क्षेत्रों और अनातोलिया में महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। इस सभ्यता का प्रसिद्ध राजा सारगौन दी ग्रेट था जिसने 24वी से 22वी शताब्दी ईसापूर्व में कई विजय प्राप्त की। गुटियन लोगों के आक्रमणों से यह सभ्यता 2154 ईशा पूर्व में समाप्त हो गई।

असीरियन सभ्यता भी इसी क्षेत्र में पनपी। यह तीन काल खंडों :- 2000 से 1600 बीसी, 1365 से 1056 बीसी, 911 से 612 ईसापूर्व में बनती बिगड़ती रही। यह सभ्यता भी बहुदेव वादी थी। राजनीति व धर्म का गठजोड़ था। इस सभ्यता बड़े टावर नुमा जिग्गुराट मंदिर के लिए भी जानी जाती है।इस सभ्यता का विस्तार मिश्र तक था। निन्वेह इसकी राजधानी थी जिसे 612 बीसी में बेबीलोन और मीडियनों ने नष्ट कर दिया। इस प्रकार इस सभ्यता का अंत हो गया। वर्तमान इराक व पुराना अशुर शहर इसका प्रमुख क्षेत्र था।

लगभग 720 ईसा पूर्व में, असीरियाई राजा तिग्लथ-पाइलसर ने उत्तरी इज़राइल के राज्य पर विजय प्राप्त की। दस इजरायली/यहूदी जनजातियों को असीरिया में निर्वासित कर दिया, जिन्हें यहूदी धर्म में 'खोई हुई जनजातियां' माना जाता है। इसके पश्चात नव बेबिलोनिया साम्राज्य के राजा नबूकदनेसर द्वितीय द्वारा 586 बीसी में इजरायल क्षेत्र में हमला कर,प्रथम बार यहूदियों के पवित्र पर्वत मंदिर को नष्ट किया।

63 बीसी में, जब इजरायल में यहूदी सभ्यता 1,000 साल से ज़्यादा पुरानी हो चुकी थी, रोम ने,जनरल पोम्पी के नेतृत्व में यहूदी राष्ट्र पर कब्ज़ा कर लिया। इस समय, रोमनस ने इस क्षेत्र की आबादी के एक हिस्से को निर्वासित कर दिया।रोमन शासन 636 ईस्वी तक रहा। यहूदियों के प्रति रोमनस का शुरुआती व्यवहार कठोर था। इसके कारण क्षेत्र में रोम के गवर्नरों के विरुद्ध विद्रोह भी हुए। कोखबा विद्रोह के बाद, इजरायल से, यहूदियों का निष्कासन भी हुआ। रोम में अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए 63 बीसी के आसपास ही येरुशलम के पवित्र मंदिर को जलाया।यह दूसरी बार हुआ। रोमन लोग इस क्षेत्र को जूडिया या सीरिया या प्लास्टिन के नाम से जानते थे।

636 ईस्वी तक रोमन साम्राज्य का हिस्सा रहने के बाद अरबों, तर्क ने इस पर अधिकार किया। ईरानी साम्राज्य (पार्थियन और सासानी) ने 2 शताब्दी ईसा पूर्व से 7 वीं शताब्दी ईस्वी (614-628)तक फिलिस्तीन के कुछ भागों पर शासन किया।वर्ष 614 में ईरानी पार्थियन शासकों में पूर्वी रोमन साम्राज्य (बाईजेंटीन) ने येरुशलम छीन लिया।1099 में प्रथम धर्म युद्ध के समय यरुशलम पर ईसाईयों में कब्जा कर लिया।

यहूदी धार्मिक पुस्तक तनख/तोरा व ओल्ड टेस्टामेंट में यहूदियों के मिश्र में बसने या जबरन ले जाए जाने और वहां से भागने का उल्लेख आता है। इस घटना के समय, कुछ इतिहासकार इजरायल को मिश्र का उपराज्य मानते है। इसका एक उल्लेख मेंरनेपटा स्टैल में लगभग 1207 ईशा पूर्व का मिलता है। यहूदी धार्मिक पुस्तकों में भी 13वी बीसी के आसपास की घटना में मूसा के नेतृत्व में यहूदियों का मिश्र की कैद अर्थात जबरिया दासत्व से भागने का उल्लेख है। इतिहासकारों में मतभेद है कि यह जबरन दासत्व/कैद थी या कनान क्षेत्र के यहूदियों का मिश्र में रोजगार के लिए स्वेच्छा से जाना था। मूसा की नेतृत्व में मिश्र से पलायन की घटना को यहूदी लोग हर साल फराह के त्यौहार के रूप में मनाते है।

तुर्क ओटोमन साम्राज्य ने 1517 से 1917 तक इस क्षेत्र के अधिकांश भाग पर शासन किया, लेकिन प्रथम विश्व युद्ध के बाद ब्रिटेन ने फिलिस्तीन और पूर्व साम्राज्य के अन्य क्षेत्रों पर नियंत्रण कर लिया। इस समय, लीग ऑफ नेशंस ने फिलिस्तीन के लिए एक ब्रिटिश शासनादेश जारी किया, जिसने ब्रिटेन को इस क्षेत्र पर प्रशासनिक नियंत्रण (मैंडेट) दिया।

लीग आफ नेशन्स के द्वारा ब्रिटेन को कब्जा देने के बाद से ही दूसरे देशों में बसे लोग प्रताड़नाओं के कारण इस क्षेत्र में आकर बसने लगे।यहां जमीन की करली।घर बनाकर खेती करने लगे। जगह-जगह छोटी-छोटी यहूदी बस्तियां, शहर बसने लगे और अंततः फिलिस्तीन पर यहूदियों का कब्जा स्थायी कब्जे में बदल गया है।

फिलिस्तीनी क्षेत्र में नई बस्तियां बसाना और मूल फिलिस्तीनियों को शरणार्थी बना देने की चल/नीति अब भी जारी है।

फिलिस्तीन में यहूदी, ईसाई, इस्लाम, तीनों के धार्मिक स्थल है :- यरुशलम में यहूदियों का माउंट मंदिर है जिसे जन मान्यताओं के अनुसार 1000 ईसापूर्व यहूदियों के राजा सोलोमन में बनाया। यहूदियों का यह सबसे बड़ा धार्मिक आस्था का स्थान है। इस मंदिर को प्रथम बार बेबीलोन के राजा नाबुकदनेसर सेकेंड में द्वारा आक्रमण कर 586 ईस्वी में नष्ट कर दिया। मंदिर का पुनर्निर्माण किया गया,जो सेकेंड टेंपल कहलाता है जिसे रोमनस द्वारा 63 बीसी के आसपास दूष्टि बार तोड़ा, जलाया।

इसी क्षेत्र में सिनाय पर्वत है जहां मान्यता के अनुसार यहूदी ईश्वर यहोवा में पैगम्बर मूसा को 10 आगाएं सुनाई जो यहूदी धर्म का आधार है। अन्य यहूदी धार्मिक स्थल तिबेरियस, रामल्ला, हेब्रोन शहरों में है। इसी स्थान, माउंट टेंपल पर अल-अकसा मस्जिद है जो मुस्लिम धर्म में मक्का, मदीना के बाद तीसरा सबसे पवित्र स्थान माना जाता है। माना जाता है, इसका निर्माण मुहम्मद साहब के मित्र खलीफा इल - अब्र खट्टाब में करवाया।मान्यता है कि इसी स्थान पर डोम आफ अर्क से पैगम्बर मुहम्मद साहब ने जन्नत की यात्रा की थी। ईसाईयों के भी यहां कई धार्मिक--पवित्र स्थान है।

बेथलहम का चर्च ऑफ नेटवीटी (ईशा जन्मस्थान), अल-अक्सा मस्जिद(जहां ईशा को फांसी पर लटकाया),गाजा का सेंट जार्ज मठ, रामल्ला का सेंट एंड्रयू चर्च आदि। तनख व ओल्ड टेस्टामेंट (बाइबल का एक भाग) में समय भिन्नता के साथ भौगोलिक वर्णन और कहानी में कई समानताएं है, व्याख्याओं में अंतर है। तीनों धर्म आदि पुरुष अब्राहम को मानते है। पैगम्बर प्रथा मानते है। मोटे तौर पर एकेश्वर वादी है। ईसाई धर्म में ईश्वर के साथ साथ उसके पुत्र और आत्मा की अवधारणा भी है। महान संतों की मूर्तियां भी है। इस्लाम और यहूदीधर्म में इसकी पूर्ण वर्जना है।

–महावीर सिंह, पूर्व आईएएस

अंत्योदय शिविर : श्रीगंगानगर के चरणजीत को 48 वर्ष बाद आवासीय पट्टा मिला

अपने ही घर का पट्टा नहीं होने से चरणजीत सिंह दोहरी जिन्दगी जी रहा था। उसके पास अपना मकान तो था लेकिन पट्टा न होने के कारण उसका मालिकाना हक नहीं था, अतिक्रमण के नाम पर कभी भी उसे तोड़ा जा सकता था, उसे यह भी डर था कि कोई भूमाफिया इसे अपना ही आवास सिद्ध न कर दें या कोई अतिक्रमण हो जाये।

> - **48 सालों में चरणजीत सिंह ने कई कार्यालयों के चक्कर लगाए, लेकिन कभी नियमों के कारण और कभी दस्तावेजों की कमी बताकर उसे पट्टा नहीं दिया गया**
> - **चरणजीत सिंह ने बताया कि पट्टा नहीं मिलने के कारण अनेक योजनाओं के लाभ से वंचित रहा**

अंत्योदय शिविर में शिविर प्रभारी ने आवश्यक रिपोर्ट व अन्य कार्यवाही करते हुए चरणजीत सिंह को आवासीय पट्टा सौंपा।

इस चिन्ता से मुक्त होने में उसे पूरे 48 साल लग गये। इन 48 सालों में उसने कई कार्यालयों के चक्कर लगाए लेकिन कभी नियमों के कारण और कभी दस्तावेजों की कमी बताकर उसे पट्टा नहीं दिया गया।

श्रीगंगानगर जिले की रायसिंहनगर पंचायत समिति की ग्राम पंचायत 71 आरबी में पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा के शिविर में चरणजीत सिंह पुत्र भूपेन्द्र सिंह निवासी 13 आरबी ने आवासीय पट्टे के लिये प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया। शिविर प्रभारी ने आवश्यक रिपोर्ट व अन्य कार्यवाही करते हुए चरणजीत सिंह को आवासीय पट्टा सौंपा।

चरणजीत सिंह ने बताया कि गत 48 वर्षों से पट्टा नहीं मिलने के कारण अनेक योजनाओं के लाभ से वंचित रहा। अब उसे अपना मालिकाना हक मिला है, शांति के साथ जी सकता हूं कि बुढ़ापा चिन्तामुक्त निकलेगा, शांति के साथ मर सकता हूँ कि मेरे बच्चे आशियाने के लिए भटकेंगे नहीं। आवासीय पट्टा मिलने से लोन लेकर इसका विस्तार या मरम्मत भी करवा सकता हूँ।

चरणजीत सिंह ने भजनलाल सरकार का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मेरे जैसे कई लोगों के बरसों से लम्बित काम शिविर में हुए हैं। पूरे राजस्थान में पता नहीं कितने हजारों, लाखों लोगों के जरूरी काम हुए होंगे।

अनिल कुमार शाक्य,
जनसम्पर्क अधिकारी,
श्रीगंगानगर

अंत्योदय शिविर में लोगों की परिवेदनाओं का समाधान

रतनगढ़/राजलदेसर, (निसं)। रतनगढ़ तहसील के ग्राम पंचायत सिमसिया में सोमवार को पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़े के तहत शिविर का आयोजन किया गया। सरपंच परमेश्वर लाल मेघवाल की अध्यक्षता में लगे शिविर में तहसीलदार जितेंद्र सिंह, नायब तहसीलदार पूजा पारीक, एडीओ लक्ष्मीनारायण सैनी, ग्राम विकास अधिकारी हिम्मत सिंह, कनिष्ठ सहायक भगवानाराम, गिरदावर सुरेंद्र सिंह पटवारी गोपाल राहड़ सहित अधिकारी मौजूद रहे। इस दौरान नामांतरण, रास्तों के विवाद, आपसी बंटवारा, पट्टा वितरण आदि समस्याओं का मौके पर समाधान किया। ग्राम विकास अधिकारी हिम्मत सिंह ने बताया कि ''हरियालो राजस्थान'' के तहत वृक्षारोपण किया गया व गांववासियों को अधिकाधिक पेड़-पौधे लगाने और उनकी नियमित रूप से देखरेख करने का आव्हान किया। शिविर में 84 राजस्व के मामले, 20 पट्टे, 85 स्वामित्व पार्सल वितरित किए गए। तहसीलदार जितेंद्र सिंह ने कहा शिविर के दौरान आमजन से प्राप्त होने वाले प्रार्थना पत्र पर तत्काल कार्रवाई का प्रयास किया जाए और सरकार की योजनाओं से पात्र वंचित लोगों को लाभान्वित करें। इसके अलावा अधिक से अधिक पेड़ पौधे लगाए ताकि पर्यावरण संरक्षण के लिए एक अनूठा उदाहरण पेश हो।

राशिफल मंगलवार 7 जुलाई, 2025

पंडित अनिल शर्मा

आषाढ़ मास, शुक्ल पक्ष, त्रयोदशी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2082, ज्येष्ठा नक्षत्र रात्रि 3:15 तक, शुक्ल योग रात्रि 10:17 तक, कौलव करण दिन 11:35 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 3:15 से धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-सिंह, बुध-कर्क, गुरू-मिथुन, शुक्र-वृष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज रवियोग रात्रि 3:15 से आरम्भ होगा। आज भौम प्रदोष व्रत है। आज से जया पार्वती व्रत आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 9:07 से 10:49 तक, लाभ-अमृत 10:49 से 2:14 तक, शुभ 3:56 से 5:38 तक।

राहूकालः 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 5:43, सूर्यास्त 7:20

मेष
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आज पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

सिंह
घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

धनु
आज अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अरज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन असंतोष बना रहेगा।

वृष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। संभावित स्त्रोतों से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा।

मकर
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

तुला
आर्थिक कारणों से अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी।

कर्क
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज अतिथियों का आगमन रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी

संक्षिप्त

जागरूकता वैन को दिखाई हरी झंडी

ब्यावर (निसं) दिशा आरसीडी समाज सेवी संस्था एवं शिक्षा विभाग के संयुक्त तत्वावधान में प्रवेशोत्सव कार्यक्रम का भव्य शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला कलेक्टर कमल राम मीना, अतिरिक्त जिला कलेक्टर मोहन लाल एवं जिला शिक्षा अधिकारी अजय गुप्ता रहे।इस अवसर पर जन–जागरूकता हेतु विशेष रूप से सुसज्जित की गई प्रवेशोत्सव जागरूकता वैन को अधिकारियों द्वारा हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। यह वैन मसूदा ब्लॉक के विभिन्न गांवों में भ्रमण कर आमजन को बच्चों के नियमित स्कूल प्रवेश और शिक्षा के महत्व के प्रति प्रेरित करेगी।कार्यक्रम के दौरान जिला कलेक्टर मीना ने कहा,शिक्षा से वंचित कोई बच्चा न रहे, इसके लिए हम सबको मिलकर प्रयास करने होंगे। वर्षा ऋतु में जलाशयों, खड्डों आदि में पानी भर जाने से बच्चों की सुरक्षा भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। स्कूल आने–जाने के दौरान बच्चों के डूबने जैसी दुर्घटनाएं चिंताजनक हैं। अतः इसके लिए बच्चों और उनके अभिभावकों को सतर्क और जागरूक करना आवश्यक है।कार्यक्रम के अंतर्गत प्रवेशोत्सव हेतु तैयार किए गए प्रेरणादायक पोस्टर का भी विधिवत विमोचन किया गया, जो स्कूल प्रवेश अभियान को गति देने में सहायक सिद्ध होंगे।इस आयोजन में दिशा संस्था की नोबलेज हट परियोजना के अधिकारी आनंद फेलिक्स, एक्सेस टू जस्टिस परियोजना अधिकारी कुशाल सिंह रावत, मुकेश, घनश्याम, गट्टू, मदन, लक्ष्मण सहित संस्था के अन्य सदस्य उपस्थित रहे।यह कार्यक्रम शिक्षा, सुरक्षा और सामाजिक भागीदारी की दिशा में एक सार्थक प्रयास है, जो नन्हें कदमों को स्कूल की ओर बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

प्रतिभा सम्मान का पोस्टर जारी

मदनगंज-किशनगढ़,(निस)। हरियाणा गौड़ ब्राह्मण पंचायत संस्था युवासंघ द्वारा पंचायत भवन हाऊसिंह बोर्ड में आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह में पोस्टर का विमोचन किया गया। अध्यक्ष मनोज कोठोत्या ने बताया की शिव जलाभिषेक सहित समारोह में समाज की प्रतिभाओ का सम्मान कर महाप्रसाद के पोस्टर का विमोचन कर समाज हितार्थ चर्चा की गई। इस दौरान संरक्षक पवन कोठोत्या, राहुल कोठोत्या, भरत पंचोली, चेतन बोहरा, कमल बापलावत, निक्की बेरोज्या, सचिव दीपक बलेसरा, सह सचिव बनवारी बोहरा, कोषाध्यक्ष रोहित बापलावत, उपाध्यक्ष कविराज बोहरा, संगठन मंत्री आशीष हल्दीनिया, सांस्कृतिक मंत्री गौरव भेवाल, प्रचार मंत्री शानू बेरोज्या, क्रीड़ा सचिव मनु भोपलावत, सह क्रीड़ा सचिव रवि बापलावत, राजेश बंदावला के अलावा एडवोकेट धनराज भोपलावत, ईश्वरी प्रसाद बापलावत, गोपाल भेवाल, बाबूलाल बापलावत, नोरत बलेसरा, मूलचन्द कोठोत्या, दौलत बापलावत, मूलचन्द भोपलावत, मुकेश बोहरा, विनोद भेवाल, विकास भोपलावत, अजय बलेसरा, गौतम कोठोत्या, भगवान बोहरा, योगेश बोहरा, राहुल कुलचान्या आदि समाजबंधु मौजूद रहे।

पक्षियों के लिये परिंडे बांध

मदनगंज-किशनगढ़ (निस)। किशनगढ़ वुमनिया गुरूप के स्थापना दिवस पर आर के पाटनी गर्ल्स कॉलेज परिसर में पक्षियों के लिए परिंडे बांधे। कॉलेज निर्देशक सुभाष अगरवाल, मैनेजमेंट कमेटी सदस्य जयश्री अगरवाल, प्राचार्य डॉ शैलेंद्र पाटनी, पूनम झामनानी व करुणा क्लब सदस्य ने सहयोग किया। अध्यक्ष रुचिका असावा, सचिव श्रद्धा माहेश्वरी, उपाध्यक्ष कीर्ति मालू, प्रचार प्रमुख बबीता संचेती, उपसचिव मिलन काबरा, सदस्य कुसुम गोयल, अंतिमा राठी, कृष्णा माहेश्वरी, मीनू यादव, वन्दना शर्मा, निधि बियानी, कृष्णा माहेश्वरी, दिव्या राठी, सुरभि राठी, अदिति राठी, माधुरी गोयल, माया इनाणी, सोनिया सुराणा, प्रियंका सुराणा उपस्थित रही।

हड़ताल 9 को

भीलवाड़ा। श्रमिक संस्था गांधी मजदूर सेवालय में आगामी 9 जुलाई 2025 के केंद्रीय श्रम संगठनों के आव्हान को लेकर सभी श्रम संगठनों के द्वारा मीटिंग रखी गई।

NAME CHANGE

I, Army No.14865576H, SEP, Vaghela Bhavsinh Fulsinh, Residing at Vill-Chaklasi, Po-Ajarpura, Teh-Nadiad, Distt-Kheda , Gujarat, 388310 have change my Daughter's name from Sakshi to Vaghela Sakshiben Bhavsinh vide affidavit No CA333888 Dt 07/07/2025 before court campus Nasirabad

जनकल्याणकारी योजनाओं की प्रगति के लिए अतिरिक्त प्रयास

■ विभागीय समन्वय बैठक आयोजित

अजमेर, (कासं)। जिला कलैक्टर लोक बन्धु की अध्यक्षता में सोमवार को कलेक्ट्रेट सभागार में जिला स्तरीय अधिकारियों की विभागीय समन्वय बैठक आयोजित हुई। बैठक के दौरान जिला कलक्टर ने अधिकारियों को पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय शिविरों के माध्यम से अधिक से अधिक लोगों को लाभान्वित करने के लिए निर्देशित किया। साथ ही फ्लैगशिप योजनाओं की प्रगति की समीक्षा भी की गई। संपर्क पोर्टल एवं जनसुनवाई के लंबित प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण कर आमजन की समस्याओं का समाधान समयबद्ध रूप से सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

जिला कलैक्टर लोक बन्धु ने हरियाळो राजस्थान अभियान के तहत विभिन्न विभागों को अपने लक्ष्य के अनुसार वन विभाग की नर्सरी से पौधे प्राप्त कर आगामी माह में पौधारोपण के साथ पौधों के संरक्षण की व्यवस्था भी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

संपर्क पोर्टल पर लंबित प्रकरणों की विभागवार समीक्षा करते हुए जिला कलैक्टर ने अधिकारियों से कहा कि शिकायतकर्ता को संतुष्ट करने के लिए उन्हें उचित स्तर पर समझाइश की जाए। इससे राहत प्रदान की संतुष्टि प्रतिशत में सुधार आएगा। उन्होंने निर्देश दिए कि जिला स्तरीय जनसुनवाई में लंबित प्रकरणों का निस्तारण आगामी जनसुनवाई से पूर्व कर लिया जाए। मुख्यमंत्री कार्यालय एवं केंद्र सरकार के पोर्टल से प्राप्त मामलों की निगरानी स्वयं जिला स्तरीय अधिकारी करें।

लोक बन्धु ने विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि दैनिक जनसुनवाई में प्राप्त लंबित प्रकरणों के उत्तर समय पर भेजे जाएं। अंत्योदय सम्बल शिविरों की समीक्षा के दौरान उन्होंने तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर विभागीय प्रगति बढ़ाने को निर्देशित किया। उन्होंने बजट घोषणाओं से संबंधित लंबित भूमि आवंटन पूर्ण करने के निर्देश दिए।

ग्रामीण विकास विभाग के अधिकारियों को गरीबी मुक्त गांव योजना में बीपीएल परिवारों के बैंक खातों के सत्यापन, स्वामित्व योजना में पट्टा वितरण तथा नरेगा योजना के तहत पौधारोपण के लिए गड्ढों की खुदाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के अधिकारियों को लंबित जल कनेक्शन शीघ्र जारी करने, अंतिम छोर पर जलदाब की समीक्षा करने एवं लीकेज मरम्मत का कार्य समयबद्ध रूप से संपन्न करने के निर्देश दिए। ऐसी ग्राम पंचायते जहां पूर्व में शिविर आयोजित हो चुके हैं वहां भी कार्यों की पुनः समीक्षा की जाए।

राज्यपाल भीलवाड़ा दौरे

भीलवाड़ा। राजस्थान के महामहिम राज्यपाल हरीभाऊ बागड़े मंगलवार, 8 जुलाई को भीलवाड़ा जिले के एक दिवसीय दौरे पर रहेंगे।

राज्यपाल बागड़े प्रातः 9:40 बजे जयपुर से हेलिकॉप्टर द्वारा प्रस्थान कर प्रातः 10:40 बजे पुलिस लाइन हेलीपैड, भीलवाड़ा पहुंचेंगे। इसके उपरांत राज्यपाल प्रातः 11 बजे जैन स्थानक, सुभाष नगर, में आयोजित आध्यात्मिक चातुर्मास समारोह में भाग लेंगे। इस कार्यक्रम का आयोजन आध्यात्मिक चातुर्मास आयोजन समिति द्वारा किया जा रहा है। कार्यक्रम में सम्मिलित होने के पश्चात राज्यपाल दोपहर 12:05 बजे सड़क मार्ग से सांसद दामोदर अग्रवाल के निवास स्थान, आर.के. कॉलोनी के लिए प्रस्थान करेंगे और वहां अल्प विश्राम एवं भोजन करेंगे। इसके पश्चात माननीय राज्यपाल दोपहर 1:00 बजे पुलिस लाइन हेलीपैड, से प्रस्थान कर 1:15 बजे हेलीकॉप्टर से जयपुर के लिए रवाना होंगे। जिला कलक्टर जसमीत सिंह संधू ने निर्देश दिए कि संबंधित अधिकारी अस्थायी हेलीपैड निर्माण, ट्रैफिक रूट, साफ–सफाई, सुरक्षा व्यवस्था सहित अन्य आवश्यक व्यवस्थाएं दुरुस्त करना सुनिश्चित करें। उन्होंने राज्यपाल श्री बागड़े के सफल दौरे हेतु जिला प्रशासन व पुलिस के अधिकारियों को सभी आवश्यक तैयारिया समय रहते पूर्ण करने के भी निर्देश दिए।

आवास के सपनों को मिले पंख

अजमेर, (कासं)। अजमेर विकास प्राधिकरण की अटल आवासीय योजना के लिए आवेदन 02 जुलाई से प्रारम्भ हुए थे, प्राधिकरण के योजना पोर्टल पर सोमवार तक लगभग 800 आवेदकों द्वारा अपना पंजीकरण पोर्टल पर कराया जा चुका हैं। आवेदकों को ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया के कुछ चरणों में आ रही समस्याओं के निवारण के लिए उक्त चरणों को सरल रूप में समझाने के लिए निम्न दिशा निर्देश भी जारी किये जा रहे हैं ।

तकनीशियन पदों की स्वीकृति

अजमेर। राजस्थान सरकार ने अजमेर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड को 498 तकनीशियन– पदों की स्वीकृति प्रदान की है। यह निर्णय राज्य सरकार द्वारा उपभोक्ताओं को बेहतर, विश्वसनीय और निर्बाध विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए उठाए गए सकारात्मक और दूरदर्शी कदमों की श्रृंखला में एक महत्वपूर्ण पहल है।

अजमेर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड के प्रबंध निदेशक के.पी. वर्मा ने बताया कि तकनीकी स्टाफ की उपलब्धता में बढ़ोतरी से विद्युत आपूर्ति व्यवस्था अधिक सुदृढ़ होगी। ट्रांसफॉर्मर, लाइन, फीडर व अन्य तकनीकी कार्यों में तेजी आएगी, जिससे उपभोक्ताओं को निर्बाध सेवा प्राप्त होगी। उन्होंने बताया कि इन स्वीकृत पदों पर भर्ती की प्रक्रिया शीघ्र प्रारंभ की जाएगी, जिससे निगम की फील्ड स्तर पर तकनीकी क्षमताएं मजबूत होंगी ।

प्रबंध कार्यकारणी की बैठक संपन्न

■ प्रबंध कार्यकारणी के पदाधिकारी डॉ. अजय सैनी ने बताया कि इस बैठक में धर्मशाला से जुड़े कहीं अहम मुद्दों पर गहनता से विचार विमर्श किया गया।

भीलवाड़ा। अखिल भारतीय माली सेवा सदन पुष्कर धर्मशाला की प्रबंध कार्यकारणी की प्रथम बैठक पुष्कर स्थित माली समाज की धर्मशाला में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता नव निर्वाचित अध्यक्ष सत्यनारायण भाटी ने की।

प्रबंध कार्यकारणी के पदाधिकारी डॉ. अजय सैनी ने बताया कि इस बैठक में धर्मशाला से जुड़े कहीं अहम मुद्दों पर गहनता से विचार विमर्श किया गया। साथ ही संस्था के महासचिव कैलाश चौहान ने बैठक का एजेंडा बताया। वहीं संस्था के कोषाध्यक्ष बलदेव राम कच्छावा ने अब तक का आय–व्ययका विवरण प्रस्तुत किया। जिसे ध्वनि मत से उपस्थिति कार्यकारिणी सदस्यों ने पास किया। प्रथम बैठक को संबोधित करते हुए संस्था के संरक्षक ताराचंद गहलोत ने संस्थान की आने वाली योजनाओं और कार्य के बारे में विस्तार से बताया। संस्थान के उपाध्यक्ष व राजस्थान प्रदेश माली (सैनी) महासभा के प्रदेश महामंत्री गोपाल लाल माली ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि संस्थान का आय–व्यय का ब्यौरा प्रति माह मोबाइल पर व्हाट्सएप के जरिए सभी कार्यकारिणी सदस्यों को भेजना चाहिए। वही धर्मशाला के कार्यो के लिए विभिन्न उप समितियां गठित की जावे। इसी कड़ी में आईदान भाटी, डॉ.शंकर लाल परिहार, रूपचंद मारोठिया, व गीता सोलंकी तथा अनीता परिहार सहित कई वक्ताओं ने भी बैठक को संबोधित करते हुए अपने विचार व्यक्त किये। इस बैठक में धर्मशाला के जीर्णोद्वारा को लेकर मीटिंग में कहीं हम प्रस्ताव पास किए गए। बैठक के पश्चात सभी नवनियुक्त पदाधिकारी को नियुक्ति पत्र भी प्रदान किए गए। इस प्रथम बैठक में प्रबंध कार्यकाल में के सदस्यों की उपस्थिति में पहली बार अच्छी खासी रही।जिससे कहीं ना कहीं इस धर्मशाला के विकास के लिए नई जागृति देखने को मिल रही है।

चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

भीलवाड़ा। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्म संघ के आचार्य महाश्रमण की शिष्या साध्वी उर्मिला कुमारी ठाणा–4 ने रविवार को चातुर्मास के लिए काशीपुरी से रेल स्टेशन गोल प्याऊ चौराहा सूचना केंद्र होते हुए जुलूस के साथ तेरापंथ भवन नागौरी गार्डन में चातुर्मासिक प्रवेश किया। साध्वी उर्मिलाकुमारी ने कहा कि गुरु इंगित की आराधना से मंगल प्रवेश किया है। मंगलमय इन क्षणों में हर चेहरे पर प्रसन्नता झलक रही है।

उन्होंने कहा कि चातुर्मास काल धर्म ध्यान, तप जप, त्याग, स्वाध्याय प्रवचन, श्रवण का सीजन होता हैं। साध्वी मृदुलयशा ने भी विचार रखे। भिक्षु भजन मंडली ने गीत से मंगलाचरण किया। जिला एवं सेशन न्यायाधीश अभय जैन ने साध्वीवृन्य के चातुर्मास के प्रति शुभ आध्यात्मिक मंगल कामना की।

संयम सुख की खान, असंयम पतन का मार्ग : उपप्रवर्तिनी डॉ.राजमती

अजमेर, (कासं)। मणिपुंज सेवा संस्थान में श्रमण संघीय महाश्रमणी गुरूमाता महासती श्री पुष्पवतीजी मसा आदि ठाणा 7 के पावन सान्निध्य में श्रावक श्राविकायें जिनवाणी श्रवण करने के लिए उत्साहपूर्वक पहुंच रहे हैं।

सोमवार को धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए उपप्रवर्तिनी सदगुरुवर्या डॉ. राजमती ने कहा कि मानव संयम छोड़ता जाएगा तो विश्व अनीति, अवनति के गड्ढे में गिरता चला जाएगा। कान, आँख, नाक, रसना और स्पर्शन ये पाँचों इन्द्रियों में एक एक इन्द्रिय अपना संयम खोने लगे तो जीवन के लिए प्राण घातक बन जाता है। पतंगा दीपक लौ पर आसक्त होकर, हिरण संगीत सुनकर मोहित बना भँवरा गंध के वशीभूत होकर संयम खो देता है और मृत्यु को प्राप्त हो जाता है,हाथी जैसा विशालकाय प्राणी भी स्पर्शनेन्द्रिय के वशीभूत होकर गड्ढे में गिर जाता है। किसी एक इन्द्रिय के वश में होकर जब ये वनचर प्राणी प्राण गँवा देते हैं तो मानव पाँचों इन्द्रियों के वश में आकण्ठ डूब रहा है, संयम खो रहा है तो उद्धार कैसे संभव है? इंद्रियों को वश में करने के लिए मन, वाणी एवं कर्म पर संयम रखना आना चाहिए। जन्म मरण के जंजाल से, संसार चक्र से, चार गति चौरासी लाख जीव योनि में परिभ्रमण से मुक्ति प्राप्त करने के लिए जीवन संयम मय होना चाहिए। संयम सुख की खान है और असंयम पतन का मार्ग है।

साध्वी डॉ. राजरश्मि ने कह कि अनासक्ति अध्यात्म की आत्मा है और आसक्ति संसार बढ़ाने के कारण है। अनासक्ति का विकास करने के लिए परिवार, शरीर और इन्द्रियों के विषय के प्रति भेद विज्ञान की दृष्टि से चिन्तन करते हुए नश्वरता का भान करें। आत्मा अजर अमर है। सदैव चिन्तन करें जीव अकेला आया है,अकेला जाएगा। परिवार स्वार्थ की धुरी पर चलता हैए सुख के सभी साथी हैंए दुरूख में कोई साथ नहीं देता। इसलिए समय रहते चेत जाओ। साध्वी डॉ. राजकीर्ति ने कहा कि गुणों के प्रति हमारे हृदय में यदि अनुराग हो तो हम गुण ग्रहण करके गुणवान बन सकते है। गुणानुरागी व्यक्ति अपने अपने अवगुणों को दूर करके आदरणीय बन सकता है।

संघ अध्यक्ष शिखरचंद सिंगी ने जानकारी देते हुए बताया कि चातुर्मासिक कार्यक्रमों में त्याग तपस्या, जप जाप बाल संस्कार शिविर आदि का आयोजन होगा।

शिविर होंगे आयोजित

अजमेर, (कासं)। जिले में वित्तीय समावेशन से संबंधित योजनाओं से संबंधित अभियान आगामी 30 सितम्बर तक संचालित होंगे। इसमें ग्राम पंचायत स्तर पर शिविर आयोजित कर जन–धन खातों, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, अटल पेंशन योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना से लाभांवित किया जाएगा।

अग्रणी जिला प्रबंधक संजय कुमार सिंह ने बताया कि शिविरों में प्रधानमंत्री जन–धन योजना के पुराने खातों की केवाईसी करने के साथ ही नए जन–धन खाते हाल ही में व्यस्क हुए व्यक्तियों के खोले जाएंगे। मंगलवार को पींसागन की अलीपुरा, किशनगढ़ की अमरपुरा, केकड़ी की बघेरा एवं नाईकी ग्राम पंचायत में शिविर आयोजित होंगे। इसी प्रकार बुधवार को अजमेर ग्रामीण की बीर, श्रीनगर की बाघसुरी, सरवाड़ की भगवानपुरा एवं सांपला ग्राम पंचायत में शिविर आयोजित किए जाएंगे।

उन्होंने बताया कि गुरूवार को अरांई की बरोल, किशनगढ़ की बांदरसिंदरी, सावर की आमली एवं पारा ग्राम पंचायत, 11 जुलाई को पीसांगन की भगवानपुरा, श्रीनगर की देरांठू, भिनाय की बड़ली एवं नागोला ग्राम पंचायत, 14 जुलाई को अजमेर ग्रामीण की बड़लिया, अजमेर ग्रामीण की गेगल, केकड़ी की भराई एवं नीमोद में शिविर आयोजित किए जाएंगे।

अटल जन सेवा शिविर गुरुवार को

अजमेर, (कासं)। आमजन की समस्याओं के समाधान के लिए प्रत्येक माह के द्वितीय गुरुवार को समस्त ब्लॉक स्तर पर अटल जन सेवा शिविर का आयोजन किया जा रहा है। अतिरिक्त जिला कलक्टर ज्योति ककवानी ने बताया कि उपखण्ड स्तर पर आयोजित होने वाली जनसुनवाई को अटल जन सेवा शिविर में समायोजित किया गया है।

75 फलदार पौधे लगाए

अजमेर (कासं)। पर्यावरण संरक्षण एवं हरियाली के प्रसार हेतु इनर व्हील क्लब अजमेर द्वारा प्रेरणादायक पहल करते हुए सोमवार को अजमेर स्थित जेल प्रशिक्षण केंद्र परिसर में लगभग 75 फलदार पौधों का वृक्षारोपण किया गया। जेल प्रशिक्षण केंद्र के प्रमुख पारस के सहयोग से संपन्न हुआ। पौधों की नियमित देख रेख की जिम्मेदारी जेल प्रशासन द्वारा ली गई। क्लब अध्यक्ष पूर्णिमा तोषनीवाल ने बताया कि क्लब की यह हरित पहल समाज में सेवाए संवेदनशीलता रहं।

ब्राह्मण प्रतिभाओं को मिलेगा गौरवपूर्ण मंच

■ स्थापना दिवस पर युवा संगोष्ठी का भी होगा आयोजन

अजमेर। विप्र सेना अजमेर के कार्यालय पर सोमवार को समाजहित में महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में आगामी सर्वब्राह्मण समाज प्रतिभा सम्मान समारोह और स्थापना दिवस को लेकर ठोस निर्णय लिए गए। पूर्व निर्धारित 29 जून को होने वाला कार्यक्रम अब 26 जुलाई को आयोजित होंगे। बैठक में 19 जुलाई को विप्र सेना का स्थापना दिवस पर विभिनन कार्यक्रम आयोजित करने का निर्णय लिया गया। प्रतिभा सम्मान समारोह के लिए फॉर्म जमा करने की अंतिम तिथि भी 19 जुलाई घोषित की गई है। विप्र सेना अजमेर के जिला अध्यक्ष गुंजन शर्मा व संयोजक लोकेश मिश्रा ने बताया कि प्रतिभा सम्मान समारोह में उन छात्र–छात्राओं को सम्मानित किया जाएगा जिन्होंने बोर्ड परीक्षाओं में 80 प्रतिशत या उससे अधिक अंक अर्जित किए हैं। कॉलेज स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया हो। राज्यस्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताओं में कोई उपलब्धि प्राप्त की हो। कार्यक्रम का उद्देश्य सिर्फ सम्मान करना नहीं बल्कि समाज के भविष्य को दिशा देने और युवाओं में आत्मविश्वास जगाने का प्रयास है।

गौशाला में नवीन जल स्त्रोत उद्गम का शुभारंभ

■ गर्मीयों में पानी की कमी पर जल स्स्रोत लगाया

नाथद्वारा, (निसं)। पुष्टिमार्गीय प्रधान पीठ प्रभु श्री नाथ जी की हवेली में गौशालाओ में हो रहे नवाचार एवं गौ माता के जल के सुखार्थ जल की कमी को देखते हुए जल पूर्ति एवं गौ माता के सुख के लिए गो.ति.108 राकेश (इंद्रदमन महाराज की आज्ञा एवं विशाल बावा की प्रेरणा एवं निर्देशन में नाथुवास गौशाला में पहली बार प्राचीन बावडियो से जल पूर्ति के अतिरिक्त नए जल स्त्रोत के रूप में प्रथम बार ट्यूबवेल के रूप में नवीन जल स्त्रोत का शुभारंभ किया गया। ग्यारस के शुभ अवसर पर नवीन जल स्त्रोत के रूप में जहां नवीन जल स्त्रोत श्रीजी प्रभु की कृपा से यमुने महारानी के रूप में पचपन 55 फीट पर ही स्वयं प्रकट हुई व जिसे छह सौ 60 फीट की गहराई तक किया गया है जिससे भविष्य में नाथुवास गौशाला में कभी भी गौ माता की जल सेवा के लिए जल की कमी नहीं रहेगी। ज्ञातव्य है कि इससे पूर्व श्रीजी प्रभु की नाथुवास गौशाला के जल की पूर्ति नाथुवास गौशाला के सामने स्थित कुंज बिहारी जी मंदिर की बावडी से जलापूर्ति होती रही है, लेकिन गर्मी में जल की कमी एवं अधिक से अधिक जल सेवा गौ माता के सुखार्थ हो सके इस बात को ध्यान में रखते हुए तिलकायत की आज्ञा एवं विशाल बावा के निर्देशन में प्रथम बार इस तरह के नवीन जल स्त्रोत का शुभारंभ किया गया है। वही विशाल बावा की प्रेरणा से कुंज बिहारी की बावडी को सभी गौशाला के सेवकों द्वारा स्वच्छता अभियान के तहत स्वच्छ किया गया।

सात दिन के भीतर डेयरी बूथ तैयार करने के आदेश

■ डेयरी बूथ पर निगम की कार्यवाही का मामला, अवमानना याचिका पर सुनवाई 18 को

अजमेर। अजमेर के बीके कॉल नगर में संचालित 98 नंबर का डेयरी बूथ पर नगर निगम द्वारा की कार्यवाही का मामला कोर्ट पहुंच गया। डेयरी बूथ पर लगाई गई स्टे याचिका पर सोमवार को कोर्ट में सुनवाई हुई। कोर्ट ने पीड़ित के पक्ष में आदेश करते हुए नगर निगम को 7 दिन के अंदर डेयरी बूथ तैयार कर देने के आदेश दिए हैं। कोर्ट ने कहा कि यदि आठवें दिन बूथ तैयार नही किया गया तो प्रतिदिन 3 हजार रुपए पीड़ित पक्ष को देने होंगे। वहीं मामले में पीड़ित की ओर से लगाई गई अब अवमानना याचिका पर 18 जुलाई को कोर्ट में सुनवाई होगी।

पीड़ित पक्ष के वकील संजीव रोहिला ने बताया कि बी के कॉल नगर में पीड़ित करतम मीणा को 2010 में 98 नंबर का बूथ आवंटित हुआ था। नगर निगम द्वारा उन्हें जबरन हटाने के लिए कहा गया,इसके बाद पीडित् ने कोर्ट में वाद दायर किया था, जिसमें 19 फरवरी को कोर्ट ने नगर निगम को कार्रवाई नहीं करने का पर स्टे जारी किया था। सात दिन में बनाकर दें डेयरी बूथ : एडवोकेट रोयला ने बताया कि मामले में सोमवार को सिविल न्यायालय पश्चिम कोर्ट में सुनवाई हुई। न्यायाधीश मनमोहन चंदेल ने पीड़ित के पक्ष में फैसला सुनाया, जिसमें नगर निगम को 7 दिन के अंदर पीड़ित को उसी जगह पर वापस डेयरी बूथ तैयार करके देने के आदेश दिए हैं। 8वें दिन बूथ तैयार नहीं होने पर प्रतिदिन 3 हजार नगर निगम की ओर से पीड़ित पक्षकार को देने होंगे। साथ ही कोर्ट ने कहा कि यदि इसके बावजूद भी निगम डेयरी बूथ को तैयार नहीं करता है, तो पीड़ित अपने स्तर पर भी डेयरी बूथ तैयार कर सकता है, जिसका खर्चा नगर निगम को वहन करना होगा।

अवमानना याचिका पर सुनवाई 18 को:– एडवोकेट रोहिला ने बताया कि कार्रवाई पर स्टे के आदेश के बावजूद निगम की ओर से की गई कार्रवाई पर पीड़ित ने न्यायालय की शरण ली थी।

NAME CHANGE

I, Daivashala wife of Army No.15580434A, HAV, Khade Vijay Shamrao, Residing at Vill-Karanjwan, Po-Therla, Teh-Patoda, Distt- Beed , Maharashtra, 414204 have change my name from Daivashala to Daivashala Vijay Khade vide affidavit No CA333889 Dt 07/07/2025 before court campus Nasirabad

आम सूचना

मेरे पिता श्री मूला पुत्र नन्दा जाति जाट निवासी बांसडा महरान, कुचील तहसील किशनगढ़ जिला अजमेर का स्वर्गवास मेरे निवास पर दिनांक 27 जनवरी 1998 को हो गया है, जिनका मृत्यु प्रमाण पत्र बनाने के लिए तहसीलदार कार्यालय किशनगढ़ में आवेदन किया है। इस संबंध में किसी व्यक्ति को आपत्ति हो तो मय दस्तावेज 7 दिवस में तहसीलदार कार्यालय किशनगढ़ में संपर्क करे। प्रार्थी-श्रीकिशन पुत्र मूलाराम

NAME CHANGE

I, Army No.14865576H, SEP, Vaghela Bhavsinh Fulsinh, Residing at Vill-Chaklasi, Po-Ajarpura, Teh-Nadiad, Distt-Kheda , Gujarat, 388310 have change my Daughter's name from Rachana Ben to Vaghela Rachanaben Bhavsinh vide affidavit No CA333887 Dt 07/07/2025 before court campus Nasirabad

आम सूचना

मेरे पुत्र बनवारी पुत्र धन्नादास जाति साद निवासी जामडो का मोहल्ला, नया शहर, किशनगढ़ तहसील किशनगढ़ जिला अजमेर का स्वर्गवास मेरे निवास पर दिनांक 15 मई 2007 को मेरे निवास स्थान पर हो गया है, जिनका मृत्यु प्रमाण पत्र बनाने के लिए तहसीलदार कार्यालय किशनगढ़ में आवेदन किया है। इस संबंध में किसी व्यक्ति को आपति हो तो मय दस्तावेज 7 दिवस में तहसीलदार कार्यालय किशनगढ़ में संपर्क करे। प्रार्थी-धन्नादास पुत्र मूलदास

आम सूचना

मेरे जेठजी श्री हरजी पुत्र भैरू जाति राईका निवासी ग्राम रामगढ तहसील रूपनगढ़ जिला अजमेर का स्वर्गवास मेरे निवास स्थान पर दिनांक 8 फरवरी 2016 को हो गया है, जिनका मृत्यु प्रमाण पत्र बनाने के लिए तहसीलदार कार्यालय रूपनगढ़ में आवेदन किया है। इस संबंध में किसी व्यक्ति को आपत्ति हो तो मय दस्तावेज 7 दिवस में तहसीलदार कार्यालय रूपनगढ़ में संपर्क करे। प्रार्थिया-नाथी देवी पत्नी सवाई

आम सूचना

मैं मेरे पक्षकार मुकेश कुमार वर्मा से प्राप्त जानकारी व उनके निर्देश अनुसार सर्वसाधारण को सूचित करता हूं कि श्री मुकेश कुमार वर्मा पुत्र जगदीश प्रसाद वर्मा निवासी 119 रोड नंबर 1 सेक्टर नंबर 2 माधव कॉलोनी जे पी नगर मदार अजमेर ने अपनी पुत्री आकांक्षा वर्मा को अपनी समस्त चल अचल सम्पति से बेदखल कर दिया है साथ ही यह भी स्पष्ट किया जाता है कि यदि भविष्य में कोई व्यक्ति संस्था अथवा पक्ष आकांक्षा वर्मा से किसी प्रकार का व्यवहार लेन-देन या संपति से जुड़ा कोई क्रय-विक्रय करता है तो उसकी पूरी ज़िम्मेदारी संबंधित व्यक्ति/संस्था की स्वयं की होगी। मैं श्री मुकेश कुमार वर्मा व मेरा परिवार, किसी भी प्रकार के कानूनी अथवा आर्थिक दायित्व के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। भवदीय-एन. शर्मा

आम सूचना: यह कि एक आवासीय भूखण्ड संख्या 165, जो खसरा नं. 336 (पुराना नं. 307), ग्राम गगवाना, तहसील एंव जिला अजमेर क्षेत्रफल 200.00 वर्ग गज को श्रीमती कस्तूरा बेदी पत्नी श्री प्रदीप कुमार ने श्री अत्ता मौहम्मद पुत्र श्री हाजी अब्दुल सत्तार से जरिये विक्रय पत्र दि. 26.09.2011 द्वारा क्रय किया था। ततपश्चात उक्त के सम्बंध में श्री जब्बार खान पुत्र गफ्फार खान को मुख्यार 05.10.2017 को जरिये नोटेराईज्ड मुख्यारनामा द्वारा नियुक्त कर दिया गया। ततपश्चात् उक्त का क्रय श्रीमती शकीला पत्नी श्री शाहनवाज ने जरिये विक्रय पत्र दि. 17.01.2018 द्वारा कर लिया। ततपश्चात् श्रीमती शकीला से उक्त भुखण्ड के मूल विक्रय पत्र दि. 26.09.2011 व मुख्यारनामा गुम हो जाने पर इसकी गुमशुदगी थाना साईबर क्राईम में दर्ज करवाई गई। अब श्रीमती शकीला पत्नी श्री शाहनवाज द्वारा उक्त भूखण्ड संख्या 165, को बंधक रख कर Svatantra MHFCL से ऋण लिया जा रहा है। अतः उक्त भूखण्ड के स्वामित्व अथवा गुम हुए मूल दस्तावेजो के सम्बंध में किसी को कोई आपत्ति हो तो मय दस्तावेज सात दिवस में पेश करें। बाद मियाद Svatantra MHFCL द्वारा भूखण्ड को बंधक कर लिया जावेगा तथा आपत्ति अमान्य होगी।
मनोज कुमार शर्मा, एडवोकेट
आर एम वी लॉ एसोसिएट्स 9660333985, 9079815511

आम सूचना

कि मुझ सूचनाकर्ता के स्वामित्व का आवासीय रूपान्तरित भूखण्ड संख्या 45 क्षेत्रफल 150.0 वर्गगज वाके 'कितीनगर' अजमेर रोड, राजस्व ग्राम मदनगंज किशनगढ़ जिला अजमेर राजस्थान के खसरा संख्या 457/1 में स्थित है। जिस भूखण्ड के चैन दस्तावेजों में एक विक्रय पत्र जिसमें पूर्वविक्रेता करण सिंह भाटी ने इस भूखण्ड को हुकमीचंद मीणा पुत्र श्री नानकराम मीणा निवासी फरासिया जरिये अधिकृत अभिकर्ता कालूसिंह जामड से दिनांक 14.05.2002 को क्रय किया था जो मूल कहीं गुम हो चुका है जो दस्तावेज आज तक ढूंढने से नहीं मिला है। जिस दस्तावेज द्वारा आज दिन तक किसी को रहन, बेवान, बक्शीश, वसीयत आदि नहीं किया गया है। जो मूल दस्तावेज यदि किसी सज्जन को मिले तो सूचित करे। अशोक कुमार जैन पुत्र श्री चांदमल जैन निवासी बृज मधुकर भवन के सामने, शिवाजी नगर, मदनगंज-किशनगढ़,अजमेर, राजस्थान मो.नं. 98290-71706

कार्यालय अजमेर विकास प्राधिकरण, अजमेर

नामान्तरण आदेश जारी हेतु आम सूचना का प्रारूप

-आम सूचना-

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि श्रीमती सुनीता शर्मा पत्नी श्री अतुल शर्मा द्वारा प्राधिकरण की हरिभाउ उपाध्याय नगर (मुख्य) योजना के भूखण्ड संख्या बी 154 का नामान्तरण हेतु आवेदन किया है। श्रीमती सुनीता शर्मा पत्नी श्री अतुल शर्मा द्वारा उक्त भूखण्ड का क्रय श्रीमती भारती शर्मा पत्नी श्री अभिषेक शर्मा निवासीः- 436-4, बापू नगर, अजमेर से जरिये पंजीकृत दान विलेख संख्या 2009003628 दिनांक 22.07.2009 द्वारा किया गया है। अतः भूखण्ड संख्या बी-154 हरिभाउ उपाध्याय नगर (मुख्य) योजना का नामान्तरण श्रीमती सुनीता शर्मा पत्नी श्री अतुल शर्मा, के पक्ष में जारी किये जाने के संबंध में किसी को आपत्ति हो तो सूचना प्रकाशन के 7 दिवस के भीतर आपत्ति प्राधिकरण कार्यालय में दर्ज करावें। उक्त नियत अवधि पश्चात कोई आपत्ति स्वीकार योग्य नहीं होगी व आवेदक के नाम नामान्तरण करनें की कार्यवाही की जा सकेगी।

अजमेर विकास प्राधिकरण, अजमेर

अविप्रा
टोडरमल लेन, सिविल लाईन्स, अजमेर, Email :- ajmerada@gmail.com,
Website :- www.rajasthan.gov.in/ada, Tel.No. :- 0145-2627748-2627749

क्रमांक :- अविप्रा/प.2/तकनीकी/2025-26/राजकाज 16324386 दिनांक :- 04/07/2025

ई-निविदा सूचना संख्या 16/2025-26

अजमेर विकास प्राधिकरण, अजमेर की ओर से जारी कार्य Laying of Synthetic Coat in Badminton Auditorium at Jawahara School, Ajmer की अनुमानित लागत राशि 14.50 लाख की ई–निविदा दिनांक 16.07.2025 सांय 06:00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित समस्त विवरण वेबसाईट (http:://eproc.rajasthan.gov.in) एवं (http:://sppp.raj.nic.in) http:://www.urban.rajasthan.gov.in/ada पर देखा जा सकता है।

UBN No.: AJD2526WSOB00042
राज.संवाद/सी/25/5649
अधिशाषी अभियन्ता
अजमेर विकास प्राधिकरण

कार्यालय नगरपालिका बिजयनगर जिला–ब्यावर राज०

गांधी उद्यान–ब्यावर रोड, बिजयनगर

E-Mail ID-npvijaynagar@gmail.com Telephone No.01462-230051

क्रमांक/न.पा.बि./भूमि/2025/5361 **आम सूचना** दिनांक :05.02.2025

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि निम्न वर्णित आवेदक ने कृषि भूमि पर बसी निम्न कॉलोनियों में कृषि भूमि नियमन हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है, जिन पर नियमानुसार कार्यवाही की जाकर पट्टे दिये जायेंगे। अतः इन भूखण्डों के संबंध में यदि किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो मय दस्तावेजों/प्रमाण के 7 दिवस की अवधि में कार्यालय में लिखित रूप से प्रस्तुत कर देवें। समयावधि गुजर जाने के बाद कोई आपत्ति मान्य नहीं होगी।

क्र.सं	पत्रावली नं.	नाम आवेदक	योजना/ग्राम का नाम	खसरा नं.	भू.सं.	क्षेत्रफल
1.	43	जितेन्द्र कुमार पारीक/ रामरतन पारीक	मारूति नगर, बरल द्वितीय	950,951,953 954,956	216	230.39 वर्गमीटर

अधिशाषी अधिकारी , नगरपालिका बिजयनगर

कार्यालय नगरपालिका बिजयनगर जिला–ब्यावर राज०

क्रमांक/न.पा.बि./नामा/2025/1185 **आम सूचना** दिनांक :12.06.2025

सर्वसाधारण को सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि निम्नांकित मकान व प्लाट गृहकर पंजिका में अन्तरण हेतु निम्न विरासत पत्रावली प्राप्त हुई है। अगर किसी को आपत्ति/उज्र हो तो विज्ञप्ति प्रकाशन के 07 दिवस में मय सबूत के अधोहस्ताक्षरर्ता के समक्ष आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं, बाद मियाद, गुजरने पर कोई उज्र/आपत्ति मान्य नहीं होगी।

फाईल नं	आवेदक नाम	मूल आवंटी/नामान्तरण	भूखण्ड का विवरण	भूखण्ड का नाम	प्रयोजनार्थ
92	नरपत सिंह पुत्र शुभकरण कविया	शुभकरण सिंह कविया पुत्र हिंग्लाजदान	आबादी क्षेत्र जामोला फैक्ट्री बिजयनगर ब्लॉक नं. 118 भू.सं. 01	200.00 SQ.Yards	आवासीय

अधिशाषी अधिकारी , नगरपालिका बिजयनगर

कार्यालय नगर परिषद किशनगढ (अजमेर) राज

क्रमांकः .न.प.कि./कृषि भूमि नियमन/2025/963 **आपति विज्ञप्ति** दिनांकः 07/07/2025

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि राजस्व ग्राम मदनगंज के खसरा संख्या 304/7 में स्वीकृत योजना में निम्न भूखण्डधारियों द्वारा भू-उपयोग परिवर्तन वास्ते आवेदन पेश किया है, इस संबंध में किसी व्यक्ति/संस्था को कोई आपति हो तो इस सूचना के प्रकाशन की दिनांक से 07 दिवस में इस कार्यालय को लिखित में आपत्तियां/कारण/विवरण सहित कार्यालय समय में दर्ज करावें, अन्यथा बाद मियाद किसी भी प्रकार की आपति स्वीकार नहीं होगी एवं आवेदक के पक्ष में भूमि का भू-उपयोग परिवर्तन कर दिया जावेगा।

क्र.सं.	प्रार्थी का नाम	खसरा संख्या राजस्व ग्राम	वर्तमान उपयोग	वांछित उपयोग	क्षेत्रफल
1	श्रीमति मोहिनी देवी पत्नि श्री डालचंद यादव निवासी- कृष्णापुरी फाटक के बाहर मदनगंज-किशनगढ	304/7 मदनगंज 37	आवासीय	व्यवसायिक	3727.78 वर्गगज

आयुक्त, नगर परिषद किशनगढ

विज्ञापन नं. सिपेट: CJ/Advt./TRG/2025-26/10

केन्द्रीय पेट्रोरसायन अभियान्त्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (सिपेट) - जयपुर

(रसायन एवं पेट्रोरसायन विभाग, रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय, भारत सरकार)

पताः एस.पी. 1298, सीतापुरा इंडस्ट्रियल एरिया, फेज- III, टोंक रोड, जयपुर-302022
ई-मेलः jaipur@cipet.gov.in वेबसाइटः www.cipet.gov.in

सिपेटः डिप्लोमा स्तर के पाठ्यक्रमों में शैक्षणिक वर्ष 2025-26 के लिए प्रवेश

AICTE द्वारा स्वीकृत — **रिक्त सीटों हेतु डिप्लोमा पाठ्यक्रम में सीधा प्रवेश** — NBA से मान्यता प्राप्त

• डिप्लोमा इन प्लास्टिक्स मोल्ड टेक्नोलॉजी (डी.पी.एम.टी.) • डिप्लोमा इन प्लास्टिक्स टेक्नोलॉजी (डी.पी.टी.)

क्र.सं.	प्रवेश वर्ष	पाठ्यक्रम की अवधि	प्रवेश योग्यता
1	प्रथम वर्ष	3 वर्ष (2 वर्ष 6 माह शैक्षणिक प्रशिक्षण एवं 6 माह पेड इन्टर्नशिप)	10वीं पास
2	द्वितीय वर्ष (प्रतीक्षा सूची)	2 वर्ष (1 वर्ष 6 माह शैक्षणिक प्रशिक्षण एवं 6 माह पेड इन्टर्नशिप)	Passed 10+2 examination with Physics/ Mathematics / Chemistry/Computer Science/ Electronics/ Information Technology/ Biology/ Informatics Practices/ Biotechnology/ Technical Vocational subject/ Agriculture/ Engineering Graphics/ Business Studies/ Entrepreneurship. Or 10th + 2 year ITI shall be eligible for admission to Second Year Diploma Course(s) in Any branch of Engineering and Technology.

कोई उम्र सीमा नहीं/छात्र एवं छात्राओं के लिए अलग-अलग छात्रावास

प्रथम वर्ष ऑनलाइन आवेदन करें:	https://shorturl.at/eN1lE	
द्वितीय वर्ष ऑनलाइन आवेदन करें:	https://shorturl.at/vx7lz	
आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि	12.07.2025 (प्रथम वर्ष)	31.07.2025 (द्वितीय वर्ष)
मैरिट लिस्ट जारी करने की तिथि	14.07.2025 (प्रथम वर्ष)	01.08.2025 (द्वितीय वर्ष)
फीस जमा करवाने तथा दस्तावेज को प्रमाणित करवाने की अंतिम तिथि	18.07.2025 (प्रथम वर्ष)	08.08.2025 (द्वितीय वर्ष)

उत्कृष्ट प्लेसमेंट रिकॉर्ड — आवेदन शुल्क मात्र रू. 100/-

ऑफलाइन भी आवेदन कर सकते हैं, अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें-
9424330788, 9799004172, 9782491626, 9587021761, 9720212091
Email: ltc-jaipur@cipet.gov.in

‘किसान, युवा, महिला एवं मजदूर के उत्थान में कारगर साबित हो रहा अंत्योदय संबल पखवाड़ा’

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सांगोद में अंत्योदय संबल पखवाड़ा के अंतर्गत शिविर का अवलोकन किया

कोटा में मुख्यमंत्री और लोकसभा अध्यक्ष ने सुपोषित मां अभियान के तहत किट प्रदान किए।

- ‘पंडित दीनदयाल गरीबी मुक्त गांव योजना के माध्यम से ग्रामीण परिवारों को बीपीएल श्रेणी से बाहर निकाला जाएगा’
- अंत्योदय के संकल्प के साथ अंतिम व्यक्ति तक पहुंच रहा योजनाओं का लाभ : लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला

कोटा/जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा के अंतर्गत गांवों में किए जा रहे कार्य विकसित भारत-विकसित राजस्थान का संकल्प साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इसके अंतर्गत प्रदेशभर के गांवों में दिव्यांगों, महिलाओं, बुजुर्गों और वंचितों का उत्थान सरकारी योजनाओं के माध्यम से सुनिश्चित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि शिविरों के माध्यम से वर्षों से लंबित कार्य एक ही स्थान पर किए जा रहे हैं, जिससे ग्रामीणों की राह आसान हो रही है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा सोमवार को कोटा के सांगोद में पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़े के अंतर्गत आयोजित शिविर और सुपोषित मां अभियान के शुभारंभ समारोह को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश में चार जातियां- किसान, युवा, महिला एवं मजदूर बताई हैं। उनकी मंशा के अनुरूप राज्य सरकार ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़े की पहल की है जिसके अंतर्गत 24 जून से 9 जुलाई तक ग्रामीण क्षेत्रों में शिविरों के माध्यम से व्यापक कार्य कर इन वर्गों को लाभान्वित किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति के उत्थान के लिए पंडित दीनदयाल गरीबी मुक्त गांव योजना शुरू की है, जिसके माध्यम से ग्रामीण परिवारों को बीपीएल श्रेणी से बाहर निकाला जाएगा। इसमें पांच हजार गांवों का सर्वे हो चुका है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमने कोटा जिले के विकास के लिए 3 हजार 30 करोड़ रुपये का बजटीय प्रावधान किया है। इस दौरान मुख्यमंत्री ने 26.24 करोड़ रुपए की लागत से परवन नदी पर बने हाईलेवल ब्रिज तथा 45 करोड़ रुपए की लागत से कालीसिंध नदी पर बने उच्च स्तरीय पुल का लोकार्पण किया। साथ ही, समग्र शिक्षा अभियान के अंतर्गत ग्राम कनवास में 41.87 करोड़ रुपए की लागत से निर्मित कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय के नवीन भवन निर्माण कार्य का लोकार्पण भी किया गया। उन्होंने सांगोद में 16.69 करोड़ रुपए की लागत से डलने वाली सीवरेज लाइन और ट्रीटमेंट प्लांट का शिलान्यास भी किया। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने कहा कि अंत्योदय संबल पखवाड़ा केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि उस विचारधारा का सजीव रूप है, जिसमें समाज के सबसे वंचित और जरूरतमंद व्यक्ति के कल्याण का संकल्प निहित है। राज्य सरकार ने इसी सोच के साथ इस पखवाड़े की शुरुआत की है ताकि हर योजना का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाया जा सके। बिरला ने कहा कि हम किसानों को समय पर बिजली, विद्यार्थियों को बेहतर शिक्षा और ग्रामीण क्षेत्रों में 24 घंटे बिजली देने के लिए गंभीरता से काम कर रहे हैं। हर गांव को सड़क, अस्पताल और स्कूल जैसी बुनियादी सुविधाओं से जोड़ने के लिए भी ठोस कदम उठाए जा रहे हैं। बिरला ने सुपोषित मां अभियान का जिक्र करते हुए कहा कि इसमें गर्भवती महिलाओं को नियमित स्वास्थ्य जांच, पोषण आहार और अन्य जरूरी सहायता दी जा रही है। यह अभियान केवल मां और बच्चे के अच्छे स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है, बल्कि एक संस्कारित और स्वस्थ पीढ़ी के निर्माण का प्रयास भी है।

इससे पहले मुख्यमंत्री शर्मा ने कृषि उपज मंडी परिसर में सिंदूर का पौधा लगाकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। उन्होंने अंत्योदय संबल शिविर में विभिन्न विभागों की स्टॉल्स पर आमजन को दी जा रही राहत के बारे में जानकारी ली। मुख्यमंत्री ने शिविर स्थल पर तीन दिव्यांगों को बैटरी चलित साइकिल एवं पांच मेधावी बालिकाओं को स्कूटी भी वितरित की। इस अवसर पर शिक्षा मंत्री मदन दिलावर, ऊर्जा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) हीरालाल नागर, सहकारिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) गौतम कुमार दक, विधायक संदीप शर्मा और कल्पना देवी सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित रहे।

अधेड़ का शव मिला : पावटा के विराटनगर थाना क्षेत्र के तेवड़ी गांव में घाटी के जंगलों में सोमवार शाम को एक अधेड़ का संदिग्ध अवस्था में शव मिला। मृतक की पहचान प्रहलाद (55) पुत्र मूलचंद निवासी गुढ़ा चुरानी थाना के रूप में हुई।

कार्यालय नगरपालिका बिजयनगर जिला-ब्यावर राजस्थान

क्रमांक/न.पा.बि./रोषनी/2025/1485 दिनांक :- 25/06/2025

निविदा सूचना 01 वर्ष 2024-25

नगरपालिका बिजयनगर द्वारा पंजीकृत संवेदको से निर्धारित प्रपत्र में E-Procurement प्रकिया से www.eproc.rajasthan.gov.in पर ऑनलाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं। संवेदक द्वारा निविदा प्रपत्र, निविदा शर्तो व अन्य विस्तृत जानकारी इंटरनेट वेब साईट www.sppp.raj.gov.in और www.eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।

कुल निविदा के कार्य	:	01 कार्य
निविदा की कुल लागत	:	रू 35.49/- लाख
कुल धरोहर राशि	:	........./........./2025 अनुमानित लागत की दो प्रतिशत
ऑन लाईन निविदा फार्म प्राप्त करने व जमा करवाने की दिनांक	:	06/07/2025 प्रातः 11.00 बजे से 15/07/2025 सांय 6.00 बजे तक
निविदा शुल्क डी.डी., धरोहर राशि डी. डी एवं प्रोसेसिंग शुल्क डी.डी. भौतिक रूप से जमा कराने की अंतिम दिनांक	:	16/07/2025 दोपहर 12:00 बजे तक
ऑन लाईन निविदा खोलने की दिनांक	:	17/07/2025 सांय 1:00 बजे

उक्त निविदा का NIB Code :- DLB2526A3220

नोट :-निविदा दाता द्वारा निविदा शुल्क एवं धरोहर राशि अधिशाषी अधिकारी नगरपालिका बिजयनगर के नाम से एवं प्रोसेसिंग शुल्क Managing Director, RISL payable at Jaipur के नाम से एवं ड़िमाण्ड ड्राफ्ट (D.D) निविदा जारी होने कि दिनांक के बाद के होने चाहिए।

अध्यक्ष नगरपालिका बिजयनगर — अधिशाषी अधिकारी नगरपालिका बिजयनगर

राज.संवाद/सी/25/5684

कार्यालय श्री साँवलियाजी मंदिर मण्डल

मण्डफिया, जिला -चित्तौड़गढ़ (राज.)

क्रमांक/लेखा/श्री साम/2025-26/652 दिनांक:-05.07.2025

-:ई-निविदा सूचना संख्या-04/2025-26:-

श्री सांवलियाजी मंदिर मण्डल, मण्डफिया द्वारा निम्नलिखित कार्यो हेतु पंजिकृत व योग्य संवेदको से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेंट प्रक्रिया के माध्यम से ऑनलाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती है। निविदा प्रपत्र, विस्तृत विवरण व अन्य शर्ते www.eproc.rajasthan.gov.in तथा www.sppp.raj.nic.in पोर्टल पर दिनांक 07/07/2025 को प्रातः 09:00 बजे से उपलब्ध होकर दिनांक 16/07/2025 सायं 06:00 बजे तक ऑनलाईन जमा किये जा सकते है जिनकी तकनीकी निविदाएं दिनांक 17/07/2025 को दोपहर 12:00 बजे ऑनलाईन खोली जावेगी। निविदा संबंधी शुल्क व राशियां प्रपत्र अंकित बैंक खाते में जमा करवानी होगी।

क्र.	कार्यो का विवरण	अनुमानित राशि (लाखों में)	UBN No
1.	Maintenance & Repair work of various road of S.S.M.M. Mandfiya	50.00	SMM2526WLOB 00004
2.	Levelling Dressing & Formation Base of various Parking at S.S.M.M. Mandfiya	155.46	SMM2526WLOB 00005
3.	श्री सांवलियाजी मंदिर मण्डल के पार्किंग स्थलों का निर्धारित स्थलों का निर्धारित शुल्क पर संचालन व रख-रखाव कार्य	100.00	SMM2526SLOB 00006

मुख्य कार्यपालक अधिकारी
श्री सांवलियाजी मंदिर मण्डल

ट्रक ने सड़क किनारे खड़ी गाड़ी को टक्कर मारी, दो युवकों की मौत

- केंट्रा गाड़ी में सब्जी लेकर जयपुर जा रहे थे दोनों युवक
- केंट्रा गाड़ी का टायर पंक्चर होने पर सड़क के किनारे गाड़ी खड़ी कर अन्य वाहन का इंतजार कर रहे थे

नदबई, (निसं)। आगरा-जयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर लुलहारा के समीप रविवार तड़के करीब दो बजे, ट्रक ने असंतुलित होकर सड़क किनारे खड़ी केंट्रा गाड़ी में टक्कर मार दी। हादसे के दौरान टक्कर इतनी जबर्दस्त हुई कि, केंट्रा सवार एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि, एक अन्य युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। हादसे की सूचना पर डहरामोड़ चौकी पुलिस ने मौके पर पहुंचकर घायल युवक को जिला चिकित्सालय में भर्ती कराया, जहां उपचार दौरान घायल युवक की भी मौत हो गई। पुलिस ने दोनों शव का पोस्टमार्टम कराया।

पुलिस सूत्रों की मानें तो यूपी किरावली थाना क्षेत्र के गांव कुर्रा नगला निवासी विष्णु शर्मा पुत्र बनवारीलाल शर्मा, अपने साथी महुअर निवासी राजन लोधा राजपूत पुत्र गुलाब लोधा राजपूत के साथ केंट्रा गाड़ी में सब्जी लेकर जयपुर जा रहा था। इसी दौरान लुलहारा के समीप केंट्रा गाड़ी का टायर पंक्चर हो गया। सड़क के किनारे गाड़ी खड़ी कर, दोनों अन्य वाहन का इंतजार कर रहे थे। इसी दौरान ट्रक ने असंतुलित होकर सड़क किनारे खड़ी केंट्रा गाड़ी में टक्कर मार दी, जिसके चलते विष्णु शर्मा की मौके पर मौत हो गई, जबकि, राजन लोधा राजपूत गंभीर रूप से घायल हो गया। पुलिस ने घायल युवक को भरतपुर चिकित्सालय में भर्ती कराया। जहां, उपचार दौरान घायल राजन लोधा की भी मौत हो गई। बाद में पुलिस ने भरतपुर चिकित्सालय में दोनों शव का पोस्टमार्टम कराया। हादसे के बाद ट्रक चालक व परिचालक फरार हो गए।

युवक ने आत्महत्या की

उदयपुर, (निसं)। सायरा थाना क्षेत्र में युवक ने कुएं में कूदकर आत्महत्या कर ली। जानकारी के अनुसार बलाना थाना खमनोर राजसमन्द निवासी खेमराज (30) पुत्र डालू गमेती ने सायरा थाना क्षेत्र भानपुरा गांव में स्थित कुएं में कूदकर आत्महत्या कर ली। खेमराज की तबीयत खराब होने से गत दिनों वह घर से पिपाणा माताजी मंदिर जाने के लिए निकला था। वापस घर नहीं पहुंचने पर 30 जून को खमनोर पुलिस थाने में पत्नी मांगीबाई ने एमपीआर दर्ज करवाई थी। चार जुलाई को सायरा थाना क्षेत्र भानपुरा गांव में स्थित कुएं में अज्ञात युवक की लाश मिली थी। इसका पता चलने पर थानाधिकारी राजेन्द्रसिंह ने मौके पर पहुंच कर मृतक को बाहर निकाल शिनाख्तगी नहीं होने पर एमबी चिकित्सालय मोर्चरी में रखवाया था, जिसका सात जुलाई को उसकी पत्नी मांगीबाई व परिजनों ने मृतक की खेमराज के रूप में शिनाख्त की थी। सूचना मिलने पर सायरा पुलिस थाने के हेडकांस्टेबल सुखाराम ने मृतक का पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंप दिया।

सड़क हादसे में दो भाइयों की मौत

टोंक, (निसं)। मेहंदवास थाना क्षेत्र से गुजर रहे नेशनल हाइवे-52 पर महुआ कट के पास सोमवार को अज्ञात वाहन की टक्कर से महुआ निवासी दो चचेरे भाइयों की घटना स्थल पर मौत हो गई। दोनों भाई खेत से वापस पैदल गांव लौट रहे थे, इसी दौरान रोड क्रॉस करते समय तेज रफ्तार अज्ञात वाहन ने दोनों को टक्कर मार दी, इसके बाद चालक गाड़ी को भगाकर ले गया। मौके पर आये ग्रामीणों ने जाम लगाकर पुलिस को सूचना दी, जहां मौके पर मेहंदवास थाना प्रभारी ओमप्रकाश जाप्ते के साथ पहुंचे और समझाइश कर जाम खुलवाया। इसके बाद पुलिस ने शवों को सआदत अस्पताल में ले जाकर पोस्टमार्टम करवा कर परिजनों को सुपुर्द किया।

महुआ निवासी युवक दीपक भील और सोदान भील जो सोमवार सुबह पैदल ही खेत से गांव लौट रहे थे, तभी रास्ते में जयपुर-कोटा नेशनल हाइवे पर महुआ कट के पास अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। इससे दोनों की मौके पर मौत हो गई। ग्रामीणों के अनुसार दीपक की 2 माह पहले ही शादी हुई थी, उधर गांव में शव पहुंचते ही परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल हो गया।

सड़क हादसे में पिता की मौत, पुत्र घायल

उदयपुर, (निसं)। नाई थाना क्षेत्र में हुए सड़क हादसे में पिता की मौत हो गई तथा पुत्र घायल हो गया। जिसे उपचार के लिए चिकित्सालय में भर्ती कराया है।

पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार रविवार शाम बलीचा से झाड़ोल मार्ग नांदेश्वर रोड के समीप कार ने बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में बाइक चालक वालूराम (29) पुत्र थावरचंद खोखरिया निवासी मासिंगपुरा वाघपुरा तथा उसका पुत्र वीरा (7) गंभीर घायल हो गए, जिन्हें उपचार के लिए एमबी चिकित्सालय में भर्ती करवाया, जहां वालूराम की मौत हो गई। सूचना मिलने पर नाई पुलिस थाने के हेड कांस्टेबल ललित नागदा ने मृतक का पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंप दिया। 6 जुलाई शाम वालूराम बाइक पर अपने पुत्र को लेकर वलिचा से गांव लौट रहा था, जहां बीच रास्ते घटना स्थल पर सामने से आ रही कार ने बाइक को टक्कर मार दी थी।

कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता, जन स्वा. अभि. विभाग, वृत कोटपूतली-बहरोड

क्रमांक-अ.अ./जन स्वा/कोट-बह/2025-26/858 दिनांक-23.06.2025

ई-निविदा सूचना संख्या-17/2025-26

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की और से जन स्वा0 अभिः विभाग मे पजींकृत सर्वेदको एवं राज्य सरकार / केन्द्र सरकार के अधिकृत सगंठनो / केन्द्रीय लोक निमार्ण विभाग / डाक एवं दूर संचार विभाग / रेलवे इत्यादि मे पजीकृत सर्वेदको जो कि राजस्थान सरकार के सक्षम श्रेणी के संवेदको के समकक्ष हो से निर्धारित प्रपत्र मे ई-प्रोक्यूरमेट प्रकिया के तहत ऑन लाइन निविदाएँ आमत्रिंत की जाती है।

निविदा फार्म आनें लाइन वेबसाइट http://www.eproc.rajasthan.gov.in निर्धारित अवधि में प्रातः 900 बजे से सांय 6.00 बजे तक डाउनलोड किये जा सकते है। ऑन लाइन निविदाएं इसी वेबसाईट http://www.eproc.rajasthan.gov.in पर इच्छुक संवेदको द्वारा निम्न विवरणानुसार निर्धारित अवधि में सांय 5.00 बजे तक जमा कराये जा सकते है। वेबसाईट पर तकनिकी बिड निर्धारित तिथि को प्रातः 11:00 बजे खोली जावेगी। यदि किसी कारणवश उस दिन अवकाश रहता है तो उसके अगले कार्य दिवस को उसी समय पर तकनीकी बिड खोली जावेगी।

निविदा शुल्क / धरोहर राशि निविदादाता ऑनलाईन चालान द्वारा जो कि अधिशाषी अभियन्ता, जन स्वा0 अभि विभाग खण्ड, बानसूर के नाम देय होगी। तथा प्रक्रिया शुल्क मेनेजिंग डायरेक्टर आरएसआईएल जयपुर के नाम देय होगी। इस कार्यालय में निम्न विवरण में अंकित दिनांक 20.05.2025 प्रातः 11.00 बजे तक आनलाईन चालान के माध्यम से जमा करवाना आवश्यक है। इच्छुक सवेदको को अपने digital Signature certificate (DSC) के माध्यम से वेबसाइट http://www.eproc.rajasthan.gov.in पर फर्म को रजिस्टर्ड करवाना आवश्यक है।

निविदा की कुल लागत लाखो में	172.50 लाख (01 कार्य)
कुल धरोहर राशि लाखो मे	3.45 लाख (01 कार्य)
निविदा शुल्क की कुल राशि	0:05 लाख
निविदा डाउनलोड करने की अतिम तिथि	23.06.25 से 14.07.25 सांय 6:00 बजे तक
निविदा अपलोड करने की अतिम तिथि	23.06.25 से 14.07.25 सांय 600 बजे तक
निविदा तकनीकी बिड खोलने की तिथि व समय	15.07.2025 को प्रातः 11:00 बजे
17/2025-26 PHE2526WSOB04019 UBN No.	NIB NO PHE2526A1944

(रामनिवास यादव)
अधीक्षण अभियन्ता
जन स्वा अभि. विभाग वृत कोटपूतली

DIPR/C/8995/2025

करौली में मूसलाधार बारिश, पांचना बांध के गेट खोलने की तैयारी

- ‘निर्धारित गेज 258.62 के स्थान पर 257.90 मीटर तक पानी पहुंचने के बाद पांचना बांध से पानी की निकासी शुरू कर दी जाएगी’
- बरखेड़ा नदी में नहाने गए एक युवक की डूबने से मौत हो गई, एसडीआरएफ एवं सिविल डिफेंस की टीम ने शव को पानी से बाहर निकाला

करौली, (निसं.)। जिला मुख्यालय पर बीती रात आई मूसलाधार बारिश से शहर पानी से तरबतर हो गया। कई जगह पानी भराव के कारण लोगों का आवागमन ठप हो गया तो वहीं पांचना बांध के गेट खोलने की पूरी तैयारी कर ली गई है।

करौली जिला मुख्यालय पर बीते दो दिन से तेज गर्मी और उमस से लोगों का बुरा हाल था, लेकिन रविवार की रात बारह बजे के बाद एक साथ आई मूसलाधार बारिश से शहर पानी से तरबतर हो गया और प्रातः तक पानी की निकासी नहीं हो पाई। वजीरपुर गेट से कलेक्ट्रेट सर्किल को जाने वाला मार्ग, पावर हाउस रोड एवं केशवपुरा पुलिया से होली खिड़किया जाने वाला सड़क मार्ग पूरी तरह से अवरुद्ध हो गया इस दौरान प्रातः के समय स्कूल जाने वाले विद्यार्थियों, मदन मोहन जी मंदिर जाने वाले श्रद्धालुओं सहित प्रातः के समय दूध की सप्लाई करने वाले दूधिया लोगों को खासी परेशानी उठानी पड़ी और पानी में से होकर निकलना पड़ा। इस दौरान कई मोटरसाइकिलें पानी में बंद हो जाने के कारण लोग परेशान रहे। करौली शहर के सायनाथ खिड़कियां बाहर स्थित वीर हनुमान मंदिर पर अखंड रामायण का पाठ चल रहा है। एक साथ आई बारिश से मेडकी का पानी मंदिर परिसर में घुस गया और मंदिर के अंदर तक पानी पहुंचने के कारण रामायण का पाठ कर रहे भक्तों को खड़े रहकर रामायण का पाठ जारी रखना पड़ा।

करौली शहर की भद्रावती और बरखेड़ा नदी में जबरदस्त पानी की आवक होने के कारण पांचना बांध में भी पानी की आवक बढ़ गई और लगातार बढ़ती आवक को देखते हुए जल संसाधन विभाग के अधिकारी भी सतर्क और मुस्तेद नजर आए। बांध की भराव क्षमता को देखते हुए अधिकारियों ने पंचना बांध से गेट खोलकर पानी की निकासी की तैयारी शुरू कर दी है।

विभाग के अधिशाषी अभियंता सुशील गुप्ता, एईएन वीर सिंह जाटव, जेईएन भवानी सिंह ने बताया कि लगातार पानी की आवक बनी हुई है। निर्धारित गेज 258.62 के स्थान पर 257.90 मीटर तक पानी पहुंचने के बाद पांचना बांध से पानी की निकासी शुरू कर दी जाएगी। इससे पूर्व गंभीर नदी क्षेत्र के लोगों को भी सचेत और अलर्ट कर दिया गया है कि वह लोग स्वयं एवं अपने पशुओं को नदी क्षेत्र में नहीं आने दें।

नदियों में बढ़ रही पानी की आवक को देखते हुए बरखेड़ा नदी में नहाने गए एक युवक की डूबने से मौत हो गई। घटना की जानकारी मिलने के बाद तहसीलदार, पटवारी और एसडीआरएफ एवं सिविल डिफेंस की टीम मौके पर पहुंची और चार घंटे रेस्क्यू के बाद मृतक के शव को पानी से बाहर निकाला। मृतक की पहचान रामबाबू (45) पुत्र रामजी लाल माली निवासी पांचना कॉलोनी करौली के रूप में हुई है।

एटीएम कार्ड बदल राशि निकाली

नदबई, (निसं)। नदबई में दिनदहाड़े अज्ञात बदमाशों ने एक महिला को चकमा देते हुए एटीएम कार्ड बदला, बाद में महिला के बैंक खाते से करीब 62 हजार की नगदी पार कर फरार हो गए। पीड़ित महिला की सूचना पर पुलिस ने जांच करते हुए अज्ञात बदमाशों का सुराग लगाने का प्रयास किया। लेकिन, सफलता नहीं मिल सकी। विभागीय सूत्रों की मानें तो गांव न्योंठा निवासी शीला देवी, अपने एटीएम कॉर्ड से राशि निकालने के लिए, रेलवे फाटक समीप बड़ौदा बैंक के एटीएम पर गई। इसी दौरान दो अज्ञात बदमाशों ने झांसा देते हुए पहले, एटीएम कार्ड बदला। बाद में पीड़िता के बैंक खाते से 62 हजार की नगदी निकालते हुए मौके से फरार हो गए। मोबाइल पर राशि निकलने का मैसेज आने पर पीड़ित महिला को घटना के बारे में पता चला।

कार्यालय अधिशाषी अभियंता, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, खण्ड-भीनमाल

Tel : 02969-220120, Email : cebhi.jal.phed@rajasthan.gov.in

क्रमांक :- भीनमाल/निविदा/त.स./2025-26/929-939 दिनांक : 25.6.2025

बिड आमंत्रण सूचना (NIB) संख्या 04-08/2025-26

राजस्थान के राज्यपाल की ओर से निम्नलिखित कार्यों हेतु लोक निर्माण और वित्तीय नियम के पार्ट-4 नियम 334(ए) (iii) के तहत रु. 150.00 लाख तक की निविदाओं हेतु केवल जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग में पंजीकृत एवं इससे अधिक लागत की निविदाओं हेतु जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग में पंजीकृत निविदादाताओं हेतु नियमानुसार छूट के साथ एवं केन्द्र/राज्य सरकार के अधिकृत विभागों/संगठनों, केंद्रीय लोक निर्माण विभाग, रेल, डाक, जार संचार विभागों में उपयुक्त समकक्ष श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों से पूर्ण धरोहर राशि के साथ ई-टेंडरिंग प्रक्रिया द्वारा निम्न ऑनलाईन बिड आमंत्रित की जाती है :-

बिड संख्या	NIB No. PHE2526A1980	अनुमानित लागत (लाखों में)	धरोहर राशि 2%	बिड शुल्क (रुपये)	ई-प्रक्रिया शुल्क	कार्य पूर्ण करने की अवधि
04/2025-26	UBIN No....... PHE2526WSOBO4078	27.76	55520/-	1000/-	500/-	02 Month
05/2025-26	PHE2526WSOBO4079	13.08	26160/-	1000/-	500/-	02 Month
06/2025-26	PHE2526WSOBO4081	27.39	54780/-	1000/-	500/-	02 Month
07/2025-26	PHE2526WSOBO4082	13.91	27820/-	1000/-	500/-	02 Month
08/2025-26	PHE2526WSOBO4083	11.85	23700/-	1000/-	500/-	02 Month

ऑनलाईन बिड उपलब्ध होने की तिथि	27.06.025
ऑनलाईन बिड डाउनलोड/अपलोड करने की अंतिम तिथि	10.07.2025 को 2.00 पी.एम.
ऑनलाईन बिड खोलने की तिथि	11.07.2025 को 6.00 पी.एम.

बिड से संबंधित समस्त विवरण वेबसाईट www.dipronline.org, sppp.raj.nic.in व www.eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।

अधिशाषी अभियंता
जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग,
खंड भीनमाल

DIPR/C/8994/2025

RAJASTHAN SAMWAD

Department of Information and Public Relations, Government Secretariat, Jaipur-302005
(Telephone No. 0141- 2227325, E-mail id :- dipr.rajasthan@gmail.com, rajasthansamwad2002@gmail.com)

NOTICE INVITING BIDS

NIB No. 51 Date : 07/07/2025

Bids for **Providing Courier Services for Delivering Printed Materials etc. at Various Places in Rajasthan & Outside** are invited from interested bidders up to 05:00 PM Dated 18/07/2025. The approximate value of the procurement is **Rs. 40 Lakh.** Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal **(http://sppp.raj.nic.in)** of the state; and **https://dipr.rajasthan.gov.in.**

UBN : IPR2526SLRC00010

Raj.Samwad/C/25/5695 Managing Director

1.2 Abridged NIB 04/2025-26

SE CUM PROJECT MANAGER, WATERSHED CELL CUM DATA CENTRE, ZILA PARISHAD SAWAI MADHOPUR

File no./765 Date:-25.06.2025

NOTICE INVITING BID

NIB No 13,14/YEAR 2025-26

Bids for (02 packages) construction of various Kachcha and Pukka works under PMKSY 2.0 in Sawai Madhopur district of estimated value INR 290.28 LACs (263.20+27.08) are invited from interested bidders up to 6:00 PM DATE 09.07.2025 Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (https://eproc.rajasthan.gov.in or https://sppp.rajasthan.gov.in/) of the state, and departmental website WWW.WATERSHED.RAJASTHAN.GOV.IN.

NIB Code-WSC2526A0378
UBN NO-WSC2526WSOB00628
UBN NO- WSC2526WSOB00629

SE CUM PROJECT MANAGER
WATERSHED SELL CUM DATA
CENTRE ZILA PARISHAD SAWAI
MADHOPUR

DIPR/C/9215/2025

ERCP Eastern Rajasthan Canal Project Corporation Limited

Sinchai Bhawan, JLN Marg, Jaipur 302017 Tel: 0141-2709667 Email: ceercpc@gmail.com

No. :- 1813 Date :- 02/07/2025

NIB No. - ERCPCL/17/2025-26

On behalf of the Governor of Rajasthan, bid for "Rate contract Services of 07 Autocad Operator for ERCPCL offices at ERCPCL PMU Jaipur & ERCPCL SPIU Tonk, Bundi, Baran-I, Baran-II, Kota-I, Kota-II for the Year 2025-26" are invited from interested bidders up to 01.00 PM 14.07.2025. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal **(https://sppp.rajasthan.gov.in/sppp** of the state. The approximate value of the procurement is Rs 22.00 Lacs.

NIB Code : ERP2526A0021, UBN No. : ERP2526SLRC00023

Raj.Samwad/C/25/5634 MD cum Chief Engineer

LIVESTOCK RESEARCH STATION KODAMDESAR

RAJASTHAN UNIVERSITY OF VETERINARY & ANIMAL SCIENCES, BIKANER

No. :- F ( )LRS/Kodemdesar/2025-26/36 Dated :- 04/07/2025

खुली निविदा सूचना (01/2025-26)

पशुधन अनुसंधान केन्द्र, कोडमदेसर में स्थित गायों का केवल शाम के समय का दूध विक्रय हेतु दैनिक राशि जमा कराकर अवधि 01.08.2025 से 31.07.2026 तक के लिए मुहरबन्द निविदाएं आमंत्रित की जाती है। निविदा प्रपत्र कार्यालय पशुधन अनुसंधान केन्द्र, कोडमदेसर बीकानेर से 1000 रूपये जमा कराकर खरीदा जा सकता है। निविदा फार्म दिनांक 17.07.2025 को दोपहर 1:00 बजे तक रूपये 50,000 धरोहर राशि बैंकर चैक/डी.डी के साथ जमा कराया जा सकता है। प्राप्त निविदाएं दिनांक 17.07.2025 को दोपहर 3:00 बजे उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष खोली जावेगी। शेष नियम एवं शर्ते कार्यालय समय में प्राप्त की जा सकती है। UBN : VAU2526GLOB00049, NIB : VAU2526A0049

राज.संवाद/सी/25/5645 प्रभारी अधिकारी

परीक्षा नियंत्रक कार्यालय
स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर

क्रमांक :- स्केराकृविवि/परीक्षा/ग्रुप.4/2025/5185-87 दिनांक :- 03/07/2025

खुली निविदा सूचना 01/2025

स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर के परीक्षा नियंत्रक कार्यालय द्वारा कम्प्यूटर कार्य हेतू उच्च कुशल श्रमिक की आवश्यकता हेतू मोहरबन्द निविदाऐं आमंत्रित की जाती है। निविदा प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि दिनांक 15.07.2025 को 2.00 बजे तक हैं। निविदा का पूर्ण विवरण एवं शर्तें विश्वविद्यालय की वेबसाईट www.raubikaner.org व www.sppp.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध है।

NIB Code : SKA2526A0024
UBN No. : SKA2526SSRC00041

राज.संवाद/सी/25/5642 परीक्षा नियंत्रक

कांग्रेस के बागी नेता देवेन्द्र मीणा के यहां आयकर का छापा

- उदयपुर स्थित आवास एवं मुंबई में स्थित एक व्यवसायिक संस्थान पर छापा मारा

उदयपुर, (कासं)। आयकर विभाग की टीम ने सोमवार को उदयपुर के कांग्रेस नेता देवेन्द्र मीणा के उदयपुर स्थित आवास एवं मुंबई में स्थित एक व्यवसायिक संस्थान पर छापा मारा है।

आयकर विभाग की टीम ने सोमवार को कांग्रेस नेता देवेन्द्र कुमार मीणा के उदयपुर के सेक्टर-13 स्थित आवास पर कार्रवाई के साथ ही उनके मुबई स्थित एक प्रतिष्ठान पर भी कार्रवाई की है। हालांकि विभाग ने अभी तक खुलासा नहीं किया है कि कार्रवाई में की कुछ मिला है। विभाग की टीम कहां से आई है और किस अधिकारी के निर्देशन में कार्रवाई चल रही है अभी पता नहीं चला है। टीम के साथ स्थानीय पुलिस कुछ जवान भी तैनात है। विभाग की कार्रवाई जारी है। उल्लेखनीय है कांग्रेस नेता देवेन्द्र मीणा उस समय चर्चा में आये थे जब उन्होंने 2013 के विधानसभा चुनाव में उदयपुर ग्रामीण सीट पर कांग्रेस की अधिकृत उम्मीदवार सज्जन कटारा के विरुद्ध ताल ठोकते हुए बागी के रूप में चुनाव लड़ा था और कांग्रेस को पराजय का मुंह देखना पड़ा था।

रेगिस्तान में सेना का शक्ति प्रदर्शन

जैसलमेर, (नि.सं.)। राजस्थान से लगती भारत-पाकिस्तान सीमा पर भारतीय सेना अपना दमखम दिखाकर तकनीक के साथ अभ्यास कर रही है। जैसलमेर से लगती पाकिस्तानी सीमा के अथाह रेगिस्तान में चल रहे भारतीय सेना के अभ्यास में जवान एडवांस्ड बैटल ड्रिल्स, सटीक निशाने और बेमिसाल गतिशीलता के साथ कौशल का प्रदर्शन कर रहे हैं। इस अभ्यास में सेना ड्रोन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और सैटेलाइट टेक्नोलॉजी जैसी मॉडर्न तकनीकों का इस्तेमाल कर रही है। सीमाओं पर हर गतिविधि पर बारीकी से नजर रखी जा रही है और दुश्मन की हर साजिश को पल भर में नाकाम किया जा रहा है।

कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता जन स्वा. अभि. विभाग, वृत्त धौलपुर

E-mail ID: se.dho.phed@rajasthan.gov.in

क्रमांकः- 935-40 दिनांकः- 27-06-2025

ई-निविदा सूचना 01-02/2025-26

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से पी.डब्लू.एफ.एण्ड.ए.आर. पार्टना अपेण्डिक्स 16 दिनांक 1.7.99 से लागू एवं समय समय पर वित्त विभाग द्वारा जारी संशोधित परिपत्रो (आज तक) के अनुरूप विभाग में उपर्युक्त श्रेणी में पंजीकृत एवं जो निविदा प्रपत्रो में वांछित योग्यता रखते हों से निम्न कार्य हेतु ई-टेण्डरिंग के द्वारा निविदाये आमंत्रित की जाती है। यह निविदा सूचना www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है तथा निविदा प्रपत्र https://eproc.rajasthan.gov.in से डाउनलोड व अपलोड किये जा सकते है।

NIT No.	Name of Work	Estt. Cost (Rs.in lacs)	Tender Fees in Rs.	EMD in Rs. 2%	EMD in Rs. ½%	Last date and time in Bid downloa-ding & Submission	Bid opening date & time	Completion period A2014	NIB No. PHE2526
01/ 2025-26	Annual Rate Contract for providing House-hold Service Connections (HSCs) including one Year Defect Liability Period under the Jurisdiction of Division Bari	120.00	2000/-	240000	60000	upto 21.7.25 60.00 PM	22.7.25 11.00 AM	12 months	UBN is: PHE2526 WSRC 04127
02/ 2025-26	Annual Rate Contract for providing Household Service Connections (HSCs) including one Year Defect Liability Period under the Jurisdiction of Division Dholpur	100.00	2000/-	200000	50000	upto 21.7.25 60.00 PM	22.7.25 11.00 AM	12 months	UBN is: PHE2526 WSRC 04128

NOTE :-
1. Tenders shall be procured and submitted only in electronic format only website http//eproc.rajasthan.gov.in
2. Bidder who intended to participate in bidding will have to procure digital certificate as per IT Act to sign their electronic bids others which are not digitally signed will not be accepted Bidder shall submit their offer in electronic format on above mentioned website after digitally signing the same.
3. If holiday is declared on the date(s) of submission & opening of tender the scheduled activity will take place on the next working day.

(राजकिरण यादव)
अधीक्षण अभियन्ता
जन स्वास्थ्य अभियान्त्रिकी विभाग वृत्त धौलपुर

DIPR/C/9108/2025

अवैध हथियार सप्लायर गन हाउस संचालक गिरफ्तार

एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स और प्रतापगढ़ पुलिस का बड़ा खुलासा

जयपुर । राजस्थान पुलिस की एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स और प्रतापगढ़ जिले की छोटी सादड़ी थाना पुलिस ने अवैध हथियार तस्करी के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान में बड़ी सफलता हासिल की है। संयुक्त कार्रवाई में कुख्यात अपराधी सलमान को कारतूस और हथियार उपलब्ध कराने वाले गन हाउस संचालक रमाशंकर को उत्तर प्रदेश के एटा से गिरफ्तार किया गया है।

अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स दिनेश एमएन के निर्देशन और उपमहानिरीक्षक पुलिस योगेश यादव के सुपरविजन में महानिदेशक पुलिस द्वारा अवैध हथियार तस्करी के विरूद्व चलाये जा रहे अभियान के तहत एजीटीएफ और प्रतापगढ़ जिले की छोटी सादड़ी थाना पुलिस ने संयुक्त रूप से यह कार्रवाई की है।

एडीजी एमएन ने बताया कि यह ऑपरेशन 28 जून 2025 को शुरू हुआ, जब छोटी सादड़ी थानाधिकारी प्रवीण टांक द्वारा राकेश राठौर पुत्र कचरू लाल निवासी मालपुरा बाजार थाना गंगधार जिला झालावाड़ नाम के व्यक्ति को एक ऑटोमेटिक देशी पिस्टल, दो खाली मैगजीन के साथ गिरफ्तार किया गया था। राकेश अवैध हथियार सप्लाई चेन

पुलिस की एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स और प्रतापगढ़ जिले की छोटी सादड़ी थाना पुलिस ने कार्रवाई कर आरोपी को गिरफ्तारकिय।

का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था और उसकी गिरफ्तारी इस कार्रवाई की अहम कड़ी साबित हुई।

राकेश से मिली सूचना के आधार पर एजीटीएफ और छोटी सादड़ी थाना पुलिस ने अपराध जगत के बड़े नाम सलमान पुत्र शेरखान निवासी नागदा को गिरफ्तार कर उसकी निशानदेही पर 14 देशी और विदेशी हथियार और 1860 जिंदा कारतूस बरामद किए। सलमान से एजीटीएफ और थाना पुलिस की टीम इस नेटवर्क से जुड़े अन्य लोगों के बारे में लगातार पूछताछ कर रही थी।

इतनी भारी मात्रा में हथियार और कारतूस मिलने पर इन हथियारों की सप्लाई करने वाले अन्य अभियुक्तों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस टीम का गठन किया गया। एडीजी एमएन के निर्देशन और प्रतापगढ़ एसपी विनीत कुमार बंसल के समन्वय में एजीटीएफ और छोटी सादड़ी थाना पुलिस की टीम द्वारा 7 जुलाई 2025 को राकेश व सलमान को कारतूस व हथियार सप्लाई करने वाले गन हाउस संचालक अभियुक्त रमाशंकर पुत्र दरबारीलाल लोधी राजपूत (59) निवासी रानी अवन्तिबाई नगर शिकोहाबाद रोड एटा (उत्तरप्रदेश) को एटा से हिरासत में लेकर गिरफ्तार किया

- **यूपी के एटा से पकड़ा गया कुख्यात रमाशंकर, अपराध जगत को हथियार देने का था मास्टरमाइंड**

गया। जांच में सामने आया है कि रमाशंकर काफी समय से अपनी लाइसेंसी दुकान की आड़ में मोटा मुनाफा कमाकर अपराधियों को कारतूस और हथियार उपलब्ध करा रहा था।

पुलिस आरोपी से गहनता से पूछताछ कर आगे की रणनीति तैयार कर रही है। इस कार्रवाई में एजीटीएफ के कांस्टेबल ड्राइवर सुरेश की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस अभियान में शामिल पुलिस टीमों के सभी सदस्य, जिन्होंने मिलकर इस बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया, वे हैं: एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स जयपुर से पुलिस निरीक्षक सुभाष सिंह, एएसआई शंकर दयाल शर्मा, हेड कांस्टेबल कमल सिंह, सुरेश कुमार, कांस्टेबल नरेश और कांस्टेबल चालक सुरेश तथा थाना छोटी सादड़ी से एसएचओ प्रवीण टांक, एसआई निर्भय सिंह, एएसआई शिवराम, हैड कांस्टेबल मगनलाल और कांस्टेबल रामराज।

भारतीय जीवन बीमा निगम ने नई योजनाएं शुरू की

जयपुर। भारतीय जीवन बीमा निगम के सीईओ और एमडी (प्रभारी) सतपाल भानु ने को नई योजनाएं शुरू कीं एलआईसी की नव जीवनऔर एलआईसी की नव जीवन सिंगल प्रीमियम। शुरू की गई दो नई योजनाएं बचत और सुरक्षा का संयोजन है और इन्हें विशेष रूप से हमारे जीवन चक्र भी विभिन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त धनरानि जुटाने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

एलआईसी की नव जीवन थी (योजना 912) का उद्देश्य व्यक्तियों, विशेषकर युवा पीती की सभी जरूरतों को पूरा करना है, जो अगने सपनों, लक्ष्यों, जिम्मेदारियों को पूरा करना चाहते हैं और साथ ही सुरक्षा भी प्रदान करना है। एलआईसी की नव जीवन थी (योजना 911) सिंगल प्रीमियम पॉलिसी का उद्देश्य जीवन बीमा प्रदान करने के साथ-साथ कोप (कॉर्पस) का निर्माण करना है। वर्तमान परिवेश में जब व्याज दरें बहुत अस्थिर हैं, ये दोनों प्लान पॉलिगी अवधि के दौरान गारंटीड एडिशन प्रदान करते. हैं। यह एक सीमित प्रीमियम एंडोमेंट योजना है जो टेबुलर प्रीमियम के प्रतिशत के रूप में गारंटीड एडिशन प्रदान करता है। प्रीमियम का भुगतान 6, 8, 10 और 12 वर्षों के हिसाब से किया जा सकता है। प्रवेश के समय न्यूनतम आयु 30 दिन (पूरी) है। प्रवेश के समय अधिकतम आयु 60 वर्ष (निकटतम जन्मदिन) है, जो कि पीपीटी 6.8 और 10 वर्ष के लिए है, तथा पीपीटी 12 वर्ष के लिए 59 वर्ष (निकटतम जन्मदिन) है। चुने गए पीपीटी के अनुसार न्यूनतम पॉलिसी अवधि 10 से 16 वर्ष है, अधिकतम पॉलिसी अवधि 20 वर्ष है, प्रीमियम भुगतान अवधि 6,8,10 और 12 वर्ण है, न्यूनतम मूल बीमा राशि 5,00,000 रुपये है।

राजस्थान यूनिवर्सिटी में छात्रसंघ चुनाव बहाल करने को लेकर एनएसयूआई ने रैली निकाली और कुलगुरु को ज्ञापन दिया।

कांग्रेसी पार्षदों ने ज्ञापन सौंपा

कोटा, (निसं)। कोटा में कांग्रेसी वार्डों में विकास में भेदभाव का आरोप लगाते हुए कांग्रेस के पार्षदों ने आंदोलन शुरू कर दिया है। कोटा दक्षिण निगम के उपमहापौर पवन मीणा की अगुवाई में पार्षद करीब डेढ़ किमी तक दंडवत करते हुए नगर निगम से एसी के गणेश मंदिर तक पहुंचे।

पतंजलि ने 'दन्त कांति गंडूष ऑयल पुलिंग' लॉन्च किया

राष्ट्रीय/ हरिद्वार। पतंजलि ने आज एक महत्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त करते हुए दन्त कांति गंडूष ऑयल पुलिंग नामक उत्पाद लांच किया। यह उत्पाद आयुर्वेद ग्रंथों में उल्लेखित गंडूष विधि पर आधारित है। आयुर्वेद में इसे 'दिनचर्या' का अभिन्न हिस्सा माना गया है।

दन्त कांति गंडूष ऑयल पुलिंग का भव्य अनावरण परम पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज और परम् श्रद्धेय आचार्य बालकृष्ण जी महाराज एवं इंडियन डेंटल एसोसिएशन,उत्तराखंड शाखा के अध्यक्ष डॉ. राजीव बंसल,सचिव डॉ. विश्वजीत वालिया,कोषाध्यक्ष डॉ. वैभव पाहवा के कर-कमलों द्वारा किया गया।

इस अवसर पर योगऋषि स्वामी रामदेव जी ने कहा पतंजलि का यह प्रयास योग और आयुर्वेद के क्षेत्र में एक नया कीर्तिमान है। पतंजलि केवल उपचार नहीं,अपितु संस्कृति,परंपरा और विज्ञान का सामंजस्य विश्व के सामने प्रस्तुत कर रहा है। उन्होंने कहा कि

पतंजलि ने एक महत्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त करते हुए दन्त कांति गंडूष ऑयल पुलिंग नामक उत्पाद लांच किया।

आजकल लोग यह भूल गए हैं कि अपने शरीर को कैसे करना है और उसके साथकैसे करना है। पतंजलि योग और आयुर्वेद के माध्यम से इसको जनमानस को सिखाने का कार्य कर रहा है।

इस अवसर पर आचार्य बालकृष्ण ने कहा की यह उत्पाद हमारे पतंजलि अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों की तीन वर्षों के अथक पुरुषार्थ और समर्पण का परिणाम है

इस अवसर पर इंडियन डेंटल एसोसिएशन,उत्तराखंड शाखा के सचिव डॉ. विश्वजीत वालिया ने कहा कि पूज्य स्वामी जी व श्रद्धेय आचार्य जी ने योग एवं आयुर्वेद के माध्यम से जनमानस को निरोगी बनाने का अभुतपूर्व कार्य किया है।

इस भव्य अनावरण समारोह में

- **'दन्त कांति गंडूष ऑयल पुलिंग केवल एक दैनिक क्रिया नहीं,यह एक चिकित्सा विज्ञान है,जो आज के समय की आवश्यकता है '**

इंडियन डेंटल एसोसिएशन,उत्तराखंड शाखा के अध्यक्ष डॉ. राजीव बंसल, कोषाध्यक्ष डॉ. वैभव पाहवा, पतंजलि हॉस्पिटल के दंत विभाग प्रमुख एवं इंडियन डेंटल एसोसिएशन,हरिद्वार शाखा के सचिव डॉ. कुलदीप सिंह,पतंजलि अनुसन्धान संस्थान के उपाध्यक्ष एवं प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. अनुराग वार्ष्णेय,इंडियन डेंटल एसोसिएशन,हरिद्वार शाखा के कोषाध्यक्ष डॉ. गुरप्रीत ऑबराय तथा उत्तराखंड के कई प्रख्यात दन्त चिकित्सक उपस्थित रहे।

शहर को गन्दा करने वाले दोषी व्यक्तियों पर हो रही कारवाई

सीएनडी वेस्ट फैलाने वाले दोषी व्यक्तियों पर नगर निगम ग्रेटर की टीमों द्वारा की जा रही है कार्रवाई

जयपुर । जयपुर शहर को स्वच्छ व सुंदर बनाने के लिए नगर निगम ग्रेटर की टीमें सतत् प्रयासरत हैं तथा शहर को गंदा करने वाले दोषी व्यक्तियों पर लगातार कारवाई कर रही हैं।

आयुक्त डॉ. गौरव सैनी ने बताया कि 1 अप्रैल 2025 से अब तक तक खुले में कचरा फेंकने, सीएनडी वेस्ट डालने, सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग करने वालों, कचरा जलाने वालों सहित स्वच्छता के विभिन्न मापदण्डों का उल्लंघन करने वाले दोषी व्यक्तियों पर नगर निगम ग्रेटर की टीमों द्वारा लगातार कार्रवाई की जा रही है। जिसके तहत स्वच्छता के विभिन्न मापदण्डों का उल्लंघन करने पर 1 अप्रैल 2025 से अब तक लगभग कुल 40 लाख 34 हजार रूपये वसूल किये जा चुके है।

उन्होनें बताया कि शहर की स्वच्छता हमारे लिए प्राथमिकता है, यदि कोई भी व्यक्ति शहर को गन्दा करता है, खुले में कचरा फैंकता है, सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग करता है स्वच्छता के मापदण्डों का उल्लघंन करता है तो दोषी व्यक्ति से कैरिंग चार्ज वसूल किया जायेगा। नगर निगम ग्रेटर की टीमें लगातार सफाई कार्य में जुटी है शहर को स्वच्छ रखना हर नागरिक की जिम्मेदारी है।

नगर निगम ग्रेटर की सख्त कार्रवाई:-

स्वच्छ सर्वेक्षण के विभिन्न मापदण्डों का उल्लंघन करने वाले जैसे खुले में कचरा डालने, सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी फैलाने दोषी व्यक्तियों से 28 लाख 33 हजार से अधिक जुर्माना वसूल किया सीएनडी वेस्ट पर 8 लाख 5 हजार 600 रूपये, सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग करने वाले दोषियों से 3 लाख 67 हजार 850 रूपये जुर्माना राशि वसूल की गई।

झोटवाड़ा जोन द्वारा अब तक सबसे अधिक कैरिंग चार्ज वसूल किया गया जिसके तहत जुलाई माह के मात्र 7 दिनों में 75 हजार रूपये के चालान काटे साथ ही सीएनडी वेस्ट डालकर रोड़ पर अतिक्रमण करने वाले दोषी व्यक्ति से 1 हजार रूपये प्रतिदिन के हिसाब से 55 हजार रूपये एक ही दिन में वसूल किये गये।

1 अप्रैल 2024 से 31 मार्च 2025 तक 1 करोड़ 99 लाख रूपये का कैरिंग चार्ज कैरिंग चार्ज/जुर्माना दोषी व्यक्तियों से वसूल किया गया।

सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग करने वालों के विरूद्ध अब तक 32 लाख रूपये जुर्माना वसूल किया जा चुका है साथ ही लगभग 2123 किलो ग्राम सिंगल यूज प्लास्टिक जब्त की गई है। नगर निगम ग्रेटर द्वारा आमजन को सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग ना करने के लिये समझाइश की जा रही है साथ ही महेश नगर सब्जी मण्डी, जनता स्टोर, बापू नगर, थड़ी मार्केट मानसरोवर, मुरलीपुरा सब्जी मण्डी, जगतपुरा सब्जी मण्डी, सांगानेर सब्जी मण्डी, अम्बाबाड़ी सब्जी मण्डी सहित 8 स्थानों पर क्लॉथ वेडिंग मशीन स्थापित कर आमजन को कपड़े के थैले उपलब्ध करवाये जा रहे है। इसके साथ ही जोन स्तर एवं मुख्यालय पर स्थापित मुख्यमंत्री सद्भावना केन्द्रों के माध्यम से जरूरतमंदों तक कपड़े, जूते, किताबें, स्टेशनरी अन्य उपयोगी सामग्री पहुंचाई जा रही है। अब तक इन केन्द्रों पर लगभग 10 हजार से अधिक नागरिकों द्वारा अनुपयोगी सामान उपलब्ध करवाया गया। जो किसी अन्य जरूरतमंद के काम आ सकता है।

- **01 अप्रैल 2025 से अब तक 40 लाख रूपये से अधिक जुर्माना किया वसूल**
- **झोटवाड़ा जोन ने जुलाई माह के 7 दिनों में वसूले 75 हजार रूपये जुर्माना**
- **खुले में कचरा डालने, सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी फैलाने दोषी व्यक्तियों से 28 लाख 33 हजार से अधिक जुर्माना वसूल किया**

बैठक सम्पन्न

कोटा, (निसं)। कोटा नागरिक सहकारी बैंक लि.कोटा की संचालक मण्डल की बैठक सोमवार को प्रधान कार्यालय रावतभाटा रोड़ पर आयोजित की गई। अध्यक्ष राजेश कृष्ण बिरला की अध्यक्षता में बैठक सम्पन्न हुई। प्रबंध संचालक बीना बैरवा ने बताया कि बैठक में सीआरआर व एस.एल.आर. की अनुपालना,अवधि पार ऋण की समीक्षा की।

जयपुर विकास प्राधिकरण : 'वर्किंग ग्रुप' का गठन

अपार्टमेंट ओनरशिप एक्ट 2015 एवं नियम 2020 के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए एक ''वर्किंग ग्रुप'' का गठन किया।

जयपुर। जयपुर विकास प्राधिकरण ने अपार्टमेंट ओनरशिप एक्ट 2015 एवं नियम 2020 के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए एक ''वर्किंग ग्रुप'' का गठन किया है। इस कार्य समूह का उद्देश्य अपीलों के निस्तारण में तेजी लाना और संबंधित मुद्दों का समाधान करना है।

जयपुर विकास आयुक्त आनन्दी ने बताया कि जेडीए द्वारा अपार्टमेंट ओनरशिप एक्ट 2015 एवं नियम 2020 के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए एक ''वर्किंग ग्रुप'' का गठन किया गया है। उक्त वर्किंग में विभिन्न संवर्ग के अधिकारियों को इस प्रक्रिया की निगरानी के लिए शामिल किया गया है।

कार्य समूह में निम्नलिखित सदस्यों को सदस्य बनाया गया गया है:अतिरिक्त आयुक्त (पूर्व).उपायुक्त, जोन-12, उप नगर नियोजक / सहायक नगर नियोजक, जोन-12, सहायक अधिवक्ता, जोन-12 , उप नगर नियोजक / सहायक नगर नियोजक, जोन-7।

यह वर्किंग ग्रुप अपार्टमेंट ओनरशिप एक्ट के नियमों का अध्ययन करेगा और एक्ट में निर्धारित प्राधिकरण के दायित्वों, शक्तियों और कार्यों के संबंध में प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करेगा। इसके साथ ही, यह समूह समस्या निराकरण और कार्मिकों के आमुखीकरण की प्रक्रिया को भी सुनिश्चित करेगा।

शादी करने का झांसा देकर युवती से देह शोषण

जयपुर। करधनी थाना इलाके में बॉयफ्रेंड ने शादी करने का झांसा देकर युवती से देह शोषण करने का मामला सामने आया है। जानकारी में सामने आया कि आरोपित अश्लील वीडियो बनाकर अब पीडित को ब्लैकमेल कर बदनाम करने की धमकी दी। इस संबंध में पीड़ित युवती थाने पहुंची और मामला दर्ज करवाया।

पुलिस ने बताया कि करधनी की रहने वाली युवती ने मामला दर्ज करवाया है कि कुछ समय पहले उसकी मुलाकात आरोपित युवक से हुई थी। बातचीत के दौरान आरोपित ने उससे दोस्ती कर मिलना-जुलना शुरू कर दिया। अपनी बातों के जाल में फंसा कर शादी करने का ऑफर रखा। आरोप है कि मिलने बुलाकर अकेले में आरोपी ने उसके साथ जबरदस्ती की।

विरोध करने पर शादी करने का वादा किया। शादी करने का झांसा देकर लगातार देहशोषण करने लगा। इस दौरान बनाए अश्लील वीडियो से ब्लैकमेल कर बदनाम करने की धमकी दी। शादी करने का दबाव बनाने पर आरोपी बॉयफ्रेंड ने मना कर दिया। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच में जुटी है।

स्वायत्त शासन विभाग समिति का शपथ ग्रहण समारोह सम्पन्न

जयपुर। स्वायत्त शासन विभाग, जयपुर की विभागीय समन्वय समिति का शपथ ग्रहण समारोह सोमवार को विभाग परिसर में गरिमापूर्ण माहौल में सम्पन्न हुआ, जहां संगठनात्मक एकता, विश्वास और प्रतिबद्धता की नई बुनियाद रखी गई।

समारोह में नवनिर्वाचित अध्यक्ष शशि भूषण शर्मा, महामंत्री विकास चौधरी सहित कुल 14 पदाधिकारियों, 11 सदस्यों एवं 9 सलाहकारों ने संविधान के प्रति आस्था एवं विभागीय दायित्वों के ईमानदारीपूर्वक निर्वहन की शपथ ली।

इस अवसर पर अध्यक्ष शर्मा ने विभागीय समन्वय को सुदृढ़ करने और कर्मचारियों के हितों की सतत रक्षा का संकल्प दोहराया। उन्होंने कहा कि समिति समर्पण, संवाद और सहयोग की भावना के साथ कार्य करेगी, जिससे विभाग में कार्यसंस्कृति और बेहतर होगी। विशिष्ट सचिव एवं निदेशक इन्द्रजीत सिंह ने नवचयनित कार्यकारिणी को शुभकामनाएं दीं ।

समन्वय तथा पारदर्शिता के साथ कार्य करने की प्रेरणा दी। उन्होंने आशा व्यक्त की कि समिति कर्मचारियों और विभाग के बीच सेतु बनकर रचनात्मक भूमिका निभाएगी। समारोह में विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों, पूर्व पदाधिकारियों और बड़ी संख्या में कर्मचारियों की उपस्थिति रही। आयोजन में उत्साह, संगठनात्मक ऊर्जा और भविष्य के प्रति विश्वास स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुआ।

'आवेदन से सत्यापन तक सभी प्रक्रियाओं का सरलीकरण कर तकनीकी रूप से यूजर फ्रेंडली बनाया जाए'

जयपुर। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव अपर्णा अरोड़ा ने कहा कि पेंशन, छात्रवृति सहित विभिन्न योजनाओं के आवेदन से लेकर सत्यापन की सभी प्रक्रियाओं का सरलीकरण कर उन्हें तकनीकी रूप से

- **अतिरिक्त मुख्य सचिव ने ली समीक्षा बैठक, अधिकारियों को दिए आवश्यक दिशा-निर्देश**

यूजर फ्रेंडली बनाया जाए ताकि सरकारी योजनाओं का लाभ आमजन को तुरंत मिल सके।

अरोड़ा सोमवार को विभाग के मुख्यालय अम्बेडकर भवन में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, बाल अधिकारिता विभाग, विशेष योग्यजन विभाग एवं अनुजा निगम के प्रभारी अधिकारियों के साथ विभागीय योजनाओं की समीक्षा कर रही थीं।उन्होंने अधिकारियों को तकनीकी सपोर्ट के साथ लोगों की मदद करने के निर्देश दिए।उन्होंने विभिन्न

अरोड़ा सोमवार को विभाग के मुख्यालय अम्बेडकर भवन में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, बाल अधिकारिता विभाग के प्रभारी अधिकारियों के साथ विभागीय योजनाओं की समीक्षा की।

योजनाओं का सिंगल इंटीग्रेटेड पोर्टल बनाते हुए सिटीजन ऐप विकसित करने के भी निर्देश दिए। अतिरिक्त मुख्य सचिव ने 3 घंटे की मैराथन बैठक लेते हुए सभी योजनाओं का पीपीटी प्रस्तुतीकरण देखा और जरूरी निर्देश दिए। उन्होंने कम आवेदन वाली योजनाओं के प्रचार-प्रसार और जागरूकता संबंधी निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि अधिकारीगण योजनाओं की स्वयं के स्तर पर भी मॉनिटरिंग करें। जिस स्तर पर भी प्रक्रिया को सरल किया जा सकता है उसे क्रियान्वित करवाने का प्रयास करें। अरोड़ा ने कहा कि विभाग द्वारा ऐसा मैकेनिज्म विकसित किया जाए जिससे विभिन्न योजनाओं का आवेदन, सत्यापन सहित अन्य जांचें पंचायत स्तर पर ही हो सकें। उन्होंने कहा कि ब्लॉक और जिला स्तर पर होने से प्रकरणों में देरी होने की आशंका होती है। इस दौरान पालनहार, मुख्यमंत्री अनुप्रति योजना, बाबा साहब अंबेडकर आदर्श ग्राम योजना, स्वयं सिद्धा आश्रम, महाविद्यालय आवासीय छात्रावास, मुख्यमंत्री कन्यादान, वृद्ध कल्याण, मुख्यमंत्री आयुष्मान बाल संबल सहित पेंशन, छात्रवृति संबंधी विभिन्न योजनाओं की प्रगति रिपोर्ट जानी।निदेशक आशीष मोदी ने कहा कि लाभार्थियों को कम से कम परेशानी के साथ योजनाओं का लाभ देना ही अधिकारियों का एकमात्र लक्ष्य होना चाहिए। इस दौरान अतिरिक्त निदेशक केसरलाल मीना, हरिसिंह मीना, सुमन पवार, वित्तीय सलाहकार अंजू सिंह, वीरेन्द्र सिंह, उप निदेशक दीपाली भगोतिया, अतिरिक्त निदेशक सुण्डाराम मीना, रीना शर्मा, अशोक कुमार, अरविन्द कुमार, चंद्रशेखर चौधरी सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।

संतों और मुनियों की वाणी समान रूप से प्रासंगिक

जयपुर। पाली जिले की सुमेरपुर विधानसभा क्षेत्र के दुजाना में आचार्य भगवंत चिदानंद सूरीश्वर जी म.स. का दिव्य चातुर्मासिक प्रवेश सोमवार सुबह सादगीपूर्वक हुआ। प्रवेश उत्सव में आचार्य भगवंत चिदानंद सूरीश्वर जी म.स. का जैन संघ दुजाना की ओर से सत्कार किया गया। इस दौरान परम पूज्य चिंतानंद जी सूरीश्वर, परम पूज्य लक्ष्मी विजय जी, परम पूज्य विद्या सागर जी का भी सत्कार किया गया। संघ के अध्यक्ष अरविंद राणावत ने स्वागत वक्तव्य दिया। इस दौरान राजस्थान के देवस्थान मंत्री जोराराम कुमावत ने शिरकत कर महाराजसे आशीर्वाद लिया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मंत्री कुमावत ने कहा कि भारत देश साधु-संतों का देश है। यह देश अपने संतों और ऋषियों के अमर विचारों व दर्शन के कारण दुनिया की सबसे प्राचीन जीवंत सभ्यता है। भारतीय तीर्थंकरों, संतों और मुनियों की वाणी, उनकी शिक्षाएं विभिन्न युगों में समान रूप से प्रासंगिक हैं। उन्होंने कहा कि जैन संत की तप, तपस्या और कड़ी साधना करते हैं। मैं सौभाग्यशाली हूं कि मुझे जैन संतों का हमेशा आशीर्वाद मिलता है। उनके आशीर्वाद से ही मुझे जीवन जीने का ज्ञान मिलता है।

जयपुर जंक्शन के बाहर से निगम प्रशासन ने हटाए अस्थाई अतिक्रमण

जयपुर। जयपुर जंक्शन के बाहर व्याप्त गंदगी और अस्थाई अतिक्रमण पर हेरिटेज निगम ने सोमवार को बड़ी कार्रवाई की है। हेरिटेज निगम की सिविल लाइन जोन और सतर्कता शाखा ने संयुक्त अभियान चलाते हुए दुकानों के बाहर सड़क और फुटपाथ पर हो रहे अस्थाई अतिक्रमण को हटा दिया, इसके अलावा जिन दुकानों के बाहर गंदगी पाई गई और डस्टबिन नहीं थे, उनका 49500 रुपए का जुर्माना कर दिया, साथ ही पांच ट्रक सामान भी जब्त किया गया।

- **शनिवार देर रात निगम आयुक्त डॉ निधि पटेल ने किया था निरीक्षण, सख्त कार्रवाई के दिए थे निर्देश**

इस संबंध में सिविल लाइन जोन उपायुक्त सुनील कुमार बैरवा ने बताया कि जयपुर जंक्शन के बाहर काफी समय से गंदगी होने और अस्थाई अतिक्रमण की शिकायत मिल रही थी। इस पर हेरिटेज निगम आयुक्त डॉ निधि पटेल के निर्देश पर सोमवार को सतर्कता शाखा के साथ मिलकर अतिक्रमण को हटा दिया।

जयपुर जंक्शन के बाहर व्याप्त गंदगी और अस्थाई अतिक्रमण पर हेरिटेज निगम ने सोमवार को बड़ी कार्रवाई की।

इस दौरान कई दुकानों के बाहर कच्चे पक्के अस्थाई निर्माण को भी जेसीबी की सहायता से हटा दिया है। वहीं, दुकानों के बाहर डस्टबिन नहीं मिलने और कचरा सड़क पर फेंकने पर भी कार्रवाई करते हुए 49500 रुपए केरिंग चार्ज वसूल किया गया है। जयपुर जंक्शन के बाहर जाम की स्थिति नहीं बनें, इसके लिए लगातार मॉनिटरिंग की जाएगी। इसके अलावा व्यापारियों को सख्त हिदायत दी है कि दुकानों के बाहर दो डस्टबिन नहीं रखने पर सीज की भी कार्रवाई की जाएगी।

गौरतलब है कि हेरिटेज निगम आयुक्त डॉ निधि पटेल सफाई व्यवस्था को लेकर लगातार शहर के दौरे पर है।

निगम आयुक्त डॉ निधि पटेल ने एक दिन पहले शनिवार को देर रात में जयपुर जंक्शन के बाहर सफाई व्यवस्था को जांचा था। जिसमें गंदगी मिलने पर स्वास्थ्य निरीक्षक को लताड़ लगाई थी और सख्त एक्शन लेने के निर्देश भी दिए थे।

मोहर्रम जुलूस में नाबालिग की हत्या के मामले में 11 जने डिटेन

मोहर्रम के जुलूस में शामिल नाबालिग की कुछ लोगों ने पीट-पीटकर हत्या कर दी थी

चूरू, (निसं)। मोहर्रम के जुलूस में 17 साल के नाबालिग की पीट-पीटकर हत्या के मामले में पुलिस ने कार्रवाई करते हुए 11 जनों को डिटेन किया है।

डीएसपी सुनील झाझड़िया ने बताया कि रविवार शाम मोहर्रम के जुलूस में शामिल नाबालिग की कुछ लोगों ने पीट-पीटकर हत्या कर दी थी, जिसके बाद परिजनों ने अज्ञात के खिलाफ कोतवाली में हत्या का मुकदमा दर्ज करवाया था। डीएसपी झाझड़िया ने बताया कि नाबालिग की हत्या के बाद दर्ज मामले में अज्ञात हत्यारों की तलाश के लिए पुलिस की टीमों ने शहर में रातभर दबीश देकर करीब 11 जनों को डिटेन किया है। मामले की गंभीरता को देखते हुए सोमवार को मृतक के पोस्टमार्टम के दौरान भी अस्पताल में एहतिहात के तौर पर तीन थानों की पुलिस और आर.ए.सी. की टुकड़ी तैनात की गई।

नाबालिग की मौत के बाद अस्पताल में भारी भीड़ जमा हो गयी।

- मृतक के पोस्टमार्टम के दौरान भी अस्पताल में एहतिहात के तौर पर तीन थानों की पुलिस और आर.ए.सी. की टुकड़ी तैनात रही
- जुलूस के दौरान मृतक और उसके साथ चल रहे युवकों का आपस में कंधा टकराया था और इसी को लेकर कहासुनी हुई थी

जुलूस में हुई थी कहासुनी :- डीएसपी सुनील झाझड़िया ने बताया कि पुलिस के प्रारंभिक अनुसंधान में सामने आया कि जुलूस के दौरान मृतक और उसके साथ चल रहे युवकों का आपस में कंधा टकराया था और उसी बात को लेकर हुई कहासुनी के बाद नाबालिग की साथ चल रहे युवकों ने पिटाई कर दी, पिटाई में गंभीर रूप से घायल नाबालिग को अस्पताल लाये जाने के बाद चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। डीएसपी सुनील झाझड़िया ने बताया कि वारदात के बाद से पुलिस ने वारदात स्थल के आस-पास के दर्जनों सीसीटीवी कैमरे खंगालकर 11 जनों को डिटेन किया है।

राठौड़ और मंडेलिया पहुंचे थे अस्पताल :- नाबालिग की मौत के बाद अस्पताल में रविवार देर शाम अस्पताल में भारी भीड़ जमा हो गयी थी और अस्पताल में प्रदेश कांग्रेस उपाध्यक्ष रफीक मंडेलिया और पूर्व मंत्री राजेंद्र राठौड़ ने मृतक के परिवार को सांत्वना दी और पुलिस से त्वरित कार्रवाई की मांग की।

बीट अधिकारी पर प्रार्थी के साथ कथित रूप से मारपीट का आरोप

पाटन, (निसं)। डाबला थाना क्षेत्र के ढाणी सुराली/रतननगर निवासी रविंद्र सिंह के साथ पुलिसकर्मी द्वारा अभद्रता एवं मारपीट करने का गंभीर मामला सामने आया है। रविंद्र सिंह ने बताया कि वह चरित्र प्रमाण पत्र बनवाने के लिए डाबला थाने गया था, जहां मौजूद सिपाही पवन कुमार बल्डोदिया ने स्वयं को बीट अधिकारी बताकर उनके साथ गाली-गलौच एवं अभद्र व्यवहार किया।

प्राप्त जानकारी के अनुसार 30 तारीख की रात लगभग नौ बजे, डाबला रेलवे स्टेशन पर कार्यरत राहुल माथुर ने शराब के नशे में सिपाही पवन कुमार बल्डोदिया से रविंद्र सिंह को फोन करवाकर स्टेशन बुलवाया। स्टेशन पर पहले से मौजूद पवन कुमार बल्डोदिया सिपाही, राहुल माथुर एवं तीन अन्य पुलिसकर्मियों ने रविंद्र सिंह को सरकारी गाड़ी में बैठाया और वहां सिपाही पवन ने रविंद्र सिंह के मुंह एवं कान पर गंभीर चोट पहुंचाई। इसके बाद रविंद्र सिंह को थाने ले जाकर कंप्यूटर कक्ष में बंद किया, जहां सिपाही पवन कुमार बल्डोदिया और थानाधिकारी राजवीर सिंह ने कथित रूप से दुर्व्यवहार करते हुए बुरी तरह मारपीट की। इस हमले में रविंद्र सिंह के कान का पर्दा फट गया और उनके मुंह व पैर पर गंभीर चोटें आईं। सूत्रों के अनुसार, पवन कुमार बल्डोदिया डाबला चौकी के समय से ही इस क्षेत्र में बीट अधिकारी के रूप में तैनात रहा है। चौकी के थाने में उन्नयन के बाद भी उसकी ड्यूटी यहीं पर बनी हुई है, जिससे वह थाने को अपनी व्यक्तिगत संपत्ति समझते हुए मनमाना व्यवहार करता है।

- पीड़ित का मारपीट से कान का पर्दा फटा, उच्च अधिकारियों से न्याय की गुहार की

प्रार्थी रविंद्र सिंह ने बताया कि उन्होंने इस पूरी घटना की जानकारी उच्च अधिकारियों को दे दी है और उनसे उचित कानूनी कार्रवाई की मांग की है। उनका कहना है कि दोषियों पर सख्त कार्रवाई होनी चाहिए, ताकि पीड़ित को न्याय मिल सके और आमजन में पुलिस प्रशासन के प्रति विश्वास कायम रहे, साथ ही अपराधियों में डर का माहौल बने।

गौरतलब है इन दिनों डाबला थाना सुर्खियों में बना हुआ है कभी होटल में पैसा नहीं देने का वीडियो वायरल होता है तो कभी आमजन के साथ गलत व्यवहार की शिकायतें वायरल होती है।

इस बारे में डाबला थाना अधिकारी राजवीर सिंह से जानकारी चाहिए गई तो उन्होंने बताया कि रविंद्र सिंह के खिलाफ राहुल माथुर ने रिपोर्ट दर्ज करवाई थी कि रविंद्र सिंह मेरे को मारने की धमकी दे रहा है, बेवजह मुझसे झगड़ा कर रहा है। इस पर पवन कुमार को भेज कर इसको थाने लाया गया। अब यह बेवजह मनगढंत आरोप लगा रहा है।

एनजीटी ने काटे गये पेड़ों के बदले पौधे लगाने के लिए जवाब मांगा

भीलवाड़ा, (निसं)। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल सेन्ट्रल जोनल बैंच भोपाल के न्यायाधिपति शिवकुमार सिंह व एक्सपर्ट मेम्बर डॉ. ए. सेंथिल की बैंच ने भीलवाड़ा निवासी पर्यावरणविद् बाबूलाल जाजू की अधिवक्ता लोकेन्द्र सिंह कच्छावा के मार्फत दायर जनहित याचिका में राष्ट्रीय राजमार्गों के निर्माण के दौरान राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण द्वारा काटे गये पेड़ों के बदले नियमानुसार 3 गुने, 5 गुने एवं 10 गुने पौधे नहीं लगाने एवं सुरक्षा व्यवस्था के अभाव में जीवित पौधों की अत्यधिक कम संख्या के मामले में चेयरमैन, नेशनल हाइवे ऑथोरिटी ऑफ इण्डिया नई दिल्ली, मुख्य सचिव राजस्थान सरकार, प्रधान मुख्य वन संरक्षक राजस्थान, क्षेत्रीय अधिकारी एनएचएआई जयपुर एवं राजस्थान प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड जयपुर को नोटिस जारी कर चार सप्ताह में जवाब मांगा है।

- 'नियमानुसार 8.5 लाख पौधे और लगाने की आवश्यकता है'

जाजू ने याचिका में बताया कि राष्ट्रीय राजमार्गों के निर्माण के दौरान एनएचएआई द्वारा वृक्षारोपण कार्य में नियमों की उपेक्षा की गई है, अनेक राजमार्गों पर काटे गये पेड़ों से भी कम संख्या में पौधे लगाये गये हैं, जिन प्रजातियों के पौधे काटे, उन स्थानीय प्रजातियों के पौधे नहीं लगाकर झाड़ियां लगा दी गई है तथा काटे गए पेड़ों के बदले लगाए जाने वाले पेड़ों की संख्या के संबंध में कोई समान नीति होने, रखरखाव व्यवस्था नहीं करने के कारण लगाये गये पौधों के जीवित रहने की दर बहुत कम है। वन मंत्रालय द्वारा मॉनिटरिंग मैकेनिज्म और ऑडिट हेतु फोरेस्ट डिपार्टमेंट को निर्देशित करने के बावजूद वन विभाग द्वारा मॉनिटरिंग सिस्टम विकसित नहीं किया गया है। प्रदेश में राजमार्ग बनाने के लिए बड़ी संख्या में काटे गये लाखों विशालकाय पेड़ों के बदले नियमानुसार पौधे लगाकर पल्लवित कर बड़े करने पर ध्यान नहीं दिये जाने से पौधे जीवित ही नहीं बचे हैं, जिससे प्रदूषण की समस्या गहरा रही है। राजमार्गों के दोनों ओर पौधे अधिक प्राणवायु और अधिक उम्र के पौधे लगाने के बजाय डिवाइडर में झाड़ियां रोपित कर पेड़ों की संख्या में उनकी गिनती करा दी गई है।

जाजू ने बताया कि काटे गये पेड़ों के बदले नियमानुसार पौधारोपण में अब 8.5 लाख से अधिक पौधे और लगाकर उन्हें बड़ा करने की आवश्यकता है। जाजू ने याचिका में सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा 2015 में जारी मुख्य राजमार्गों, वृक्षारोपण, प्रत्यारोपण, सौंदर्यीकरण और रखरखाव नीति एवं पर्यावरण नीति दिशा निर्देश 2024 का उल्लेख करते हुए एनएचएआई द्वारा नीति का उल्लंघन किया जाना बताया है। उन्होंने कहा कि राजमार्ग परियोजनाओं के लिए भूमि अधिग्रहण योजनाओं को तैयार करते समय अक्सर एवेन्यू प्लांटेशन और लैंडस्केप सुधार के लिए आवश्यक भूमि पर विचार नहीं किया जाता है, जिसके कारण राजमार्ग निर्माण के बाद वृक्षारोपण के लिए पर्याप्त जगह नहीं बचती है। जाजू ने बताया कि मामले में अगली सुनवाई 14 अगस्त को होगी।

अजमेर एलिवेटेड रोड क्षतिग्रस्त मामला : कोर्ट ने जनहित याचिका पर सुनवाई की

अजमेर, (कासं)। प्रदेश में सक्रिय मानसून के बाद गत दिनों अजमेर में हुई मूसलाधार बरसात के बाद स्मार्ट सिटी योजना में 275 करोड़ की लागत से बने एलिवेटेड रोड (रामसेतू ब्रिज) की नसिया वाले मार्ग की भुजा की सड़क धंस जाने (क्षतिग्रस्त) होने का मामला कोर्ट पहुंच गया है। शहर के जागरुक नागरिकों द्वारा कोर्ट में जनहित याचिका प्रस्तुत की थी, जिसको कोर्ट ने स्वीकार करते हुए सोमवार को सुनवाई की। कोर्ट ने नगर निगम आयुक्त को नोटिस जारी कर कोर्ट में जवाब प्रस्तुत करने के आदेश दिए हैं।

- कोर्ट ने नगर निगम आयुक्त को नोटिस जारी कर कोर्ट में जवाब प्रस्तुत करने के आदेश दिए

अगली सुनवाई मंगलवार को होगी।

जागरुक नागरिकों की ओर से कोर्ट में जनहित याचिका प्रस्तुत करने वाले वकील विवेक पाराशर ने बताया कि अजमेर के रामसेतु ब्रिज में तकनीकी खामियों को लेकर सिविल न्यायाधीश पश्चिम के न्यायाधीश मनमोहन चंदेल की कोर्ट में जनहित याचिका पर सोमवार को सुनवाई हुई। जज द्वारा याचिका की सुनवाई के बाद नगर निगम आयुक्त देशलदान को नोटिस जारी किया है। नोटिस का जवाब देने के लिए आदेश भी दिए हैं। मंगलवार को कोर्ट में मामले को लेकर अगली सुनवाई होगी। पाराशर ने बताया कि कोर्ट में इस मामले को लेकर प्रारंभिक तौर पर सुनवाई हुई। न्यायालय ने माना कि यह मामला अजमेर की जनता से जुड़ा हुआ है और यह गंभीर है, इसे लेकर तुरंत सुनवाई के आदेश दिए।

3 जुलाई को धंसी ब्रिज पर सड़क :- एडवोकेट पाराशर ने बताया कि कोर्ट में प्रतिवादी जितेश धनवानी और मुकेश पुरी की ओर से जनहित याचिका लगाई गई, जिसमें उन्होंने बताया कि 3 जुलाई को हुई तेज बरसात से ब्रिज की सड़क धंस गई थी। इस मामले में जागरूक नागरिक होने के नाते कोर्ट में याचिका पेश कर ब्रिज में खराब क्वालिटी की सामग्री और मापदंडों का प्रयोग के जिम्मेदार व्यक्तियों पर कार्रवाई की मांग की गई है।

नवजात भ्रूण मिला

शाहपुरा/भीलवाड़ा, (निसं)। जिले के शाहपुरा कस्बे में एक बार फिर मानवता को झकझोर देने वाला मामला सामने आया है। उम्मेद सागर रोड स्थित पानी की टंकी के सामने एक नवजात शिशु का भ्रूण मिलने से सनसनी फैल गई। यह भ्रूण लगभग 8 से 9 महीने का बताया जा रहा है, जिससे आशंका जताई जा रही है कि जन्म के तुरंत बाद उसे यहां फेंका गया होगा। घटना की जानकारी मिलते ही शाहपुरा पुलिस मौके पर पहुंची। सब इंस्पेक्टर पीतांबर, पुलिस चौकी इंचार्ज बदन सिंह तथा बनवारी कुमावत सहित अन्य पुलिसकर्मी घटनास्थल पर पहुंचे और जांच प्रारंभ की। पुलिस ने भ्रूण को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दिया है तथा आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की जांच की जा रही है। शाहपुरा में इस प्रकार की दूसरी घटना है, जिससे आमजन मेंआक्रोश व चिंता का माहौल है।

शिविर में भूमि विवाद का आपसी सहमति से निपटारा

अरांई, (निसं)। सांदोलिया ग्राम पंचायत मुख्यालय पर उपखंड अधिकारी आस्था शर्मा, तहसीलदार हरिराम के सानिध्य में पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय सम्बल शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में वर्षों पुराने भूमि विवाद का आपसी सहमति से बंटवारा हुआ।

एसडीओ शर्मा ने बताया कि सांदोलिया के काश्तकारों खातेदार राजी देवी पत्नी श्योजी जाट व श्योजी जाट पुत्र रतना जाट ने पिछले 12 वर्षों से अटके बंटवारे के बारे में बताया, जिस पर एसडीओ ने बंटवारे का आवेदन करवा मौके पर ही तहसीलदार को निर्देश दिए। तहसीलदार हरिराम ने शिविर में ही कार्रवाई करते आपसी सहमति से बंटवारा का निपटारा करवाया। शिविर में राजस्व विभाग ने सीमा ज्ञान, नामान्तरण, आपसी सहमति से बंटवारा, पशुपालन विभाग ने टीकाकरण, पंचायतीराज विभाग ने स्वामित्व कार्ड/पट्टे, खाद्य विभाग ने आधार सीडिंग एवं ईकेवासी संबंधी कार्य मौके पर किये।

लूट की वारदात का खुलासा, चालक सहित तीन गिरफ्तार

व्यापारी का चालक ही निकला मास्टरमाइंट, एक अन्य आरोपी की पुलिस तलाश कर रही है

नदबई, (निसं)। नदबई-हलैना सड़क मार्ग पर बैलारा बायपास के समीप परचून व्यापारी के मुनीम को हथियार दिखाते हुए करीब साढ़े तीन लाख रुपए की लूट करने के मामले में पुलिस ने खुलासा करते हुए पीड़ित परचून व्यापारी के चालक सहित तीन जनों को गिरफ्तार किया। पुलिस सूत्रों की मानें तो पीड़ित परचून व्यापारी के चालक ने ही अपने साथी के साथ, मिलकर लूट की साजिश तैयार की। बाद में अपने मित्र सहित दो अन्य बदमाशों के साथ मिलकर पीड़ित व्यापारी के मुनीम के साथ लूट की वारदात को अंजाम दिया।

- मुनीम को हथियार दिखाते हुए लूट की बारदात को अंजाम दिया था

पुलिस के अनुसार न्योंठा निवासी जयनारायण शर्मा पुत्र रामध्वज शर्मा, बरौलीरान निवासी पवन राणा पुत्र बहादुर सिंह व वैर थाना क्षेत्र के गांव जीवत निवासी सौरभ सिंह पुत्र शेरसिंह को गिरफ्तार किया गया, जबकि, जीवत निवासी जयशिव पुत्र दौलत सिंह का पुलिस को सुराग नहीं लग सका। जानकारी के अनुसार 29 जून को पीड़ित व्यापारी का मुनीम शिवराम उर्फ शिब्बो, बिक्री हुए परचून सामान का पैसा एकत्रित कर हलैना से नदबई लौट रहा था। इसी दौरान गांव खांगरी बायपास के समीप मुनीम को हथियार दिखाते हुए लूट की बारदात को अंजाम दिया था। गुरुवार को व्यापारी सुरेशचंद ने अज्ञात बदमाशों के खिलाफ मामला दर्ज कराया। पुलिस ने जांच कर तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया।

सूत्रों की मानें तो गिरफ्तार आरोपी चालक, जयनारायण शर्मा करीब एक साल से पीड़ित व्यापारी सुरेशचंद की पिकअप गाड़ी को चला रहा था। इसी दौरान आरोपी चालक के मित्र पवन राणा ने आर्थिक स्थिति कमजोर होने के बारे में बताया। आर्थिक स्थिति कमजोर होने के चलते आरोपी चालक ने, प्रत्येक रविवार को उधारी का पैसा लेकर आने वाले मुनीम के बारे में बताया। बाद में चालक जयनारायण व पवन राणा ने जीवत निवासी सौरभ सिंह व जयसिंह के साथ मिलकर लूट की साजिश रची। मामले में जयनारायण, पवन व सौरभ सिंह को गिरफ्तार किया गया।

सहदेव हत्या प्रकरण : अपहरण करने वाले दो आरोपी गिरफ्तार

अजमेर, (कासं)। नागौर के बहुचर्चित सहदेव हत्याकांड मामले में सिविल लाइंस थाना पुलिस ने मुख्य आरोपी महिपाल जाट व उसकी पत्नी ललिता को गिरफ्तार किया है। आरोपी अपहरण व हत्या की वारदात के बाद से फरार चल रहे थे। पुलिस ने दम्पती को नागौर से दबोचा। आरोपियों ने सहदेव का अपहरण व हत्या का षड़यंत्र रचा था।

- आरोपी अपहरण व हत्या की वारदात के बाद से फरार चल रहे थे, दम्पती को नागौर से दबोचा

सिविल लाइन थाना प्रभारी शम्भूसिंह शेखावत ने बताया कि नागौर के जायल निवासी सहदेव जाट का अपहरण व हत्या के मामले में सिविल लाइन थाना पुलिस ने फरार चल रहे मुख्य आरोपी नागौर के कुचेरा खेड़ा निवासी ललिता उर्फ लौकी उसके पति महिपाल जाट पुत्र जगदीश को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस की प्रारंभिक जांच में सामने आया कि महिपाल और उसकी पत्नी ललिता ने ही अपने साढ़ू व बहनोई सहदेव जाट को अजमेर रोडवेज बस स्टैंड से अगवाकर सबक सिखाने का षड़यंत्र रचा था। महिपाल ने ससुर व चाया ससुर की मदद से सहदेव को पुरानी आरपीएससी भवन के सामने से अगवा किया था। फिर हत्या कर शव को जायल तेजासर के निकट खेत में फेंक दिया था। गिरफ्तार आरोपियों को सोमवार को कोर्ट में पेश कर रिमांड पर लिया है।

पुलिस की पूछताछ में सामने आया कि ललिता नाराज थी कि सहदेव उसकी बहन करिश्मा को भगाकर ले गया। 13 जून को सहदेव परीक्षा देने के लिए अपने दोस्त के साथ अजमेर आया था। उसी दिन आरोपी ललिता भी परीक्षा देने अजमेर आई थी। ललिता के साथ उसका पति महिपाल भी था। दोनों ने रोडवेज बस स्टैंड पर सहदेव को बहला-फुसलाकर कैंपर गाड़ी में डालकर अपहरण के फरार हो गए। इसके बाद करिश्मा के पिता और अन्य लोगों ने युवक सहदेव की हत्या की थी, इसके बाद शव रातंगा गांव के खेत में फेंककर भाग गए थे।

सिविल लाइन थाना प्रभारी सिंह ने बताया कि मामले में अब तक कैंपर ड्राइवर नागौर निवासी कैलाश राम, करिश्मा के पहले पति का चाचा ससुर कुन्नाराम, करिश्मा की बड़ी बहन के पति राजू का रिश्तेदार ओमप्रकाश, करिश्मा का चाचा रामकिशोर तथा करिश्मा की बड़ी बहन ललिता और उसके जीजा महिपाल को गिरफ्तार किया है, जबकि मामले में पिता सहित तीन अन्य आरोपी अभी भी फरार है। करिश्मा नागौर के धारणा गांव की रहने वाली थी, महज 11-12 साल की थी, जब माता-पिता और परिवार वालों ने उसका बाल विवाह तय कर दिया था, उसने बाल विवाह स्वीकार नहीं किया था। इस बीच वह पास के ही तरनाऊ गांव में नर्सिंग की पढ़ाई करने कॉलेज गई थी। वहां कॉलेज में पढ़ाने वाले टीचर सहदेव भाकर से प्यार हो गया था। तब सहदेव के साथ जीवन बिताने की कसमें खाईं थी। उसके बाद सहदेव भाकर के घर रातंगा गांव में ही दोनों रहने लगे थे। करिश्मा के परिवार ने सहदेव को जान से मारने की धमकी दी थी। गौरतलब है कि सहदेव की हत्या के बाद करिश्मा ने भी फांसी का फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली थी।

ग्राम पंचायत स्यालोदड़ा में अंत्योदय शिविर में ग्रामीणों ने समस्याएं उठाई

पाटन, (निसं)। ग्राम पंचायत स्यालोदड़ा में सोमवार को पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़े के अंतर्गत एक दिवसीय जनसमस्या समाधान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में प्रशासनिक अधिकारियों की मौजूदगी में बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने अपनी समस्याएं रखीं। कैंप में मुख्य रूप से नीमकाथाना एसडीएम राजवीर यादव, पाटन तहसीलदार सुभाष चंद्र, नायब तहसीलदार भोम सिंह मीणा, पाटन प्रधान सुवालाल सैनी, सरपंच अनिल कुमार शर्मा सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे। अधिकारियों ने मौके पर ही कई समस्याओं का समाधान कर ग्रामीणों को राहत प्रदान की। ग्रामीणों ने जोहड़ में पानी की आवक की समस्या, गांव की भूमि पर क्रशर मालिक द्वारा किए गए अवैध कब्जे और सार्वजनिक रास्ते पर अतिक्रमण जैसे गंभीर मुद्दों को उठाया। इन समस्याओं को प्राथमिकता से सुनते हुए अधिकारियों ने आवश्यक कार्रवाई का आश्वासन दिया।

- अधिकारियों ने मौके पर ही कई समस्याओं का समाधान कर ग्रामीणों को राहत प्रदान की
- लोक देवता बाबा झुझार सेवा समिति ने बाबा झुझार मंदिर भूमि को मंदिर के नाम राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज करवाने हेतु ज्ञापन सौंपा

शिविर में ग्रामीणों ने प्रशासनिक अधिकारियों को समस्याओं को लेकर ज्ञापन दिया।

इस अवसर पर लोक देवता बाबा झुझार सेवा समिति द्वारा बाबा झुझार मंदिर भूमि को मंदिर के नाम राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज करवाने हेतु ज्ञापन सौंपा गया। ग्रामीणों ने बताया कि बाबा झुझार सैकड़ों वर्ष पूर्व गायों की रक्षा करते हुए युद्धभूमि में वीरगति को प्राप्त हुए थे और उनका नाम राजस्थान के गौरवशाली इतिहास में दर्ज है। आज भी वे गांव में लोकदेवता के रूप में पूजे जाते हैं, किंतु मंदिर की भूमि अब तक राजस्व अभिलेखों में शामिल नहीं हो पाई है। शिविर में आए ग्रामीणों ने इस पहल की सराहना की और प्रशासन से उम्मीद जताई कि उनकी वर्षों पुरानी समस्याओं का अब स्थायी समाधान होगा।

रील्स बनाने के चक्कर में युवक 150 फीट ऊंचाई से गिरा, मौत

चंबल नदी के तट के नजदीक बने मिनी गोवा में नहाने के लिए गए दो युवक भी बह गए, दोनों की मौत हो गई

कोटा, (निसं)। लोगों में सोशल मीडिया पर रील्स बनाने का खुमार ऐसा है कि इसके चक्कर में वो हादसे का शिकार हो रहे हैं। ऐसा ही एक मामला आरकेपुरम थाना क्षेत्र के गेपरनाथ महादेव पर भी सामने आया है। यहां पर जिले के कैथून से अपने दोस्तों के साथ पिकनिक मनाने पहुंचे एक युवक की 150 फीट ऊंचाई से गिरने से मौत हो गई है। वह दोस्तों के साथ रील्स बना रहा था और फोटोशूट कर रहा था। दूसरी तरफ कोटा से मध्य प्रदेश के भानपुरा के कंवला गांव में चंबल नदी के तट के नजदीक बने मिनी गोवा में नहाने के लिए गए दो युवक भी बह गए, जिनकी रविवार को भी काफी तलाश की गई। सोमवार सुबह भी उनकी तलाशी के लिए अभियान चलाया। सोमवार को चले तलाशी अभियान के दौरान दोनों मृतकों के शव बरामद हुए।

आरकेपुरम थाने के सहायक उप निरीक्षक रईस मोहम्मद ने बताया कि कैथून निवासी (19) अर्जुन अपने 7 से 8 दोस्तों के साथ गेपरनाथ महादेव पर गया था। घटना की सूचना पुलिस को कंट्रोल रूम से मिली थी जिसमें बताया गया कि एक लड़के का पैर स्लिप हो गया और वह नीचे चट्टान पर जा गिरा। मौके पर ही उसकी मौत हो गई। उसके साथ गए लड़कों में से एक ने ही पुलिस को सूचना की थी। मौके पर पहुंचे थाना अधिकारी महेंद्र मारू ने बताया कि युवक जहां से नीचे गिरा था वहां पहले पुलिस नीचे गई तो 150 फीट नीचे चट्टान पर उसका शव पड़ा हुआ था। उसके शव को मेडिकल कॉलेज के नए अस्पताल की मोर्चरी में रखवा दिया। युवक पढ़ाई के साथ-साथ मेडिकल शॉप पर भी जॉब करता था।

मृतक अर्जुन कहार के ताऊ का कहना है कि उसकी पहले से कुछ लड़कों से दुश्मनी थी। वह पहले भी धोखे से उसके साथ मारपीट कर चुके थे। उन्होंने पूरे प्रकरण की जांच की मांग पुलिस से की है। उनका कहना है कि अर्जुन को कुछ लोग धक्का भी दे सकते हैं। उसके साथ कैथून और रानपुर के लोग थे। यह कौन थे इनकी जांच होनी चाहिए।

दो दोस्त पानी में बहे:- कोटा के बालाकुंड शिवपुरा निवासी युवकों का एक समूह पिकनिक मनाने के लिए मिनी गोवा गया था। इनमें से दो युवक चेतन महावर और सोनू यादव बह गए। बीते कई घंटे से उनकी तलाश के लिए चंबल नदी में अभियान चलाया जिसके बाद दोनों के शव मिल गये। भाजपा नेता दीनू बंजारा ने बताया कि उनके इलाके के पांच अन्य युवक भी इसमें थे जिनमें बंटी, लोकेश, अजय, उमेश और दीपू शामिल हैं। चेतन और सोनू के ऊपर बैठकर गहरे पानी की तरफ चले गए थे। इस दौरान ट्यूब पलट गई और दोनों डूब गए। यह घटना रविवार दोपहर को हुई थी, जिसके बाद वहां पर तलाशी शुरू की गई। दोनों के परिजन भी मौके पर पहुंच गए। चेतन का शव झाड़ियों में फंसा मिला जबकि सोनू का शव सोमवार सुबह मिला है। चेतन पढ़ाई करने के बाद जॉब की तलाश में था। सोनू यादव इलेक्ट्रीशियन का काम करता था।

तेवड़ी की घाटी के जंगलों में अधेड़ का शव मिला

पावटा, (निसं)। विराटनगर थाना क्षेत्र के तेवड़ी गांव में घाटी के जंगलों में सोमवार शाम को एक अधेड़ का संदिग्ध अवस्था में शव मिला, जिससे इलाके में सनसनी फैल गई। थाना क्षेत्र के तेवड़ी गांव में घाटी के जंगलों में शाम पाचं बजे स्थानीय लोगों ने शव देखा और खबर आग की तरह फैल गई व देखते ही देखते मौके पर भीड़ जुटना शुरू हो गई। ग्रामीणों द्वारा विराटनगर थाना पुलिस को सूचना दी गई। सूचना पर वृत्ताधिकारी विराटनगर शिप्रा राजावत, विराटनगर थाना प्रभारी सोहन लाल मौके पर पहुंचे और जांच की। मृतक की पहचान प्रहलाद (55) पुत्र मूलचंद निवासी गुढ़ा चुरानी थाना के रूप में हुई। पुलिस ने मृतक के परिजनों को सूचना दे दी है।

मैं अपनी बड़ी बहन के चेहरे पर मुस्कान लाना चाहता था, और जब भी मेरे हाथ में गेंद होती थी तो मुझे उसके संघर्ष की याद आती थी।
- आकाश दीप

भारतीय गेंदबाज, मैच जीतने वाले प्रदर्शन को अपने बहन के नाम करते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

मनु भाकर

पेरिस ओलंपिक में दो मेडल जीतने वाली मनु भाकर को कजाकिस्तान में होने वाली 16वीं एशियाई चैंपियनशिप के लिए भारतीय निशानेबाजी टीम में जगह मिली है। 16 से 30 अगस्त तक होने वाले इस टूर्नामेंट के लिए सोमवार को 35 सदस्यीय टीम घोषित की गई है। मनु इसमें शामिल एकमात्र ऐसी निशानेबाज हैं जो दो व्यक्तिगत स्पर्धा में हिस्सा लेंगी।भारतीय राष्ट्रीय राइफल संघ द्वारा घोषित अन्य टीमें सितंबर-अक्टूबर में होने वाले आईएसएसएफ जूनियर वर्ल्ड कप और जूनियर एशियाई चैंपियनशिप के लिए हैं, जो सीनियर प्रतियोगिता के साथ ही होगी।

क्या आप जानते हैं ?... तेज गेंदबाज आकाश दीप ने बर्मिंघम में इंग्लैंड के खिलाफ एंडरसन-तेंदुलकर ट्रॉफी के दूसरे टेस्ट में अपने मैच जीतने वाले प्रदर्शन को अपनी बडी बहन को समर्पित किया।

सपाट पिच और ड्यूक्स बॉल इंग्लैंड में टेस्ट क्रिकेट के सार को खत्म कर रहा है : गिल

बर्मिंघम, 7 जुलाई। भारतीय टीम के कप्तान शुभमन गिल का मानना है कि सपाट पिचों और ड्यूक्स गेंद का संयोजन इंग्लैंड में टेस्ट क्रिकेट के सार को खत्म कर रहा है। इंग्लैंड को 336 रनों से हराने के बाद परिस्थितियों को लेकर पूछे गये सवाल के जवाब में गिल ने कहा, गेंदबाजो के लिए यह बहुत मुश्किल हो जाता है। जब विकेट से भी ज्यादा, गेंद बहुत जल्दी नरम और खराब हो जाती है। मुझे नहीं पता कि यह क्या है मौसम, विकेट या कुछ और लेकिन गेंदबाजों के लिए इन परिस्थितियों में विकेट लेना बहुत कठिन हो जाता है। एक टीम के रूप में, जब आपको पता होता है कि विकेट लेना मुश्किल है और रन आसानी से बन रहे हैं, तो ऐसे में बहुत सी चीजें आपके नियंत्रण से बाहर हो जाती हैं।

गिल ने एजबेस्टन में दो पारियों में 269 और 161 रन बनाने को लेकर कहा, कभी-कभी, विशेषकर जब आप कप्तान होते हैं, तो मुझे लगता है कि आपको उदाहरण पेश करना होता है ताकि जब भी कोई दूसरा खिलाड़ी उस स्थिति में हो, तो आप उस खिलाड़ी को निर्देश दे सकें। 'यही टीम को अभी चाहिए और आपको हमेशा अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं के बजाय टीम को पहले रखना चाहिए।' या कभी-कभी आप कुछ चीजे आजमाना चाहते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि अगर आप टीम को अपने से आगे रखते हैं, तो आप हमेशा सही दिशा में या सही रास्ते पर चलेंगे और यही मैं इस मैच में करना चाहता था। जब मैं मैदान पर हूं यथासंभव लंबे समय तक खेलना चाहता हूं। जब तक कोई अच्छी गेंद मुझे आउट कर देती है।

भारत की बल्लेबाजी की पूरी ताकत को देखने के बाद गिल ने मजाक में कहा कि उन्हें उम्मीद नहीं थी कि इंग्लैंड फिर से इतनी सपाट पिच बनाएगा। जब उनसे पूछा गया कि क्या उन्हें मध्य ओवरों के दौरान कुलदीप यादव की कलाई की स्पिन की कमी खलती है। उन्होंने कहा कि उनके लिए कुलदीप जैसी गुणवत्ता वाले गेंदबाज को बाहर रखना आसान नहीं था, लेकिन उन्हें लगा कि उन्हें थोड़ी गहराई की आवश्यकता है जो वॉशिंगटन सुंदर दे सकते थे और उन्होंने दी भी।

भारत को इतने लंबे टेस्ट मैच खेलने की आदत नहीं है। घरेलू पिचों पर स्पिन को मदद मिलती है और जब भारत बाहर खेलता है तो उसे हरी घास वाली पिच मिलती है। उन्होंने कहा, निश्चित रूप से इससे हमें बहुत मदद मिली। मैं कहूंगा कि भारत में जब हम खेलते हैं तो अधिकतर टेस्ट मैच पांच दिन तक नहीं चलते। लेकिन सौभाग्य से जब हम यहां खेलते हैं तो ज्यादातर दिन हम बल्लेबाजी करते हैं और क्षेत्ररक्षण नहीं करते, इसलिए यह हमारे लिए अच्छा है। पहली पारी में भी, मुझे लगता है कि हमने लगभग 90 ओवर क्षेत्ररक्षण किया, जो लगभग एक दिन के बराबर है। इसलिए मुझे लगता है कि यह अच्छा है। मुझे लगता है कि सीरीज में भी, आने वाले मैचों में अगर आप लगातार रन बनाने में सक्षम हैं और 400 या 300 के आसपास का स्कोर बनाते हैं, तो हम हमेशा खेल में बने रहेंगे।

उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि कम से कम थोड़ी मदद तो मिलनी ही चाहिए। अगर गेंद कुछ कर रही है, तो आपको खेलने में मजा आता है। अगर आपको पता है कि मदद केवल 20 ओवर में ही मिलेगी और फिर आपको शेष दिन रक्षात्मक होकर यह सोचना है कि रन कैसे रोकें, तो खेल अपना सार खो देता है।

भारत की पहली जीत के बाद बड़ा फेरबदल, वर्ल्ड टेस्ट चैम्पियनशिप की लेटेस्ट पॉइंट टेबल

बर्मिंघम, 7 जुलाई। शुभमन गिल की कप्तानी में टीम इंडिया ने एजबेस्टन टेस्ट में इंग्लैंड को पटकनी देकर वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप 2025-27 चक्र में अपनी पहली जीत दर्ज की है। भारत ने इस दौरान इंग्लिश टीम को 336 रनों के बड़े अंतर से हराया। ये भारत की इतिहास में विदेशी जमीं पर सबसे बड़ी जीत है। इस जीत के साथ ही डब्ल्यूटीसी की अंक तालिका में भी बदलाव हुआ है। ऑस्ट्रेलिया और श्रीलंका टॉप 2 में मौजूद हैं। ऑस्ट्रेलिया ने 2 में से 2 मैच जीते हैं, 24 अंकों के साथ वह पहले नंबर पर है। दूसरे नंबर पर श्रीलंका है, जिसने 1 मैच जीता है और एक मैच ड्रॉ खेला है। श्रीलंका के 16 अंक हैं। टीम इंडिया इस जीत के बाद तीसरे नंबर पर आ गई है। टीम इंडिया ने 1 मैच जीता और 1 हारा है। इस टेस्ट से पहले इंग्लैंड टॉप 2 में थी, लेकिन अब खिसककर चौथे नंबर पर आ गई है। भारत और इंग्लैंड के 12-12 अंक हैं।

लॉर्ड्स टेस्ट से पहले इंग्लैंड कप्तान स्टोक्स ने मानी हार!

बर्मिंघम, 7 जुलाई। टीम इंडिया के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह एजबेस्टन टेस्ट में नहीं खेले लेकिन इसके बावजूद इंग्लैंड को भारतीय टीम ने घुटनों पर ला दिया। भारत ने एजबेस्टन टेस्ट 336 रनों से जीता। वहीं अब इस करारी हार के बाद इंग्लैंड की टीम में खौफ का माहौल है। बेन स्टोक्स दरअसल, बुमराह की वापसी को लेकर परेशान हैं।

उन्होंने तो यहां तक कह दिया कि जसप्रीत बुमराह जैसे गेंदबाज के खिलाफ तैयारी करना ही नामुमकिन है।दरअसल, एजबेस्टन टेस्ट जीतने के बाद भारतीय कप्तान शुभमन गिल ने कहा कि बुमराह 10 जुलाई से शुरू होने वाले तीसरे टेस्ट में वापसी करेंगे स्टोक्स इस बार से ज्यादा खुश नहीं थे कि उन्हें एक बार फिर बुमराह के बारे में सवालों के जवाब देने होंगे।

बेन स्टोक्स ने कहा कि, मैंने सोचा था कि मैं बिना जसप्रीत बुमराह के सवाल के प्रेस कॉन्फ्रेंस पूरी कर लूंगा। हम इतनी बार एक-दूसरे के खिलाफ खेलते हैं कि हमें पता है कि क्या सामना करना पड़ेगा। हम इसे ट्रेनिंग में भी लागू करते हैं। हम साइड आर्म गेंदबाजी के खिलाफ प्रैक्टिस करते हैं लेकिन वो बुमराह मैच में करते हैं वैसा प्रैक्टिस में कर पाना मुश्किल होता है।

जसप्रीत बुमराह लॉर्ड्स में वापसी करेंगे तो क्या इंग्लैंड की टीम जोफ्रा आर्चर को उतारेगी?

इस पर स्टोक्स ने कहा कि वो उनकी हालत देखकर ही कोई फैसला लेंगे। स्टोक्स का मनना है कि एक टीम के तौर पर इंग्लैंड को संतुलित रहना होगा, न तो जीत के बाद बहुत उत्साहित होना चाहिए और न ही हार के बाद बहुत निराश। उन्होंने कहा कि, हमने कुछ बेहतरीन जीत हासिल की हैं और कुछ बुरी हार भी देखी हैं। मुझे लगता है कि मैं और मेरी टीम इन उतार-चढ़ावों में संतुलित रहने में अच्छे हैं।

पृथ्वी शॉ महाराष्ट्र के लिए खेलेंगे

मुम्बई, 7 जुलाई। महाराष्ट्र क्रिकेट संघ ने कहा है कि पृथ्वी शॉ घरेलू क्रिकेट में अब महाराष्ट्र के लिए खेलेंगे। महाराष्ट्र क्रिकेट के अध्यक्ष रोहित पवार ने कहा कि शॉ का अंतरराष्ट्रीय और आईपीएल अनुभव कीमती है और टीम आने वाले सत्रों में 'पृथ्वी के इस नए सफर में पूरी मजबूती से साथ खड़ी' रहेगी। शॉ ने एक बयान में कहा, अपने करियर के इस पड़ाव पर महाराष्ट्र टीम से जुड़ना मेरे क्रिकेट करियर के विकास में मदद करेगा। मैं मुंबई क्रिकेट संघ का वर्षों से मिले अवसरों और समर्थन के लिए बेहद आभारी हूं। पिछले रणजी ट्रॉफी में टीम को सात में से केवल दो जीत मिली थी और वे अपने ग्रुप से क्वालिफाई नहीं कर सके। सैयद मुश्ताक अली टी-20 ट्रॉफी के ग्रुप चरण में भी 3-3 के जीत-हार का रिकॉर्ड रहा। टीम पहले दौर में ही बाहर हो गई। लेकिन विजय हजारे ट्रॉफी की एक-दिवसीय प्रतियोगिता में महाराष्ट्र ने अपने ग्रुप में शीर्ष स्थान हासिल किया और सेमीफाइनल में वे विदर्भ से हार गए थे। शॉ ने 58 प्रथम श्रेणी मुकाबलों में 46.02 की औसत से 4556 रन बनाए हैं, लेकिन पिछले वर्ष उन्हें खराब फिटनेस और अनुशासन की कमी के चलते मुंबई रणजी टीम से बाहर कर दिया गया था। उन्होंने आखिरी बार मुंबई के लिए दिसंबर 2024 में सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी के फाइनल में खेला था। लिस्ट-ए मुकाबलों में उनके नाम 55.72 की औसत और 125.74 के स्ट्राइक रेट के साथ 3399 रन हैं। टी-20 मैचों में उन्होंने 51.54 के स्ट्राइक रेट और 25.01 की औसत से 2902 रन बनाए हैं। वह आईपीएल 2025 की बड़ी नीलामी में भी नहीं बिके थे। उल्लेखनीय है कि पिछले महीने शॉ ने मुंबई से टीम बदलने के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) मांगा था। जून के आखिरी में एनओसी मिल गई थी। उस समय शॉ ने कहा था, अपने करियर के इस मोड़ पर मुझे एक और राज्य संघ के अंतर्गत पेशेवर क्रिकेट खेलने का एक अच्छा अवसर मिला है, जो मुझे एक क्रिकेटर के रूप में और अधिक विकसित होने में मदद करेगा।

भारत की जीत में 7 अंक का रहा अहम योगदान

नई दिल्ली, 7 जुलाई। भारत ने इंग्लैंड के खिलाफ दूसरे टेस्ट में बर्मिंघम में अपनी पहली टेस्ट जीत दर्ज की और इस जीत में सात अंक का महत्वपूर्ण योगदान रहा। क्रिकेट के आंकड़ेविद श्रीकांत पोद्दार ने बताया कि इस जीत में सात अंकों की कहीं न कहीं प्रधानता दिखाई दी। यह मैच साल के सातवें महीने में खेला गया और इसका अंत 187वें दिन हुआ। पहली पारी में भारत ने 587 और दूसरी पारी में 427 रन बनाये। इंग्लैंड ने पहली पारी में 407 रन बनाये। पहली पारी में भारत के दो खिलाड़ी एक ही स्कोर पर आउट हुए। आठवां और नौवां विकेट 574 के स्कोर पर गिरा। इंग्लैंड के भी दो खिलाड़ी एक ही स्कोर पर आउट हुए। इंग्लैंड ने 407 के स्कोर पर नौवां और दसवां विकेट गंवाया।

श्रीकांत ने बताया कि इस मैच की सबसे बड़ी साझेदारी 303 रन की रही जोकि 387 के स्कोर पर टूटी। भारत ने पहले दिन की समाप्ति पर सात विकेट अपने हाथ में रखे और दूसरे दिन सात विकेट गंवाए और 277 रन बनाये। इंग्लैंड ने दूसरे दिन भी सात विकेट हाथ में रखते हुए 77 रन बनाये और तीसरे दिन सात विकेट गंवाए।

भारत ने मैच की दोनों पारी में कुल 1014 रन बनाये जिसका एक पारी का औसत 507 आता है। इस मैच में लंच से पहले सबसे ज्यादा रन तीसरे दिन बने जो 172 रन थे। श्रीकांत ने बताया कि इंग्लैंड की दूसरी पारी 271 रन पर सिमटी और भारत के दो गेंदबाजों ने इंग्लैंड के कुल 17 विकेट लिए। मोहम्मद सिराज ने दोनों पारियों में सात और आकाशदीप सिंह ने 10 विकेट लिए।

संजोग गुप्ता आईसीसी के नए मुख्य कार्यकारी अधिकारी नियुक्त

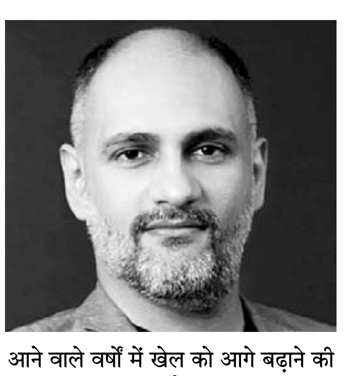

दुबई, 7 जुलाई। संजोग गुप्ता को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) का मुख्य कार्यकारी अधिकारी नियुक्त किया गया है। संजोग गुप्ता सोमवार को आईसीसी के सातवें मुख्य कार्यकारी के तौर पर इस वर्ष जनवरी में पद छोडने वाले ज्योफ एलार्डिस का स्थान लेंगे। इससे पहले संजोग जियोस्टार में खेल और लाइव अनुभव के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) थे।

आईसीसी के अध्यक्ष जय शाह ने एक बयान में कहा, मुझे यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि संजोग गुप्ता को आईसीसी का सीईओ नियुक्त किया गया है। संजोग के पास खेल रणनीति और व्यावसायीकरण का व्यापक अनुभव है, जो आईसीसी के लिए अमूल्य होगा। वैश्विक खेलों के साथ-साथ मीडिया और मनोरंजन परिदृश्य की उनकी गहरी समझ, क्रिकेट प्रशंसकों के दृष्टिकोण और प्रौद्योगिकी के प्रति उनके जुनून के बारे में उनकी निरंतर जिज्ञासा के साथ मिलकर आने वाले वर्षों में खेल को आगे बढ़ाने की हमारी महत्वाकांक्षा में आवश्यक साबित होगी। उन्होंने कहा, हमारा लक्ष्य पारंपरिक सीमाओं से आगे बढ़ना और क्रिकेट को ओलंपिक में एक नियमित खेल के रूप में स्थापित करना है, दुनिया भर में इसका विस्तार करना और इसके मुख्य बाजारों में इसकी जड़ें गहरी करना है।

आईसीसी ने कहा, इस पद के लिए 25 देशों के उम्मीदवारों से 2500 से अधिक आवेदन आए थे, जो इस पद की अंतरराष्ट्रीय अपील और महत्व को दर्शाता है। उम्मीदवारों में खेल के शासी निकायों से जुड़े अगुवा से लेकर विभिन्न क्षेत्रों के वरिष्ठ कॉर्पोरेट अधिकारी शामिल थे।

अपनी नियुक्ति को लेकर संजोग गुप्ता ने कहा, यह अवसर मिला सौभाग्य की बात है, खास तौर पर ऐसे समय में जब क्रिकेट अभूतपूर्व विकास के लिए तैयार है और दुनिया भर में लगभग दो अरब प्रशंसकों का जोशीला समर्थन प्राप्त है। यह खेल के लिए रोमांचक समय है क्योंकि प्रमुख आयोजनों का कद बढ़ रहा है, व्यावसायिक रास्ते बढ़ रहे हैं और महिलाओं के खेल जैसे अवसरों की लोकप्रियता बढ़ रही है। लॉस एंजिल्स 2028 ओलंपिक खेलों में क्रिकेट का शामिल होना और प्रौद्योगिकी अपनाने में तेजी से वृद्धि दुनिया भर में क्रिकेट के लिए बल-गुणक के रूप में कार्य कर सकती है।

श्रीलंका ने बांग्लादेश के खिलाफ टी-20 सीरीज के लिए टीम की घोषणा की

कोलंबो, 7 जुलाई। श्रीलंका ने गुरुवार से बंगलादेश के खिलाफ शुरू होने वाली तीन टी-20 मैचों की सीरीज में के लिए अपनी टीम की घोषणा कर दी है।श्रीलंकाई चयनकर्ताओं ने टीम ऑलराउंडर दासुन शनाका और चामिका करूणारत्ने को चुना है। दासुन शनाका लगभग एक साल बाद टीम में वापसी कर रहे हैं। पिछले साल टी-20 में पदार्पण करने वाले 22 वर्षीय खिलाड़ी ने अब तक केवल चार मैच खेले है। टीम में ईशान मलिंगा को भी जगह दी गई हैं। बंगलादेश के खिलाफ टी-20 सीरीज के लिए श्रीलंका की टीम इस प्रकार है:- चैरिथ असलांका (कप्तान), पथुम निसांका, कुसल मेंडिस, दिनेश चांडीमल, कुसल परेरा, कामिंदु मेंडिस, अविष्का फर्नांडो, दासुन शनाका, डुनिथ वेलालेज, वानिंदु हसरंगा, महेश तीक्षणा, जेफरी वेंडरसे, चमिका करुणारत्ने, मथीशा पथिराना, नुवान तुषारा, बिनुरा फर्नांडो और ईशान मलिंगा। श्रीलंका बनाम बंगलादेश पहला टी-20 मैच 10 जुलाई को पल्लेकेले, दूसरा मैच 13 जुलाई को दांबुला में तथा तीसरा मुकाबला 16 जुलाई को कोलंबो में खेला जायेगा।

कनक ने लहराया भारत का परचम

लखनऊ, 7 जुलाई। लखनऊ स्थित डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय की छात्रा स्वाति और कनक सिंह ने युगांडा पैरा बैडमिंटन इंटरनेशनल टूर्नामेंट 2025 में स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक जीतकर भारत का मान बढ़ाया है। स्वाति ने महिला एकल एसयू-5 वर्ग में रजत, महिला युगल एसएल3-एसयू5 में स्वर्ण और मिक्स्ड डबल्स में कांस्य पदक हासिल किया। एक से छह जुलाई तक युगांडा की राजधानी कैंपाला में आयोजित इस प्रतियोगिता में 50 से अधिक देशों के पैरा बैडमिंटन खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया।

वेस्टइंडीज को 133 रनों से हराकर ऑस्ट्रेलिया ने सीरीज में बनाई अजेय बढ़त

सेंट जॉर्ज, 7 जुलाई। नेथन लायन और मिचेल स्टार्क (तीन-तीन विकेट) की शानदार गेंदबाजी के दम पर ऑस्ट्रेलिया ने दूसरे टेस्ट मैच के चौथे दिन वेस्टइंडीज को 133 रनों से हरा दिया। इसी के साथ ऑस्ट्रेलिया ने तीन टेस्ट मैचों की सीरीज में 2-0 से अजेय बढ़त बना ली हैं।

ऑस्ट्रेलिया द्वारा दिये गये 277 रनों के लक्ष्य जवाब में दूसरी पारी में बल्लेबाजी करने उतरी वेस्टइंडीज के बल्लेबाज ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाजी आक्रमण के आगे अधिक देर तक नहीं टिक सकी और उनकी पूरी टीम 34.3 ओवर में 143 रन पर सिमट गई। कप्तान रॉस्टन चेज ने वेस्टइंडीज के लिए सर्वाधिक 34 रन बनाये। इसके आलवा शमार जोसेफ (24), शाई होप (17), ब्रैंडन किंग (14), अल्जारी जोसेफ (13) और केसी कार्टी (10) रन बनाकर आउट हुये। एंडरसन फिलीप 11 रन बनाकर नाबाद रहे। पहली पारी में 60 और दूसरी परी में 30 रन बनाने वाले एलेक्स कैरी को उनकी शानदार बल्लेबाजी के लिए प्लेयर ऑफ द मैच से नवाजा गया।

मुल्डर दक्षिण अफ्रीका के लिए तिहरा शतक बनाने वाले दूसरे बल्लेबाज बने

बुलवायो, 7 जुलाई। दक्षिण अफ्रीका के कप्तान वियान मुल्डर ने टेस्ट क्रिकेट का इतिहास का पांचवां सबसे बड़ा व्यक्तिगत स्कोर बनाते हुए 334 गेंदों पर नाबाद 367 रनों की पारी खेलकर रिकार्ड बनाया। मुल्डर ने इस पारी में 49 चौके चार चार छक्के लगाते हुए 109.88 के स्ट्राइक रेट से नाबाद 367 रन बनाकर टेस्ट क्रिकेट में तिहरा शतक बनाने वाले दूसरे दक्षिण अफ्रीकी बल्लेबाज बनने की उपलब्धि हासिल की। उनसे पहले हाशीम अमला ने 2012 में नाबाद 311 रन बनाए थे। हालांकि वह ब्रायन लारा के नाबाद 400 रन के सर्वश्रेष्ठ व्यक्तिगत रिकॉर्ड को तोड़ने से चूक गए। उन्होंने 297 गेंदों में अपना तिहरा शतक पूरा किया। उन्होंने दूसरा सबसे तेज तिहरा शतक बनाया। पहले नंबर पर वीरेंद्र सहवाग हैं, जिन्होंने 2008 में दखिण अफ्रीका के खिलाफ 278 गेंदों में तिहरा शतक बनाया था। लंच से पहले मुल्डर लैन हटन के 364 और गैरी सोबर्स के नाबाद 365 को पार कर गए। इसके साथ ही वह टेस्ट इतिहास में शीर्ष पांच व्यक्तिगत स्कोर बनाने वाले बल्लेबाजों शूमार हो गए। उनसे ऊपर सिर्फ महेला जयवर्धने (374), ब्रायन लारा (375), मैथ्यू हेडन (380) और ब्रायन लारा (नाबाद 400) हैं।

महिला क्रिकेट में स्पेशल टास्क एडवोकेट टीम बनी चैम्पियन

जयपुर, 7 जुलाई। वीरांगना वेलफेयर के तत्वावधान में आयोजित वूमेन प्रीमियर क्रिकेट लीग 2025 का जय क्लब में फाइनल हुआ।क्रिकेट प्रतियोगिता में महिला खिलाडियों ने उत्कृष्ट खेल भावना का परिचय देते हुए खेल प्रतिभा का परिचय भी दिया। फाइनल मुकाबले पहले बल्लेबाजी करते हुए सिंन्दूर टीम ने 8.3 ओवर में 36 रन बनाएं इसमें सर्वाधिक रन अनन्या 9 रन, शानू 5 रन, मनस्वी 1 रन, चारु 1 रन, यशस्वी 1 रन बनाए जिसमें स्पेशल टॉक एडवोकेट में गेंदबाजी करते हुए ईरान ने 2 ओवर 3 विकेट लिए सानिया ने दो बार में एक विकेट लिया रिद्धिमा ने एक ओवर में 1विकेट लिया स्पेशल टॉक एडवोकेट ने बल्लेबाजी करते हुए 40 रन बनाए आगे जिसमें सर्वाधिक सानिया ने रन 18 ,रिद्धिमा ने 10 रन, आरती 5 रन, ईरान 4 रन , माफिया 1 रन ने बनाए सिंन्दूर टीम में गेंदबाजी करते हुए यशस्वी ने 2 ओवर में एक विकेट लिए और मनस्वी ने 2 ओवर में एक विकेट लिया और शानू ने एक रन आउट किया स्पेशल टास्क एडवोकेट टीम विजय हुई मैन ऑफ द मैच सानिया रही। वूमेन प्रीमियर क्रिकेट लीग 2025 के फाइनल के अवसर पर मुख्य अतिथि के उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी विश्नोई विशिष्ट बाबा यश शर्मा मौजूद रहे।अतिथियों ने कहा कि वीरांगना वेलफेयर का यह प्रयास सराहनीय और प्रेरणादायक है। 3 जुलाई से 6 जुलाई 2025 तक जय क्लब, जयपुर में आयोजित हो था। इस चार दिवसीय महिला क्रिकेट प्रतियोगिता में कुल 6 टीमें भाग लिया । प्रतियोगिता लीग-कम-नॉकआउट प्रारूप में खेली जा रही है, जिसमें कुल 9 मैच हुए । विजेता टीम को 21,000 का नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति-पत्र और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया किया । वीरांगना वेलफेयर अध्यक्ष श्रीमती सीमा राठौड़ ने कहा, यह आयोजन महिला खिलाडियों के आत्मबल को मजबूती देगा और उन्हें खेल के जरिए समाज में नई पहचान दिलाने का अवसर प्रदान करेगा। वूमन प्रीमियर क्रिकेट लीग 2025 केवल एक खेल प्रतियोगिता नहीं, बल्कि नारी शक्ति के जज्बे और संघर्ष का उत्सव है। वूमेन प्रीमियर क्रिकेट लीग सहयोग के रूप में अल्फा फीमेल राइडर्स, बाइक राइडर्स ग्रुप, अखिल भारतीय क्षित्रय महासभा ट्रस्ट रहे।

शाहपुरा खेल स्टेडियम में ग्रीष्मकालीन क्रीड़ा प्रशिक्षण शिविर क्रीड़ा परिषद द्वारा आयोजित

जयपुर, 7 जुलाई। राजस्थान सरकार द्वारा संचालित "पंच गौरव" के तहत एक जिला एक खेल के अंतर्गत शाहपुरा स्टेडियम पर कबड्डी खेल की कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमे जिला खेल अधिकारी मानसिंह द्वारा कबड्डी खेल की विस्तृत जानकारी दी गई। साथ ही राजस्थान सरकार के द्वारा खेलो में आउट ऑफ टर्न के द्वारा सीधी भर्ती की जानकारी दी। स्टेडियम में बालक वर्ग में कबड्डी की प्रतियोगिता आयोजित की गई ।आयोजन में लगभग 200 खिलाड़ी उपस्थित थे। शाहपुरा खेल स्टेडियम में ग्रीष्मकालीन क्रीडा प्रशिक्षण शिविर क्रीड़ा परिषद द्वारा आयोजित किया गया था। खेल अधिकारी द्वारा नियमित प्रशिक्षणार्थियों को टी-शर्ट एवं प्रमाणपत्र दिए गए एवं खिलाड़ियों हेतु चने के कट्टे दिए। कार्यक्रम के दौरान अनेक एथेलेटिक्स,कुश्ती, कबड्डी खिलाड़ी एवं अल्पकालीन प्रशिक्षक मौजूद रहे।

भारतीय फुटबॉल टीम फीफा महिला विश्व कप 2027 के लिए क्वालीफाई कर सकती है

नई दिल्ली, 7 जुलाई। भारतीय महिला फुटबॉल टीम इतिहास रचते हुए 22 साल बाद एएफसी महिला एशियन कप 2026 में जगह बनाई है। दरअसल, ब्लू टाइग्रेसेस ने थाईलैंड को 2-1 से हराकर अगले साल ऑस्ट्रेलिया में होने वाले महिला एशियाई कप में अपनी जगह पक्की कर ली है। वहीं अब इस गौरवशाली पल के बाद अब उम्मीद जताई जा रही है कि यही टीम 2027 फीफा महिला वर्ल्ड कप के लिए भी क्वालीफाई कर सकती है। 2027 फीफा विमेंस वर्ल्ड कप के लिए क्लावीफाई कर सकती है भारतीय टीम? एएफसी महिला एशियाई कप 2026 में भाग लेने वाले 12 देशों में से एक के रूप में भारत के पास पहली बार फीफा महिला वर्ल्ड कप के लिए क्वालीफाई करने और इतिहास रचने का बेहतरीन मौका है। यहां कुछ तथ्यों के आधार पर जानें ये कैसे मुमकिन हो सकता है- कुल 12 देशों को चार-चार के तीन ग्रुप में बांटा गया है। जिसमें हर टीम एक राउंड-रॉबिन खेलेगी। समूह विजेता, उपविजेता और दो सर्वश्रेष्ठ तीसरे स्थान वाली टीमें क्वार्टर फाइनल में पहुंचेगी।

अल्काराज, सबालेंका विंबलडन के क्वार्टर फाइनल में पहुंचे

लंदन, 7 जुलाई। गत चैंपियन कार्लोस अल्काराज ने एंड्री रुबलेव और महिला वर्ग में शीर्ष वरीयता प्राप्त आर्यना सबालेंका ने एलिस मर्टेंस पर जीत दर्ज कर विंबलडन टेनिस टूर्नामेंट के क्वार्टरफाइनल में जगह बना ली है। रविवार को खेले गये मुकाबले में स्पेन के दिग्गज टेनिस खिलाड़ी अल्काराज ने 14वीं वरीयता प्राप्त रुबलेव के खिलाफ पहला सेट गंवाने के बाद वापसी करते हुए 6-7 (5), 6-3, 6-4, 6-4 से जीत दर्ज की। 22 वर्षीय स्पैनियार्ड ने दूसरे और तीसरे सेट में महत्वपूर्ण ब्रेक पॉइंट को भुनाया और चौथे सेट में एक और ब्रेक के साथ मैच अपने नाम कर लिया। अब अगले दौर में अल्काराज का मुकाबला ब्रिटेन के कैमरून नोरी से होगा। नोरी ने पांच सेटों के मैराथन में चिली के निकोलस जैरी को 6-3, 7-6 (4), 6-7 (7), 6-7 (5), 6-3 से हराया। वहीं पांचवीं वरीयता प्राप्त टेलर फ्रिट्ज ने अपने सर्वश्रेष्ठ विंबलडन प्रदर्शन की बराबरी करते हुए क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया।

रोहित गावेनदर की घातक गेंदबाजी से जीती रेलवे क्रिकेट अकादमी

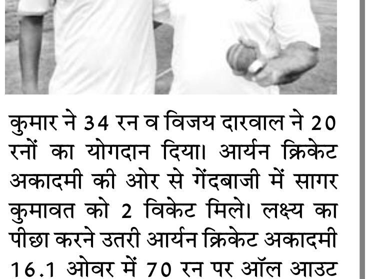

जयपुर, 7 जुलाई। सोनी क्रिकेट स्टेडियम पर चल रहे सोनी कप में रेलवे क्रिकेट अकादमी ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 139/5 रन बनाए। जिसमें उत्कर्ष सैनी ने नाबाद 53 रन व उदय सिंह राजावत ने नाबाद 26 रन का योगदान दिया। टीसीए क्रिकेट अकादमी की ओर से गेंदबाजी में मोहन सैनी ने 2 विकेट लिए।

लक्ष्य का पीछा करने उतरी टी सी ए क्रिकेट अकादमी मात्र 40 रन पर ऑल आउट हो गई। जिसमें अधिकतम शिव ने 9 रनों का योगदान दिया। रेलवे क्रिकेट अकादमी की ओर से गेंदबाजी में रोहित गावेनदर ने 6 विकेट व रिंकू ने 3 विकेट लिए। मैन ऑफ द मैच रोहित गावेनदर रहे।

रफीक जोया की घातक गेंदबाजी से जीती आर डी क्लब- दिन का दूसरा मैच आर डी क्लब व आर्यन क्रिकेट अकादमी के बीच खेला गया। जिसमें आर डी क्लब ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवर में 99/6 रन बनाए। जिसमें अनिल कुमार ने 34 रन व विजय दारवाल ने 20 रनों का योगदान दिया। आर्यन क्रिकेट अकादमी की ओर से गेंदबाजी में सागर कुमावत को 2 विकेट मिले। लक्ष्य का पीछा करने उतरी आर्यन क्रिकेट अकादमी 16.1 ओवर में 70 रन पर ऑल आउट हो गई। जिसमें आयुष शर्मा ने 18 रन व सनी ने 15 रनों का योगदान दिया। आर डी क्लब की ओर से गेंदबाजी में रफिक जोया ने 4 विकेट व अनिल कुमार को 2 विकेट मिले। मैन ऑफ द मैच रफीक जोया रहे।

राजस्थान के वुशू खिलाड़ियों ने एशिया कप में जीते पदक

जयपुर, 7 जुलाई। वुशू फेडरेशन ऑफ़ एशिया के तत्वावधान में दिनांक 2 से 7 जुलाई 2025 तक जिलिन, चीन में आयोजित एशिया कप वुशू प्रतियोगिता में भाग लेने वाली भारतीय वुशू टीम में राजस्थान के खिलाडियों ने 01 रजत व 02 कांस्य पदक जीत राजस्थान प्रदेश व देश का मान बढाया।

हीरानंद कटारिया, उपाध्यक्ष, भारतीय वुशू संघ व अध्यक्ष, राजस्थान वुशू संघ ने बताया कि महक शर्मा ने 75 किलोग्राम भारवर्ग में रजत पदक, जहान्वी मेहरा ने 56 किलोग्राम भारवर्ग में कांस्य पदक व नीतिका बंसल ने 65 किलोग्राम भारवर्ग में कांस्य पदक जीत प्रदेश का गौरव बढाया। राजेश कुमार टेलर, वुशू कोच ने बताया कि महक शर्मा का फाइनल मुकाबले में चीन के खिलाडी बो जियांग से हार का सामना करना पडा तथा जहान्वी मेहरा का सेमीफाइनल मुकाबले में हांगकांग के खिलाडी चिंग चेन से तथा नीतिका बंसल का सेमीफाइनल मुकाबले में वियतनाम के खिलाड़ी गुयेन थिंगोकान्ह से कड़े मुकाबले में हार का सामना करना पड़ा। जहान्वी, नीतिका व महक के पदक जीतने पर राजस्थान वुशू संघ व सभी पदाधिकारियों ने बधाई प्रदान की।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा एवं केन्द्रीय कोयला व खान मंत्री जी. किशन रेड्डी ने सोमवार को राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर में भारतीय खान ब्यूरो द्वारा आयोजित खदानों के सम्मान समारोह में 7 एवं 5 स्टार रेटिंग वाली खदानों के प्रतिनिधियों को सम्मानित किया।

'अशोक गहलोत सुर्खियों में रहना बंद कर, धरातल पर आयें'

संसदीय कार्यमंत्री जोगा राम पटेल ने कहा कि गहलोत की पार्टी का अध्यक्ष ही उनकी बात खारिज कर रहा है

- **पटेल ने कहा कि गहलोत को समझना चाहिये कि समय के साथ सभी किनारे आते हैं। उन्हें इसे सहन करना चाहिये व अपनी पार्टी के नये लोगों को आशीर्वाद देना चाहिये।**

जोधपुर, 7 जुलाई (कासं)। संसदीय कार्य, विधि एवं विधिक कार्य मंत्री जोगाराम पटेल ने कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को सुर्खियों में रहना बंद करके धरातल पर आना चाहिए, क्योंकि उनके बयानों को उनकी पार्टी के अध्यक्ष ही खारिज कर रहे हैं। पटेल ने सोमवार को सर्किट हाउस में मीडिया से बात करते हुए पूर्व मुख्यमंत्री गहलोत की ओर से गत दिनों मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को हटाने के षड्यंत्र संबंधी बयान को लेकर पूछे गए सवाल के जवाब में यह बात कही।

पटेल ने कहा कि वे कहते हैं, सीएम हट जाएंगे, जबकि उनके नेता गोविंद डोटासरा कहते हैं कि सरकार पांच साल चलेगी, गहलोतजी के पास कोई शिगूफा आया होगा। ऐसे में उनको सुर्खियों में रहना बंद करके धरातल पर आना चाहिए। पटेल ने कहा कि गहलोत ने केन्द्रीय मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत के साथ समझौते के लिए बात की है, जिसका जवाब केन्द्रीय मंत्री ने दिया है, क्योंकि एक पुत्र के मन में अपनी मां के अपमान के प्रति स्वभाविक पीड़ा होती हैं। पटेल ने गहलोत पर तंज कसते हुए कहा कि उनको यह समझना चाहिए कि समय के साथ धीरे-धीरे सभी लोग किनारे आते हैं, इसलिए इसे सहन करना चाहिए। अपनी पार्टी के नए लोगों को आशीर्वाद देना चाहिए।

पटेल ने कहा कि प्रदेश में सीएम बदलने की कोई कवायद नहीं है। हमारे नेतृत्व ने साफ कहा है कि हमारे यहां सीएम पांच साल के लिए बनता है, इसलिए सीएम बदलने का सवाल ही नहीं हैं। राजस्थान में भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में विकास हो रहा है। इस कारण पीएम खुद तीन दौरे लगातार कर चुके हैं, इसलिए भजनाल शर्मा पूरे पांच साल काम करेंगे और प्रदेश का विकास करते रहेंगे और अगले टर्म में भी सीएम भजनलाल शर्मा ही होंगे।

पूर्व मुख्यमंत्री गहलोत और केन्द्रीय मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत के बीच मानहानि के मामले को लेकर चल रहे विवाद पर पटेल ने कहा कि अशोक गहलोत ने रिपोर्ट को देखकर उनकी माताजी का नाम लिया, यदि ऐसा है तो वे उसे सामने रखें। पटेल ने दावा किया कि जो रिपोर्ट जांच एजेंसी एसओजी ने कोर्ट में पेश की है, उसमें, ऐसी किसी भी रिपोर्ट में, शेखावतजी की माताजी सहित किसी सदस्य का नाम नहीं है। सिर्फ राजनीतिक प्रतिद्वंदिता के चलते आरोप लगाए थे। अब कह रहे हैं कि समझौता कर लो। इसके लिए शेखावत ने इनकार किया है।

मंत्री पटेल ने हनुमान बेनीवाल के उस आरोप का खंडन किया, जिसमें उन्होंने कहा था कि भाजपा के नेता बिना अधिकार सरकारी आवास में रह रहे हैं। पटेल ने कहा कि हमारा कोई भी नेता या विधायक बिना अधिकार के सरकारी आवास में नहीं रह रहा है। उनको क्या है कि विधायक नहीं होते हुए भी सरकारी आवास पर कब्जा जमाए बैठे हैं। वे किस हैसियत से वहां रह रहे हैं। अपनी गलती छिपाने के लिए दूसरों पर आरोप लगाने से कुछ नहीं होगा। उन्होंने कहा कि यदि नाम हैं तो सूची बताएं।

गुर्जर आरक्षण को लेकर बनाई गई मंत्रिमंडलीय कमेटी पर पटेल ने कहा कि सभी विभागों से तथ्यात्मक रिपोर्ट मंगवा ली है। अब समाज के वरिष्ठ लोगों से बात करेंगे, आंदोलन में शामिल लोगों से मिलेंगे। उनकी सुनवाई कर उनका पक्ष जानेंगे। उनको जो न्यायोचित हक मिलना चाहिए, वह दिलाने का प्रयास करेंगे। इससे नाराजगी दूर होगी।

मुख्यमंत्री व केन्द्रीय खान मंत्री ने 7 व 5 स्टार माइन्स को सम्मानित किया

भारतीय खान ब्यूरो खनन गतिविधियों के साथ पर्यावरण संरक्षण व सामाजिक उत्तर दायित्व के आधार पर खदानों की रेटिंग करता है

- **मुख्यमंत्री भजनलाल ने कहा कि राज्य सरकार के प्रयास से 2024-25 में राजस्थान की रॉयल्टी में गत वर्ष के मुकाबले 24 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।**
- **बैठक में मुख्यमंत्री व केन्द्रीय खान मंत्री ने मुख्यमंत्री आवास पर खान विभाग की संयुक्त समीक्षा बैठक की।**

जयपुर, 7 जुलाई। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राजस्थान खनन क्षेत्र के विकास के लिए पारदर्शी प्रक्रियाओं, ईज ऑफ डूइंग बिजनेस तथा आधारभूत संरचना के विस्तार के साथ तेजी से आगे बढ़ रहा है। हमारा लक्ष्य है कि राजस्थान खनन में अग्रणी बने। उन्होंने उद्यिमयों का आ ान करते हुए कहा कि राजस्थान में लोहे से लेकर सोने तक खनिज प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। वे प्रदेश में निवेश करें, राज्य सरकार उन्हें हर संभव सहयोग देने के लिए कटिबद्ध है।

शर्मा एवं केन्द्रीय कोयला एवं खान मंत्री जी. किशन रेड्डी सोमवार को राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर में भारतीय खान ब्यूरो द्वारा आयोजित 7 एवं 5 स्टार रेटिंग वाली खदानों के सम्मान समारोह में शिरकत कर रहे थे।

समारोह में मुख्यमंत्री ने कहा कि स्टार रेटिंग प्रणाली खनन गतिविधियों की मूल्यांकन प्रक्रिया के साथ पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक उत्तरदायित्व को बढ़ावा देती है। उन्होंने भारतीय खान ब्यूरो द्वारा पुरस्कृत खदानों के प्रतिनिधियों को बधाई देते हुए कहा कि राजस्थान में भी खदानों का इस तरह से मूल्यांकन कर रेटिंग देने का नवाचार किया जाएगा।

शर्मा ने कहा कि प्रदेश में पूर्ववर्ती सरकार के समय वर्ष 2023-24 में माइनिंग रॉयल्टी के रूप में राजस्व, 3 प्रतिशत बढ़ोतरी के साथ, महज 7 हजार 460 करोड़ रुपये रहा। जबकि हमारे प्रयासों से 2024-25 में रॉयल्टी राजस्व 9 हजार 228 करोड़ रहा, जो गत वर्ष से 24 प्रतिशत अधिक था। यह रॉयल्टी राजस्व एक रिकॉर्ड है।

समारोह में मुख्यमंत्री शर्मा और केन्द्रीय कोयला एवं खान मंत्री जी. किशन रेड्डी ने 7 एवं 5 स्टार रेटिंग वाली खदानों के प्रतिनिधियों को सम्मानित किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार प्रदेश में खनन से राजस्व अर्जन के साथ, खनन और पर्यावरण के मध्य संतुलन पर भी विशेष जोर दे रही है। मुख्यमंत्री एवं केन्द्रीय कोयला एवं खान मंत्री जी. किशन रेड्डी सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर खान विभाग की संयुक्त समीक्षा बैठक कर रहे थे। इस दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में असीम खनिज संपदा की संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए, नए खनिज ब्लॉक्स की पहचान की जाए। साथ ही, नीलामी प्रक्रिया में तेजी लायी जाए।

केन्द्रीय कोयला एवं खान मंत्री जी. किशन रेड्डी ने कहा कि राजस्थान खनिज संपदा की दृष्टि से समृद्ध राज्य है। यहां बहुमूल्य एवं दुर्लभ खनिजों की व्यापक संभावनाएं हैं।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी देश में ग्रीन एनर्जी सेक्टर को बढ़ावा देने के लिए दुर्लभ खनिजों के सुनियोजित एवं तीव्र खनन पर विशेष बल दे रहे हैं।

इस दिशा में राजस्थान की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।

मेवाड़ की ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

देखना उनकी ज़िम्मेदारी नहीं है कि ऐसी रैलियों और मीटिंगों से पार्टी को फायदा हो? या फिर उनका काम सिर्फ गहलोत और उनके करीबी लोगों को खुश करना ही है?

मेवाड़ की 28 सीटों में से कांग्रेस सिर्फ 6 सीटें जीत पाई थी, जबकि सी. पी. जोशी खुद को इस इलाके का नेता मानते हैं।

सूत्रों के अनुसार, इस रैली का मकसद आदिवासियों को पार्टी से जोड़ना नहीं था, बल्कि दिल्ली की राजनीति में पैर जमाने तथा वहाँ कोई पद पाने की कोशिश थी। जोशी दिल्ली आकर के. सी. वेणुगोपाल, माणिकम टैगोर और राहुल गांधी के करीबी माने जाने वाले अन्य लोगों से मिले, ताकि दिल्ली में कोई पद मिल सके। शायद इसी वजह से पवन खेड़ा को बुलाया गया, जबकि वे आदिवासी नहीं हैं।

अपना पद बचाने के लिए, रंधावा अब वेणुगोपाल के करीबी हो गए हैं, लेकिन राजस्थान में कांग्रेस की राजनीति को लेकर उनकी भूमिका और ज्यादा विवाद पैदा कर रही है।

सैनेटरी पैड वाले राहुल के वीडियो पर दिल्ली में भी एफआईआर

- **बिहार में सैनेटरी पैड पर राहुल गांधी का फोटो लगाने सम्बंधी फेक वीडियो पर अब तक तीन शिकायतें दर्ज हो चुकी हैं।**

नयी दिल्ली, 07 जुलाई। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष तथा लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के सैनेटरी पैड वीडियो से जुड़े विवाद को लेकर यहां एक शिकायत दर्ज की गई है, जिसे मिलाकर, देशभर में इस मुद्दे में अब तक तीन शिकायतें दर्ज हो चुकी हैं।

युवा कांग्रेस के अनुसार, यह शिकायत संगठन के अध्यक्ष उदय भानु चिब, बिहार कांग्रेस के प्रभारी कृष्ण अल्लावरु, लीगल सेल के चेयरमैन रूपेश सिंह भदौरिया के नेतृत्व में यहां मंदिर मार्ग पुलिस थाने में दर्ज कराई गई है। युवा कांग्रेस लीगल सेल दिल्ली के अध्यक्ष विवेक पुनिया द्वारा राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल के माध्यम से एक समानांतर शिकायत भी प्रस्तुत की गई है। इससे पहले रविवार को तेलंगाना तथा कर्नाटक में इस मामले में प्राथमिकी दर्ज कराई गई है। एक एफआईआर तेलंगाना राज्य लीगल सेल अध्यक्ष अधिवक्ता जे. शिवा चरण रेड्डी और समन्वयक अधिवक्ता गुडूर निखिल रेड्डी के नेतृत्व में अपराधियों के खिलाफ दर्ज की गई है। कर्नाटक में, बेंगलुरु के हाई ग्राउंड्स पुलिस थाने में भारतीय न्याय संहिता 2023 की विभिन्न धाराओं के तहत प्राथमिकी दर्ज की गई है।

थप्पड़ कांड...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

याचिका में अधिवक्ता रजनीश गुप्ता ने अदालत को बताया कि प्रकरण साधारण मारपीट का है, जबकि उसे हत्या का प्रयास का बताकर रिपोर्ट दर्ज की गई। बूथ पर निर्वाचन आयोग की ओर से लगाए गए सीसीटीवी और मौके पर मौजूद तहसीलदार के मोबाइल से की गई रिकॉर्डिंग में एसडीएम का गला घोंटने जैसा कुछ रिकॉर्ड नहीं हुआ है। इसके अलावा एसडीएम की मेडिकल रिपोर्ट में भी न तो गले पर और ना ही शरीर के किसी अन्य हिस्से पर ऐसी कोई प्राणघातक चोट मिली है। मामले में पुलिस ने न सिर्फ बीएनएस की धारा 109 (1) के तहत हत्या का प्रयास का मामला दर्ज किया। वहीं इसी धारा में आरोप पत्र भी पेश कर दिया। दूसरी ओर अदालत ने भी इसी धारा में याचिकाकर्ता पर चार्ज फ्रेम कर दिए। जबकि प्रकरण ज्यादा से ज्यादा साधारण मारपीट का ही बनता है। इसलिए उसके खिलाफ किए गए चार्ज फ्रेम आदेश को रद्द किया जाए। जिस पर सुनवाई करते हुए एकलपीठ ने निचली अदालत की कार्रवाई पर रोक लगाते हुए राज्य सरकार से जवाब तलब किया है।

जज के पद पर नियुक्ति...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

न्यायाधीश के रूप में नियुक्ति 2021 से लंबित है, के प्रकरण ने न्यायिक स्वतंत्रता पर कार्यपालिका की लंबी छाया को उजागर किया है। किरपाल का आरोप है कि उनकी नियुक्ति उनकी यौन सम्बंधी प्राथमिकताओं और उनके साथी की राष्ट्रीयता पर उठाई जा रही आपत्तियों के कारण रुकी हुई है।

किरपाल ने कहा है कि इस देरी के बावजूद, वे अपनी सहमति वापस नहीं लेंगे: "मैं अपनी अंतरात्मा के अनुसार कार्य करुँगा। जब नियुक्तियों की बात होती है, तो यह सिर्फ दो पक्षों, कोलीजियम और सरकार की बात नहीं होती, बल्कि न्यायालयों की भी बात होती है। और अगर न्यायालय कुछ नहीं कर रहे, तो कोई और क्या कर सकता है?"

दातार और मजूमदार वकीलों की उस निरंतर बढ़ती सूची में शामिल हो गए हैं, जिन्होंने व्यर्थ इंतजार किया। इनमें से एक वकील रामास्वामी नीलकंदन का नाम चार अन्य वकीलों के साथ जनवरी 2023 में अनुशंसित किया गया था। उन चार वकीलों को फरवरी में नियुक्त कर दिया गया, लेकिन नीलकंदन, जो ओबीसी वकील हैं, अभी भी इंतज़ार कर रहे हैं।

इसी तरह से, सुभाष उपाध्याय, जिनका नाम अप्रैल 2023 में उत्तराखंड उच्च न्यायालय के लिए अनुशंसित किया गया था, और अरुण कुमार, जिनका नाम मई 2023 में इलाहाबाद उच्च न्यायालय के लिए अनुशंसित किया गया था, दोनों अभी भी इंतज़ार कर रहे हैं।

वकील अमित सेठ का नाम अक्टूबर 2023 में सरकार को भेजा गया था, उनका प्रकरण मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय के लिए पांच सदस्यीय सूची में से एकमात्र लंबित प्रकरण है।

अब भी 27 वकील अपनी नियुक्ति का इंतज़ार कर रहे हैं, जिनमें से चार महिलाएं हैं - शमीमा जहां (गुवाहाटी हाईकोर्ट, जनवरी 2024), श्रीजा विजयलक्ष्मी (अप्रैल 2024), ताजल वाशी (गुजरात हाईकोर्ट, अक्टूबर 2024), और शीतल मिर्धा (राजस्थान हाईकोर्ट, मार्च 2025)।

'3 से 5 करोड़ ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

की रिश्वत निजी संस्थानों से ली गई थी, ताकि एनएमसी की मान्यता मिल सके, चाहे मेडिकल बुनियादी ढांचा कैसा भी हो।

डॉ. मेहरोत्रा ने कहा, "यह कहानी स्वयं स्वास्थ्य मंत्रालय के अंदर शुरू हुई, जहाँ अधिकारी मेडिकल कॉलेजों की मंजूरी से संबंधित संवेदनशील फ़ाइलों को एक्सेस और साझा करते हैं।" ये दस्तावेज, जिसमें आंतरिक नोटिंग, निरीक्षण कार्यक्रम और पहचान की जानकारी होती है, उन्हें गुपचुप तरीके से मोबाइल के माध्यम से निजी एजेंटों को भेजा जाता है, जो देशभर के मेडिकल कॉलेजों के लिए काम करते हैं, और यह सब नकदी के बदले किया जाता है।

उन्होंने कहा, इस प्रारंभिक जानकारी से कॉलेजों को निरीक्षणों का आयोजन कराने में सहायता मिलती है, जिसमें नकली फैकल्टी, प्रॉक्सी मरीज और जाली बायोमेट्रिक उपस्थिति दिखाई जाती थी, जिससे इन्हें एनएमसी से अनुकूल रिपोर्ट मिलती थी।

डॉ. मेहरोत्रा ने पुष्टि की, निरीक्षण टीमों को नियमित रूप से रिश्वत दी जाती थी, और कुछ मामलों में, अधिकारियों ने कॉलेजों को जाली दस्तावेज व फर्जी योग्यता तय करने में मदद तक दी, ताकि इन अधिकारियों द्वारा नियामक कार्यवाही पूरी की जा सके और इन कॉलेजों को मान्यता मिल सके।

दलाई लामा के जन्म...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आतंकवादियों के खिलाफ किया गया था, के दौरान भारत की सैन्य स्थिति की रियल-टाइम जानकारी मिल रही थी।

भारत और चीन के बीच, दलाई लामा और भारत में उनकी मौजूदगी को लेकर, अकसर कूटनीतिक टकराव होता रहा है। भारत ने हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में तिब्बत की निर्वासित सरकार को शरण दी हुई है।

दलाई लामा 1959 में चीन से भागकर भारत आए थे, जब चीनी सेना ने तिब्बत में घुसकर नियंत्रण ले लिया था। तब से भारत ने उन्हें और उनकी निर्वासित सरकार को शरण दी है, जिससे चीन को हमेशा आपत्ति रही है।

अब, जब दलाई लामा अपने जीवन के नौवें दशक में प्रवेश कर चुके हैं, तो उनके उत्तराधिकारी को लेकर बड़ा सवाल उठ खड़ा हुआ है। दलाई लामा ने हमेशा कहा है कि उनके आध्यात्मिक उत्तराधिकारी का पुनर्जन्म तय करने का अधिकार केवल उनके ट्रस्ट को है, जबकि चीन का कहना है कि अगला दलाई लामा बीजिंग की कम्युनिस्ट पार्टी सरकार द्वारा निर्धारित प्रक्रिया से ही चुना जाएगा।

कभी-कभी दलाई लामा ने यह भी संकेत दिया कि यह परंपरा खत्म की जा सकती है और आगे कोई दलाई लामा नहीं होगा। लेकिन उसके बाद उन्होंने अपनी राय बदली और अब यह माना जा रहा है कि दलाई लामा की संस्था उनकी मृत्यु के बाद भी जारी रहेगी।

बौद्ध धर्म की मान्यता के अनुसार, दलाई लामा का पुनर्जन्म होता है और नए दलाई लामा की पहचान एक पारंपरिक और रहस्यमयी प्रक्रिया के तहत की जाती है, जिसे सदियों से अपनाया जा रहा है। लेकिन चीन की सरकार का कहना है कि उच्चतम लामाओं का चयन उसकी कम्युनिस्ट सरकार द्वारा मंजूर की गई एक सरकारी प्रक्रिया से ही होगा।

इसमें सामान्य प्रक्रिया अपनाई जाती है, जैसे कि लॉटरी पद्धित। भावी लामाओं के नाम गोल्डन अर्न (सोने के घड़े) में रखे जाते हैं, जो कि कम्युनिस्ट सरकार द्वारा दिया गया होता है। इस प्रक्रिया ने तिब्बती बौद्धों के बीच भारी नाराज़गी और नफ़रत पैदा की है।

भविष्य के दलाई लामा की पहचान पूर्व में पुराने पारंपरिक तरीकों से अनुयायियों के बीच से की जाती थी। तथापि, जैसे ही एक लड़के को दलाई लामा घोषित किया गया, उसे बीजिंग की सरकार ने अगवा कर लिया और तब से उसके बारे में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है।

शताब्दी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

के संगठन के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर ने सोमवार को यहां केशव कुंज में एक संवाददाता सम्मेलन में यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि संघ की स्थापना के शताब्दी वर्ष में हिंदू समाज में धर्म जागरण और बुराइयों को दूर करने को लेकर देशभर में मंडल और गांव स्तर पर एक लाख से अधिक जगहों पर हिंदू सम्मेलन आयोजित किए जाएंगे। इसी तरह खंड और नगर में 11,360 स्थानों पर सामाजिक सद्भाव बैठकें और 924 जिलों में प्रमुख नागरिक गोष्ठियां भी आयोजित की जाएंगी।

उन्होंने कहा कि ये कार्यक्रम आगामी दो अक्टूबर, विजयदशमी से शुरू होंगे और एक साल तक चलेंगे। मुख्य कार्यक्रम नागपुर में आयोजित किया जाएगा।

बिहार मतदाता सूची पर चुनाव आयोग के खिलाफ सुनवाई 10 जुलाई को

सुप्रीम कोर्ट की डबल बैंच ने वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल का शीघ्र सुनवाई का अनुरोध स्वीकार किया

- **बिहार में विधानसभा से पहले मतदाता सूचि के विशेष गहन पुनरीक्षण के फैसले का राजनीतिक दलों के अलावा कई स्वयंसेवी संस्थाएं भी विरोध कर रही हैं।**

नयी दिल्ली, 07 जुलाई। उच्चतम न्यायालय ने सोमवार को कहा कि बिहार की मतदाता सूची विशेष गहन पुनरीक्षण करने के चुनाव आयोग के फैसले की वैधता को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर 10 जुलाई को विचार होगा।

न्यायमूर्ति सुधांशु धूलिया और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की अंशकालीन कार्य दिवस पीठ ने याचिकाकर्ताओं की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल के इस मामले में शीघ्र सुनवाई करने का अनुरोध स्वीकार करते हुए कहा कि अदालत गुरुवार को इस मामले में विचार करेगी।

बिहार में नवंबर में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। उससे पहले मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण करने के चुनाव आयोग के इस फैसले पर सवाल उठाये जा रहे हैं। विभिन्न राजनीतिक दलों के अलावा, कई स्वयंसेवी संस्थाएं पुनरीक्षण के लिए निर्धारित समय समेत, अन्य व्यावहारिक दिक्कतों का हवाला देते हुए आयोग के इस फैसले का खुलकर विरोध कर रही हैं। उनका कहना है कि इससे बड़ी संख्या में मतदाता अपने मताधिकार से वंचित हो सकते हैं। इसलिए याचिकाकर्ताओं ने अदालत से गुहार लगाते हुए कहा है कि चुनाव आयोग के गत 24 जून को जारी उक्त आदेश को रद्द कर दिया जाए।

याचिकाकर्ताओं में कांग्रेस महासचिव के सी वेणुगोपाल, तृणमूल कांग्रेस सांसद महुआ मोइत्रा, राष्ट्रीय जनता दल सांसद मनोज कुमार झा, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी सांसद सुप्रिया सुले, सीपीआई के महासचिव डी राजा, शिवसेना (यूबीटी) के अरविंद सावंत, झारखंड मुक्ति मोर्चा सांसद सरफराज अहमद और भाकपा (एमएल) के दीपांकर भट्टाचार्य शामिल हैं। इसी प्रकार, गैर सरकारी संगठनों - एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स, पीयूसीएल और सामाजिक कार्यकर्ता योगेंद्र यादव समेत अन्य ने इस संबंध में चुनाव आयोग के 24 जून, 2025 के फैसले की वैधता को शीर्ष अदालत में चुनौती देते हुए अलग-अलग याचिकाएं दायर की हैं।

याचिकाकर्ताओं ने दावा किया कि यह कदम संविधान के अनुच्छेद 14, 19, 21, 325 और 326 के साथ-साथ, जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 और मतदाता पंजीकरण नियम, 1960 के नियम 21 ए के प्रावधानों का उल्लंघन है। उन्होंने तर्क दिया कि यदि इस आदेश को रद्द नहीं किया गया तो, मनमाने ढ ंग से और उचित प्रक्रिया के बिना, लाखों मतदाताओं को अपने प्रतिनिधियों को चुनने से वंचित किया जा सकता है।

हाईकोर्ट ने...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कि आरोपी बाहुबली और प्रभावशाली है। धौलपुर में केस की सुनवाई होने से याचिकाकर्ता के साथ-साथ गवाहों की जान-माल को भी खतरा है। आरोपी मलिंगा के खिलाफ अन्य आपराधिक प्रकरण भी दर्ज हैं। ऐसे में केस को धौलपुर से बाहर भेजा जाए।

एसआई 2021 ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कैबिनेट सब कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में भर्ती को फिलहाल निरस्त नहीं करने की बात कही है और इसे मुख्यमंत्री स्तर पर भी सहमति दी जा चुकी है। इस याचिका में सब कमेटी के इस आदेश को चुनौती नहीं दी गई है। ऐसे में याचिका को सारहीन मानते हुए खारिज किया जाए। यदि याचिकाकर्ता सब कमेटी के निर्णय को चुनौती देना चाहे तो उसके लिए अलग से याचिका दायर कर सकता है।

इस दौरान अदालत ने कहा कि मुख्यमंत्री स्तर पर मामला इतने दिनों तक लंबित क्यों रहा। इसके साथ ही अदालत में पहले की राय को लेकर सारी नोटशीट पेश क्यों नहीं की गईं। इस पर महाधिवक्ता ने कहा कि मुख्यमंत्री कार्यालय में पत्रावली का परीक्षण चल रहा था और मामले में पूरी पारदर्शिता से निर्णय लिया गया है। दूसरी ओर, राज्य सरकार के प्रार्थना पत्र का जवाब देते हुए याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता हरेन्द्र नील ने कहा कि भर्ती रद्द करने की मांग आज भी जीवित है। कोर्ट की ओर से बार-बार कहने के बाद ही भर्ती निरस्त नहीं करने का निर्णय पेश किया गया है। ऐसे में याचिका को सारहीन नहीं कहा जा सकता।

तहव्वुर राणा ने माना कि वह पाक सेना के बेहद करीब है

एनआईए की पूछताछ में राणा एक एक करके कई राज उगल रहा है

- **राणा ने बताया कि रावल पिंडी के आर्मी मैडिकल कॉलेज से एमबीबीएस करने के बाद उसे पाकिस्तान की सेना ने कई महत्वपूर्ण मिशनों पर अलग-अलग देशों में भेजा था।**

नई दिल्ली, 07 जुलाई। 26/11 मुंबई आतंकवादी हमलों से जुड़े एक अहम घटनाक्रम में मुंबई क्राइम ब्रांच ने इसी साल अप्रैल में राष्ट्रीय जांच एजेंसी की कस्टडी में बंद मुख्य आरोपी तहव्वुर राणा से गहन पूछताछ की थी। पुलिस सूत्रों के अनुसार, इस मामले में जांच के दौरान कई जानकारियां पहले से ही रिकॉर्ड में थीं। पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि राणा अभी भी मानसिक रूप से अपने दिए हुए पुराने जवाबों पर टिका हुआ है। पुलिस को वह जानकारियां तो दे रहा है, लेकिन उसके बातचीत के तरीके से उसकी कट्टरपंथी विचारधारा भी झलकती है।

अपने बयान में राणा ने दावा किया कि वह पाकिस्तानी सेना का एक भरोसेमंद व्यक्ति था। उसने बताया कि इराक द्वारा कुवैत पर आक्रमण के दौरान उसे सऊदी अरब में एक गुप्त मिशन पर भी भेजा गया था, जिससे पाकिस्तानी सैन्य प्रतिष्ठान के लिए उसके रणनीतिक महत्व का पता चलता है।

राणा ने बताया कि उसने 1986 में रावलपिंडी के आर्मी मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस की पढ़ ाई पूरी की थी, जिसके बाद उसे क्वेटा में कैप्टन (डॉक्टर) के पद पर नियुक्त किया गया। उसने सिंध, बलूचिस्तान, बहावलपुर और सियाचिन-बालोतरा सेक्टर सहित, पाकिस्तान के कई संवेदनशील सैन्य क्षेत्रों में भी काम किया।

पूछताछ के दौरान, राणा ने अब्दुल रहमान पाशा, साजिद मीर और मेजर इकबाल को जानने की बात भी स्वीकार की। ये तीनों पाकिस्तानी नागरिक हैं और माना जाता है कि 26/11 मुंबई हमलों में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। राणा कई भाषाओं जैसे- हिंदी, अंग्रेजी, अरबी और पश्तो का जानकार है।

वहीं, क्राइम ब्रांच को दिए अपने बयान में राणा ने डेविड हेडली के बारे में भी कई खुलासे किए। उसने बताया कि 2003 और 2004 के बीच हेडली ने लश्कर-ए-तैयबा के साथ तीन ट्रेनिंग कोर्स में हिस्सा लिया था, हालांकि उसे सभी कोर्स के नाम याद नहीं हैं।

जब उससे पूछा गया कि मुंबई में पहला इमिग्रेशन सेंटर खोलने का विचार किसका था, तो राणा ने दावा किया कि यह पूरी तरह से उसका अपना विचार था, हेडली का नहीं। हेडली को भेजे गए पैसों के बारे में राणा ने कहा कि यह रकम कारोबारी खर्च के तौर पर भेजी गई थी। राणा ने यह भी स्वीकार किया कि मुंबई में ऑफिस होने के बावजूद क्लाइंट हासिल करने में चुनौतियां आईं।

अपने पिछले सैन्य करियर के बारे में बताते हुए राणा ने बताया कि सियाचिन में एक असाइनमेंट के दौरान, उसे पल्मोनरी एडिमा हो गया था, जिसकी वजह से उसे लंबे समय तक ड्यूटी से अनुपस्थित रहना पड़ा। इस लंबी अनुपस्थिति के कारण उसे भगोड़ा घोषित कर बर्खास्त कर दिया गया।

पुलिस ने यह भी बताया कि डेविड हेडली के कोर्ट में दिए हुए बयान के बारे में भी राणा की स्टडी अच्छी है।

'जेन स्ट्रीट की...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

रूप में काम करती हैं। सेबी ने कहा है कि जेन स्ट्रीट की बड़े पैमाने पर खरीदारी ने खुदरा निवेशकों को निवेश करने के लिए प्रभावित किया, जिससे बाजार में हेरफेर हुआ।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा मैसर्स अरावली प्रिन्टर्स, राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर (राजस्थान) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 65015/96, जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34 फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908